वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1997-98

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

NEW DELHI

विषय-सूची

संकल्पना 5

न्यास का निर्माण 6

संगठन 6

संक्षिप्त विवरण तथा झलकियां 8

कलानिधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय 16

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक 24

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार 24

कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन 27

कलाकोश

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश 31

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र 32

कार्यक्रम ग : कलासमालोचन 33

कार्यक्रम घ : कलाओं का विश्वकोष एवं इतिहास 33

जनपद-सम्पदा

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह 36

कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां 36

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन 37

कार्यक्रम घ : बाल जगत 41

कलादर्शन

कार्यक्रम क : संग्रह 42

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां 42

कार्यक्रम ग : स्मारकीय व्याख्यान 49

कार्यक्रम घ : अन्य कार्यक्रम 49

सूत्रधार

क	:	कार्मिक	59
ख	:	आपूर्ति एवं सेवाएं	59
ग	:	शाखा कार्यालय	59
घ	:	वित्त एवं लेखे	59
ङ	:	आवास	60
च	:	शोधवृत्ति योजनाएं	61
छ	:	राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन	61

भवन परियोजना

अनुबन्ध

1.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य	67
2.	:	कार्यकारिणी समिति के सदस्य	69
3.	:	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची	70
4.	:	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची	72
5.	:	वर्ष 1997-98 के दौरान हुई प्रदर्शनियां	73
6.	:	वर्ष 1997-98 के दौरान हुई संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएं	73
7.	:	फिल्म/वीडियो प्रलेखनों की सूची अप्रैल, 1997 से मार्च, 1998 तक	75
8.	:	अप्रैल 1996 से 31 मार्च, 1997 तक हुई घटनाओं की तालिका	77
9.	:	31 मार्च, 1998 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशन	80

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट - 1997-98

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे स्वायत्त संस्थान के रूप में की गई है जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्मांड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से सम्बद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड रूप से जुड़ा है, और उसके लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्वबन्धुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल है : लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्रकला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारंभ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अन्तर्विषयक दोनों प्रकार का होगा।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

2. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना।

3. सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परम्परागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद, विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अंतर को दूर किया जा सके जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल हैं, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए मॉडल तैयार करना।

7. विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रें के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्त्वों को स्पष्ट करना।

8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना।

9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार साधनों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उनको मान्यता प्रदान कराने के लिए भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा लिखित एवं मौखिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, कला विभाग के संकल्प संख्या एफ. 16-7/86- कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को नई दिल्ली में दिनांक 24 मार्च, 1987 को विधिवत् गठित एवं पंजीकृत किया गया था।

प्रारंभ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जो कालान्तर में पुनर्गठित हुआ। वर्ष 1997-1998 के दौरान इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यासियों की सूची अनुबन्ध पर दी गई है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की जो कार्यकारिणी समिति भारत सरकार द्वारा गठित की गई थी उसके सदस्यों की सूची अनुबंध-2 पर दी गई है।

संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और अपने प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र अपने पाँच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है, जो संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त होते हुए भी कार्यक्रमों के आयोजनों के मामले में परस्पर जुड़े हुए हैं।

इन्दिरा गांधी कलानिधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के

रूप में कार्य करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक और (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह और (घ) क्षेत्र अध्ययन की व्यवस्था है।

इन्दिरा गांधी कलाकोश : यह प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह ऐसे दीर्घकालिक कार्यक्रम आरंभ करता है, जिनमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा बुनियादी तकनीकी शब्दों का संग्रह और अंतर्विषयक शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला (कलामूलशास्त्र), (ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला (कलासमालोचना) और (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश सम्मिलित है।

इन्दिरा गांधी जनपद-सम्पदा : यह प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिए प्रस्तुतियां करता है, (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए व्यवस्था करता है जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषिविषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार किए जा सकें। इनके अलावा, (घ) उसने एक बाल रंगशाला स्थापित की है और (ङ) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करेगा।

इन्दिरा गांधी कलादर्शन : यह प्रभाग कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विषयात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करता है। इसके भवनों में तीन रंगशालाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी।

इन्दिरा गांधी सूत्रधार : यह अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करता है।

संस्था के शैक्षणिक प्रभाग अर्थात् कलानिधि तथा कलाकोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाते हैं, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, रूप से सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करते हैं। वे यह कार्य सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन (मार्ग) के स्तर पर करते हैं। जनपद-सम्पदा और कलादर्शन प्रभाग लोक, देश तथा जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन-कार्य तथा जीवन-शैली और मौखिक परम्पराओं पर ध्यान देते हैं। चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय-संबंधी मूल संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अंतिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक-जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होता है।

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल, 1997 से 31 मार्च, 1998 तक

संक्षिप्त विवरण तथा झलकियां

प्रस्तावना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपनी स्थापना के ग्यारहवें वर्ष 1997-98 में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सशक्त रूप से प्रयत्नशील रहा। अपने इस कार्य में उसे इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के न्यासियों, विशेष रूप से उसकी अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी और कार्य कारिणी समिति (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मजदूर कला केन्द्र) के प्रधान श्री पी.वी. नरसिम्हाराव से प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन बराबर मिलता रहा। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शैक्षणिक निदेशक डा. कपिला वात्स्यायन अपना गतिशील नेतृत्व और सक्रिय पर्यवेक्षण केन्द्र के सभी शोध प्रकल्पों तथा सांस्कृतिक कार्यों को सम्यक् रूप से प्रदान करती रही।

वर्ष 1997-98 के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने संदर्भ तथा स्रोत सामग्रियों के संग्रह, विभिन्न क्षेत्रों में समग्रदृष्टिकोण के साथ अनुसंधान आदि से संबंधित अनेक कार्यक्रम हाथ में लिए। केन्द्र ने तीन बड़े अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, चार प्रदर्शनियां और बहुत बड़ी संख्या में व्याख्यान आयोजित किए। इस अवधि में केन्द्र के उल्लेखनीय कार्यकलापों में शामिल थे : मूलभूत विज्ञानों, मीमांसात्मक विचारों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं से संबंधित बीजभूत संकल्पनाओं से लेकर पुरातत्त्व, मानवविज्ञान, कला-इतिहास और ग्रंथीय परम्पराओं तक के विभिन्न विषयों पर अनुसंधान, अंतरविषयक पारिभाषिक शब्दावली का संकलन : कला तथा संस्कृति विषयक प्राचीन तथा मध्यकालीन कृतियों तथा अन्य प्रबन्ध ग्रंथों के समालोचनात्मक संस्करणों का प्रकाशन : संगोष्ठियों, पुत्तलिका तथा फिल्म प्रदर्शनों का आयोजन, जिससे विद्वान वर्ग तथा जनसाधारण के बीच सर्जनात्मक संवाद की व्यवस्था हो ताकि विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक स्तरों पर ज्ञान के प्रसार को योगदान मिल सके। अप्रैल, 1997 से 31 मार्च, 1998 तक की अवधि में केन्द्र द्वारा कार्यान्वित किए गए प्रमुख कार्यक्रमों की झलकियां नीचे दी जा रही है।

संग्रह

वर्ष के दौरान मुद्रित पुस्तकों, माईक्रोफिल्मांकन पाण्डुलिपियों, स्लाइडों, फोटोग्राफी, दृश्य सामग्रियों तथा मानवजाति वर्णनात्मक संग्रहों के रूप में अनेक उल्लेखनीय प्राप्तियों से केन्द्र के भंडार भरते रहे। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अन्तर्गत भी भिन्न-भिन्न देशों से कुछ रोचक वस्तुएं तथा पुस्तकें प्राप्त हुई।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय ने खरीद, उपहार तथा आदान-प्रदान के माध्यम से कुल मिलाकर 4,310 मुद्रित पुस्तकें, प्रबन्ध ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाएं, कैटलॉग आदि प्राप्त किए जिनमें अप्राप्य प्रकाशन में शामिल थे। इनमें से 567 पुस्तकें भिन्न-भिन्न संस्थाओं तथा विद्वानों से उपहार-स्वरूप प्राप्त हुई। पुस्तकालय के भंडार में एक उल्लेखनीय वृद्धि थी - हरिकथा संग्रह के 202 खंड। अन्य महत्वपूर्ण प्राप्तियों में शामिल थे : (1) कला शब्दकोश के चौबीस खंड: यह शब्दकोश लंदन की मैकमिलन कंपनी का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाशन है: (2) चीन की सुप्रसिद्ध प्राचीन चित्रकारियों का एलबम: (3) चीन की लोक चित्रकारियों का संग्रह (पेइचिंग) के राजमहल संग्रहालय में सुरक्षित ऐतिहासिक कलाकृतियों, का संग्रह (5) हूनान प्रान्त की लोक चित्रकला के संग्रह तथा लोकचित्र कला डिजाईन संग्रह : लोक मृत्तिका-शिल्प। उपर्युक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त, कला, पुरातत्व, मानवविज्ञान, संगीत आदि विभिन्न विषयों की 400 पत्रिकाएं और "अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशोलॉजी," "ब्रिटिश जर्नल ऑफ ऐस्थेटिक्स," "कॉम्पैरिटिव स्टडीज इन सोसाईटी

एंड हिट हिस्ट्री'' और ''वेस्टर्न फॉकलोर'' जैसी महत्वपूर्ण शोध पत्रिकाओं की पुरानी फाईलें पुस्तकालय में प्राप्त हुई हैं।

कुल मिलाकर 5,376 पुस्तकों को वर्गीकृत करके अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाया गया और 7,500 प्रकाशनों की जिल्दबंदी करवाई गई।

संस्कृत, फारसी, अरबी तथा अन्य भाषाओं की अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने के केन्द्र के कार्यक्रमों के अन्तर्गत, देश-विदेश में संगृहित विभिन्न पाण्डुलिपियों की 1,388 कुंडलियां (रॉल) संदर्भ पुस्तकालय के स्टाक में जोड़े गए। इसके अलावा, 5,839 माइक्रोफिशें भी प्राप्त हुई ; इनमें से यात्रा-विवरण तथा रूसी इतिहास की 1,132 माइक्रोफिशें रूसी विज्ञान अकादमी के सामाजिक विज्ञानों के वैज्ञानिक सूचना संस्थान (इनियन), मास्को से और 4,707 माइक्रोफिशें इंटर-डॉक्यूमेंटेशन कंपनी (आई.डी. सी), लीडन (नीदरलैंड) से प्राप्त हुई थीं।

नई प्राप्तियों के फलस्वरूप स्लाइडों के संग्रह में वृद्धि होती गई। इस वर्ष कुल मिलाकर 461 स्लाइडें जोड़ी गई जिनमें हिमालय के भूदृश्यों की 107 स्लाइडें, राष्ट्रीय संग्रहालय में संगृहीत मूर्तियों की 58 स्लाइडें, भारत के प्राचीन स्मारकों की 36 स्लाइडें, ''गीतगोविन्द'' की अलवर पाण्डुलिपि से 62 स्लाइडें और पुणे स्थित भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान में उपलबध कुछ सचित्र पाण्डुलिपियों से ली गई 198 स्लाइडें शामिल थी।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार को कर्नाटक तथा हिन्दुस्तानी संगीत के महान प्रतिपादकों के संगीत के 116 ग्रामोफोन के सात ऑडियो कैसेट उपहारस्वरूप प्राप्त हुए। इसके अलावा, राष्ट्रीय निष्पादक कला केन्द्र, मुंबई से 'पूर्व-उत्तर : फास्ट फॉरवर्ड'' शीर्षक वाली आठ फिल्मों की श्रृंखला, 'दि बेडिंग ऑफ दि बो'' (डा. हेन. एम. डि ब्रुइन द्वारा), 'दि पिआनो'' (अरूणाभ भट्टाचार्य द्वारा) और 15 रंगीन फोटोग्राफ और 10 श्वेत-श्याम फोटोग्राफ (आश्विन मेहता द्वारा) प्राप्त किए गए और सांस्कृतिक अभिलेखागार के स्टाक में जोड़े गए।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के जनपद-सम्पदा प्रभाग ने केन्द्र की दीर्घा में प्रदर्शन के लिए भारत के विभिन्न भागों से और दक्षिण एशिया, अफ्रिका, मध्य-एशिया, पूर्व एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण अफ्रीका, ओशनिया और मेसो-अमेरीका, कैरीबियन, दक्षिण तथा उत्तर अमेरिका, यूरोप के अनेक देशों तथा भूटान से अनेक प्रकार के मुखौटे प्राप्त किए।

गत वर्ष में प्राप्त सामग्री को अवाप्ति रजिस्टर में चढाने, वर्गीकरण करने, कैटलॉग बनाने, प्रलेखन तैयार करने और कम्पयूटर में भरने के प्रयास भी किए गए। वर्ष 1997-1998 के दौरान, 5,376 पुस्तकों को वर्गीकरण करके कैटलॉग में चढ़ाया गया; अध्येताओं तथा शोधकर्ताओं के उपयोग के लिए 2,773 पुस्तक शीर्षकों को कम्पयूटर में भरा गया और संदर्भ पुस्तकालय में उपयोग के लिए 1,375 स्लाइडों की प्रतिलिपियां तैयार की गई। 13,000 स्लाइडों के संग्रह को स्कैनिंग/डिजिटीकरण के लिए यू.एन.डी.पी. लैब में भेजा गया।

प्रलेखन

''भारत के महान गुरुजन'' श्रृंखला के अन्तर्गत, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने महान उपन्यासकार और रंगशाला विशेषज्ञ (स्वर्गीय) डा. के. शिवराम कारन्त और देश में नृत्य की कत्थक शैली की विख्यात प्रतिपादक सुश्री दमयंती जोशी और सितारा देवी के साथ विस्तृत भेंट वार्ताएं रिकार्ड की। केन्द्र ने कुछ अलग-थलग कला समुदायों जैसे ''वाराणसी का हस्तशिल्प'' और उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर तथा सोनभद्र जिलों में ''शैल कला'', राजस्थान की चित्रकला की शैली और हिमाचल प्रदेश के गद्दी लोगों की जीवन शैली के प्रलेखन के अलावा कुछ मृतप्राय कला-रूपों और अन्य सांस्कृतिक परम्पराओं तथा अभिव्यक्तियों के प्रलेखन का कार्य भी हाथ में लिया। मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (अजमेर) से जुड़े इस्लामिक लोक संगीत के एक परम्परागत रूप ''करखा'' के आन्तरिक वीडियो प्रलेखन का कार्य भी सम्पन्न किया गया।

कार्यक्रम

दक्षिण-पूर्व एशियाई, अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत, ''ग्लिंप्सेज ऑफ इंडो-इंडोनेशियन कल्चर'' शीर्षक ग्रंथ तैयार किया जा रहा है। इसमें (स्वर्गीय) डा. एच. बी. सरकार द्वारा दक्षिण-पूर्व एशिया की धरोहर पर लिखित कुछ चुने हुए शोधपत्रों को संकलित किया जा रहा है। पूर्व-एशियाई अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत, तीन ग्रन्थों, अर्थात् (1) ''एक्रास दि हिमालयन गैप : एन इंडियन क्वेस्ट फॉर अंडरस्टैंडिंग चाइना'', (2) फोलोइंग-इन दि फूटस्टेप्स ऑफ जुआन जांग : तान युनशान'', और (3) ''ए-क्रोनोलॉजी ऑफ इंडिया-चाइना इंटरफेस'' के संकलन तथा सम्पादन का कार्य प्रगति पर है। स्लाविक तथा मध्य-एशियाई अध्ययन एकक, जो मुख्य रूप से स्लाविक तथा मध्य-एशियाई क्षेत्रों से संबंधित साहित्य से संबंधित शोध सामग्री को जुटाने में प्रयत्नशील है, ने इंटर-डॉक्यूमेंटेशन कंपनी (आई.डी.सी.), लीडन (लीदरलैंड) से माइक्रोफिश पर रूसी तथा जर्मन साहित्य के 40 से अधिक धारावाहिक (सीरियल) मंगवाकर संदर्भ पुस्तकालय को प्रदान किए हैं। चालू वर्ष में प्राप्त 1,135 माइक्रोफिशों को जोड़कर, इनियन से अब तक माइक्रोफिशों की संख्या कुल मिलाकर 11,265 पर पहुंच गई है।

भारतीय संस्कृति की ग्रंथ-परम्पराओं के अवगाहन तथा उनमें छिपे गूढ़ ज्ञान को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कलाकोश प्रभाग ने अनुसंधान, शब्दकोश-निर्माण, कला संस्कृति तथा संबद्ध विषयों के क्षेत्र से संबंधित मूल ग्रंथों के समालोचनात्मक संस्करणों के मुद्रण, शोध कृतियों तथा प्रबंध ग्रंथों के प्रकाशन और विद्वानों की विख्यात समीक्षात्मक रचनाओं के पुनर्मुद्रण के अनेक कार्यक्रम प्रारम्भ किए हैं। आलोच्य अवधि में प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रंथों में शामिल हैं : (1) सी.आर. स्वामिनाथन तथा सुधा गोपालकृष्णन द्वारा सम्पादित तथा अनूदित ''कृष्ण-गीति'', जो केरल की ''कृष्णअट्टम'' नृत्यनाट्य शैली पर सत्रहवीं शताब्दी की गीति-नाट्य संबंधी स्रोत कृति है; (2) प्रो. जी.डी. सॉन्थीमर कृत ''किंग ऑफ हंटर्स, वारियर्स एंड शेपहर्ड्स एसिज ऑन खाण्डोबा'' और (3) ''एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टेंपल आर्किटेक्चर'' खंड-2, भाग-3, जो दक्षिण भारत-ऊपरी द्रविडदेश के विषय में सन 973 से 1326 ईस्वी तक के उसके परवर्ती चरण से संबंधित है। एम.ए. ढाकी द्वारा सम्पादित यह ग्रंथ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा भारतीय अध्ययन के अमरीकी संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित किया गया है।

जनपद-सम्पदा प्रभाग द्वारा प्रकाशित उल्लेखनीय ग्रंथों में शामिल है : ''भक्तिरसामृत सिन्धु'', सम्पादक तथा अनुवादक (हिन्दी में) : प्रेमलता शर्मा; (2) ''कल्चरल डाइमेंशन ऑफ एजुकेशन'', सम्पादक : बी.एन. सरस्वती (1) ''धरती : गांधी बापू के सिद्धान्त - स्वावलम्बन'', (2) ''सोमी : गांधी बापू के सिद्धान्त - नई तालीम'' लेखक : हकूशाह विशेष रूप से बच्चों के लिए निकाले गए।

लोक परम्परा के विभिन्न पक्षों से संबंधित नौ परियोजनाएं, जो अलग-अलग विद्वानों को सौंपी गई थी, सम्पन्न हो चुकी हैं और उनके प्रतिवेदन प्राप्त हो चुकें हैं। अब दूसरी नौ नई परियोजनाएं शोध-कार्य के लिए विभिन्न विद्वानों को सौंपी गई है।

संगोष्ठियां/सम्मेलन/कार्यशालाएं

1. दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने ''लाओस की कला'' विषय पर 12 अगस्त, 1997 को दो सत्रों में एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इसमें लाओस की कला के विभिन्न पदों पर अनेक रोचक शोधपत्र विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत किए गए। विख्यात पुरातत्त्वविद, कला-इतिहासकार और विषय के विशेषज्ञों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

2. स्लाविक तथा मध्य-एशियाई अध्ययन एकक ने भी "मध्य-एशियाई पुरावशेषों का प्रलेखन" नामक अपनी परियोजना के अन्तर्गत नई दिल्ली में 15 से 18 जुलाई, 1997 तक, यूनेस्को तथा समरकन्द स्थित अंतराष्ट्रीय मध्य-एशियाई अध्ययन संस्थान के सहयोग से, एक व्यवहार्यता अध्ययन सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य विश्व के विभिन्न संग्रहों में विद्यमान मध्य-एशियाई पुरावशेषों के प्रलेखन की विधि विकसित करना था। भारत के अलावा अन्य बहुत से देशों के प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन में स्वीकृत प्रारूप-संकल्प अक्टूबर, 1997 में आयोजित यूनेस्को महा सम्मेलन में स्वीकार किए गए।

3. "पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपि शास्त्र" विषय पर चौथी कार्यशाला इन्दिरा गांधी रांष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा कलकत्ता विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहयोग से 27 मार्च से 12 अप्रैल, 1997 तक कलकत्ता में आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्देश्य युवा संस्कृत अध्येताओं को अछूती पांडुलिपियों की सामग्री से समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने और शोध-कार्य करने की विधि का प्रशिक्षण देना था। विभिन्न विश्वविद्यालयों के छब्बीस युवा अध्येताओं ने कार्यशाला में भाग लिया।

4. "संस्कृत में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग/विनियोग" विषय पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा नई दिल्ली में 22 और 23 सितम्बर, 1997 को एक दो-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें देश की विभिन्न संस्थाओं से 30 प्रशिक्षणर्थियों ने भाग लिया। संस्कृत के अध्ययन के कम्प्यूटर के अनुप्रयोग के विषय में चर्चा करने के अलावा कार्यशाला में भारत की पुरातन तथा अप्रचलित लिपियों का ज्ञान भी कराया गया।

5. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा "पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपि शास्त्र और संस्कृत अध्ययन में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग" विषय पर पांचवी कार्यशाला का आयोजन 27 नवम्बर से 17 दिसम्बर, 1997 तक मैसूर में मैसूर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहयोग से किया गया। भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयों के सत्ताईस युवा अध्येताओं ने इसमें भाग लिया।

6. "संथाल विश्व-दृष्टि" विषय पर एक संगोष्ठी 17 से 19 दिसम्बर, 1997 तक आयोजित की गई। देश-विदेश के लगभग इक्कीस विख्यात विद्वानों ने संगोष्ठी में भाग लिया और संथाल समुदाय के जीवन के विभिन्न पक्षों पर विचार-विमर्श किया।

7. "पुरावशेषों और कला वस्तुओं की प्रामाणिकता" विषय पर एक संगोष्ठी संयुक्त रूप से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा 23 नवम्बर, 1997 को आयोजित की गई। देश के अग्रगण्य कला-इतिहासकारों, पुरातत्त्वविदों, मानव विज्ञानियों, वैज्ञानिक विशेषज्ञों ने इसमें हुए विचार विमर्श में भाग लिया।

8. "संकुल सांस्कृतिक संचार" विषय पर नई दिल्ली में 13 दिसम्बर, 1997 को एक संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें कनाडा के मैकगिल विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर चार्ल्स टेलर प्रमुख वक्ता थे। संगोष्ठी में मानव विज्ञानियों, संगीतशास्त्रियों, कला-इतिहासकारों, लोकसाहित्य-मर्मज्ञों, राजनीति-वैज्ञानिकों, इतिहासकारों और अन्य विशेषज्ञों ने भाग लिया।

9. "विकास के कुशल आदर्श/मॉडल" विषय पर एक कार्यशाला कोलम्बो के होटल हॉलीडे-इन में 27 से 29 दिसम्बर, 1997 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा यूनेस्को द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई। भिन्न-भिन्न देशों के इतिहास तथा संस्कृति विषयों के विख्यात विशेषज्ञों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

10. "गांधी और ग्रामोद्योग" विषय पर नई दिल्ली में 19 जनवरी, 1998 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति के सदस्यों सहित लगभग बीस विद्वानों ने भाग लिया। इस अवसर पर गांधी स्मृति तथा दर्शक समिति ने एक पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई।

11. "परम्परा तथा व्यक्ति" विषय पर 21 से 23 जनवरी, 1998 को एक संगोष्ठी आयोजित की गई। देश के विभिन्न भागों से आए मूर्धन्य विद्वानों तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्यों ने भी इसमें भाग लिया और अनेक रोचक शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

12. "रूप-प्रतिरूप : मानव और मुखौटा" विषय पर आयोजित प्रदर्शनी के साथ-साथ 24 से 28 फरवरी, 1998 तक इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा नई दिल्ली में "मन, मानव और मुखौटा" विषय पर एक-एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। देश-विदेश के लगभग चालीस जाने-माने विद्वानों ने इसमें भाग लिया।

मुखौटा अभिनय

इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की "मुखौटा" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय परियोजना को संबल प्रदान करने के उद्देश्य से, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, संगीत नाटक अकादमी और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय जैसी संस्थाएं विश्व के भिन्न-भिन्न प्रदशों के मुखौटा नृत्यों में सहयोग देने के लिए आगे आईं। मुखौटा नृत्य के कार्यक्रमों का उत्सव 12 फरवरी, 1998 से लेकर महीने भर चला। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा प्रायोजित दो बड़े कार्यक्रमों में डा. माईकेल मेश्के द्वारा निर्देशित और स्वीडन के मेरियानेटएटर्न द्वारा 27 फरवरी, 1998 को प्रस्तुत एक "फास्ट" नामक कार्यक्रम और रेवरेंड डोबूम तुलकू के मार्गदर्शन में तिब्बती नृत्य मंडली द्वारा नई दिल्ली में प्रस्तुत एक तिब्बती छम नृत्य शामिल था।

प्रदर्शनियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कला दर्शन प्रभाग ने आलोच्य अवधि में तीन प्रदर्शनियां लगाई, जिनका ब्यौरा नीचे दिया गया है :

1. फोटोग्राफ प्रदर्शनियों की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए, इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने "दीवारें और फर्श : ग्राम भारत की जीवन्त परम्परा" शीर्षक से एक विख्यात फोटोग्राफर ज्योतिभटट् द्वारा खीचें गए कुछ चुनिन्दा फोटोग्राफों की एक प्रदर्शनी मुंबई के राष्ट्रीय निष्पादक कला केन्द्र के सहयोग से नई दिल्ली में लगाई। कला प्रेमियों तथा समालोचकों ने इसको खूब सराहा।

2. एक अन्य प्रदर्शनी "संगकोंग-लॉग ड्रम की पुकार" में 6 से 26 अक्तूबर तक माटीघर में कु. मिलादा गांगुली की कलावस्तुओं तथा फोटोग्राफों को प्रदर्शित किया गया। इस प्रदर्शनी में नागा संस्कृति की झांकी प्रस्तुत की गई थी जो बिंब तथा तादात्म्य के आंतरिक मूल्य पर आधारित है और जिसे शक्ति तथा सामर्थ्य की भौतिक नींव पर विकसित मिथकों तथा दन्तकथाओं से संबल मिला है।

3. संयुक्त राज्य अमेरीका के जीरोक्स पालो आल्टो अनुसंधान केन्द्र के सहयोग से इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा विकसित प्रदर्शनी "गीतगोविन्द - बहुमाध्यमिक अनुभव" का उद्घाटन 10 दिसम्बर, 1997 को किया गया और वह 8 जनवरी, 1998 तक जनता के लिए अवलोकनार्थ खुली रही। देश की जानी-मानी कला-इतिहासकार डा. कपिला वात्स्यायन द्वारा परिकल्पित यह प्रदर्शनी मध्यकालीन संस्कृत कवि जयदेव रचित 'गीतगोविन्द' से

संबंधित कथा-प्रसंगों और अनेक प्रकार की कला अभिव्यक्तियों पर आधारित थी। मल्टीमीडिया विशेषज्ञों, कलाकारों तथा आम जनता में भी इसका भरपूर स्वागत हुआ।

श्री शेषगिरि से लेकर वैज्ञानिक तथा औद्यौगिक अनुसंधान परिषद के महानिदेशक श्री मेहश्लेलकर तक के सभी प्रौद्यौगिकी विदों ने इस प्रदर्शनी को एक विरल उपलब्धि माना। मानविकी विषयों तथा कलाओं के क्षेत्र के विद्वानों तथा कलामर्मज्ञों ने इसे भारत की कलात्मक परम्पराओं की अनेकता में एकता की विलक्षण अभिव्यक्ति माना है।

4. "रूप-प्रतिरूप (मानव और मुखौटा) : प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में 20 फरवरी, 1998 से 12 अप्रैल, 1998 तक लगाई गई। "मानव, मन और मुखौटा" विषय पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी द्वारा इस प्रदर्शनी को पूर्णता प्रदान की गई।

स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 1-2 दिसम्बर, 1997 को नई दिल्ली में प्रोफेसर निर्मल कुमार बोस स्मारकीय व्याख्यान का आयोजन किया। यह व्याख्यान वाराणसी स्थित भारतीय अध्ययन के अमरीकी संस्थान के निदेशक (अनुसंधान) प्रो. एम.ए. ढाकी द्वारा दो भागों में दिया गया। व्याख्यान का पहला भाग था : "उड़ीसा की वास्तुकला के अध्ययन में एन. के. बोस का योगदान" और दूसरे भाग का विषय था : "वैरोचनी का लक्षणसमुच्चय और कलिंग की मध्यकालीन वास्तुकला"। बड़ी संख्या में पुरातत्वविद, मानव और विज्ञानी, अन्य विद्वान और मनीषी इस आयोजन में उपस्थित हुए।

वार्ताएँ

आलोच्य वर्ष में सार्वजनिक व्याख्यानों की श्रृंखला में कला, वास्तुकला, पुरातत्व, कला-इतिहास, सौंदर्यशास्त्र, संगीत, दर्शन और विज्ञान के नानाविध पक्षों पर लगभग पैंतीस वार्ताएं हुई।

फिल्म प्रदर्शन/नाटक

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार में संगृहीत अनेक फिल्में छात्रों, विद्वानों और जन साधारण के लिए प्रदर्शित की गई।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति ने 4 दिसम्बर, 1997 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर, नई दिल्ली मे संयुक्त रूप से एक बाल-नाटक का आयोजन किया। (स्वर्गीय) प्रो. जी. शंकर पिल्लै द्वारा मलयालम भाषा मे रचित "साबरमती दूरेयानु" (साबरमती दूर है) नाटक तिरूवनन्तपुरम (केरल) के रंगप्रभात बाल मंच द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से गांधी के आदर्शों को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया।

यू.एन.डी.पी. परियोजना

पांच महत्वपूर्ण मल्टीमीडिया परियोजनाएं जो सी.डी. रोम के माध्यम से सार्वजनिक प्रस्तुतियां करने के लिए हाथ में ली गई थीं, समाप्ति की अंतिम अवस्थाओं में थी।

इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 1997 के लिए द्वितीय इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति/फैलोशिप दो विख्यात महानुभावों अर्थात सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ उस्ताद आर. फहीमुद्दीन डागर और अंग्रेजी तथा मलयालम के जाने माने लेखक प्रो.

के. अय्यप्पा पणिक्कर को प्रदान की।

सहयोगात्मक कार्यक्रम

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने आलोच्य वर्ष में देश-विदेश के विभिन्न विषयों में संबंधित अनेक अकादमिक निकायों तथा विद्वत्संस्थाओं से बराबर सम्पर्क बनाए रखा। इस संदर्भ में यह बताना समीचीन होगा कि वर्ष 1997-1998 के दौरान, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के उल्लेखनीय सहयोगात्मक कार्यक्रमों में निम्नलिखित, तीन संगोष्ठियां और दो कार्यशालाएं शामिल थी :

यूनेस्को के सहयोग से "मध्य-एशियाई पुरावशेषों के विषय में व्यवहार्यता अध्ययन सम्मेलन", राष्ट्रीय संग्रहालय के साथ मिलकर "पुरावशेषों की प्रामाणिकता" विषय पर गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति के साथ मिलकर "गांधी और ग्रामोद्योग" विषय पर, राजीव गांधी फांउडेशन के साथ मिलकर "भारत-इटली संबंध" विषय पर संगोष्ठियां; कलकत्ता विश्वविद्यालय और मैसूर विश्वविद्यालय के सहयोग से "पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपि शास्त्र" विषय पर कार्यशालांए और संयुक्त राज्य अमेरीका की जीरोक्स पार्क के सहयोग से 'गीतगोविन्द' विषय पर प्रदर्शनी। इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने भारत अध्ययन के अमेरीकी संस्थान के साथ मिलकर 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ टैम्पल आर्किटेक्चर' खंड-2, भाग 3 भी इस वर्ष प्रकाशित किया।

न्यास की निधियों का निवेश

न्यास (ट्रस्ट) की निधियों के सुचारू तथा कुशल निवेश के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दो समितियां स्थापित की हैं : (1) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की निधियों के दीर्घावधिक निवेश के लिए समिति और (2) अधिशेष ब्याज की आय के अल्पावधिक निवेश के लिए समिति। पहली समिति में निम्नलिखित अधिकारी हैं :

1. अकादमिक निदेशक, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र	अध्यक्ष
2. श्री गोपीकृष्ण अरोड़ा (भूतपूर्व वित्त सचिव)	सदस्य
3. अतिरिक्त सचिव, आर्थिक कार्य विभाग (वित्त मंत्रालय द्वारा नामित)	सदस्य
4. सदस्य सचिव, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र	सदस्य

आलोच्य अवधि में इस समिति की दो बैठकें 10 जून, 1997 को और 8 जनवरी, 1998 को हुई।

अल्पावधि के लिए उपलब्ध निधियों का निवेश समिति की सिफारिशों के आधार पर किया जाता है। अल्पावधि निवेश समिति का गठन इस प्रकार है:

1. सदस्य सचिव	अध्यक्ष
2. एम.एस. (बी.पी.सी.)	सदस्य
3. संयुक्त सचिव, इन्दिरा गांधी	सदस्य
4. निदेशक (ए.एफ.)	सदस्य तथा संयोजक

जब कभी आवश्यकता होती है इस समिति की बैठक बुलाई जाती है अथवा विचारणीय विषयों पर कागज-पत्रों को सदस्यों में घुमाकर निर्णय लिया जाता है।

वर्ष 1997-98 के दौरान, दीर्घावधिक निवेश और अल्पावधिक निवेश संबन्धी समितियों की सिफारिशों पर क्रमश: 23.55 करोड़ रूपये दीर्घावधिक आधार पर और 7.42 करोड़ रूपए अल्पावधिक आधार पर सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और बैंकों में निवेश किए गए।

वार्षिक कार्य योजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति और न्यास ने वर्ष 1998-99 की वार्षिक कार्ययोजना का अनुमोदन किया। 1997-98 अनुमोदित कार्यक्रमों की परिधि में जो भी लक्ष्य निर्धारित किए गए थे, भिन्न-भिन्न प्रभागों को कुल मिलाकर, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता मिली। प्रत्येक प्रभाग की प्रमुख उपलब्धियों का ब्यौरा आगे के पृष्ठों में दिया गया है।

कलानिधि

(पुस्तकालय, सूचना प्रणालियों, सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा क्षेत्र अध्ययन का प्रभाग)

कलानिधि प्रभाग कलाओं तथा मानविकी विषयों से संबंधित संदर्भ सामग्री के विशाल भंडार के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान करता है। कलानिधि प्रभाग के मुख्य घटक हैं : एक संदर्भ पुस्तकालय, बहुमाध्यमिक डेटाबेस की सुविधाओं के साथ कलाओं तथा मानविकी विषयों की सूचना प्रणालियां, सांस्कृतिक अभिलेखागार और क्षेत्र अध्ययन संबंधी कार्यक्रम।

वर्ष 1997-98 में संदर्भ पुस्तकालय ने कम्प्यूटर तथा सूचना प्रौद्योगिकी विषयक सामग्री के अलावा कला रूपों, इतिहास, पुरातत्त्व, धर्म, दर्शन, भाषा, मानव विज्ञान, लोक साहित्य, तथा मानवजाति विज्ञान आदि सभी विषयों से संबंधित पुस्तकों, प्रबन्ध ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं, माइक्रोफिल्म व माइक्रोफिश, फोटोग्राफ, स्लाइडों, फिल्मों, श्रव्य-दृश्य सामग्रियों आदि के संग्रह से अपने भंडार को समृद्ध करने का काम जारी रखा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय की एक अनुपम विशेषता है उसका माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिश का समृद्ध संग्रह। इस वर्ष भी नियमित कार्यक्रम के अन्तर्गत, संस्कृत, अरबी तथा फारसी की मूल पाण्डुलिपियों के बड़े संग्रहों से माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिशें प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयास किए गए।

पुस्तकालय शोधकर्ताओं को कम्प्यूटरीकृत तथा हस्तचालित कैटलॉगों के माध्यम से संदर्भ सुविधाएं प्रदान करता रहा।

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

नई प्राप्तियां

मुद्रित सामग्री

इस वर्ष संदर्भ पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकों के 4,310 नए खंड जोड़े गए। इनमें वे 567 पुस्तकें भी शामिल हैं जो विभिन्न विद्वानों तथा संस्थाओं द्वारा उपहारस्वरूप प्रदान की गई हैं और कुछ पुस्तकें आदान-प्रदान के आधार पर प्राप्त हुई हैं। महत्त्वपूर्ण दाताओं में से कुछ उल्लेखनीय हैं : श्रीलंका के प्रो. एस. भंडारनायक, टोकियो के प्रो. योगी आओयोगी; लंदन के श्री आन्द्रे टेम, पेरिस की श्रीमती कृष्णा रिबाउड, पेइचिंग (चीन) के प्रो. लोझी जिआओ, जापान के प्रो. मिशियो यानो, और दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. एच. वाई. मोहनराम, डा. लोकेश चन्द्र, श्री कृष्ण देव, कु. पी.एन. जंगलवाला, रोएरिक सोसाइटी के श्री मिखाइल लाउनेव, दिल्ली से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र से डा. टी.ए.वी. मूर्ति, प. एस. मुखोपाध्याय और श्री एम. सी. जोशी। जिन संस्थाओं ने अपने उपहारों से पुस्कालय को समृद्ध बनाने में सहयोग दिया उनमें शामिल हैं: जापान फांउडेशन, टोकियो; फ्रेंच हॉप म्यूजियम ऑफ ईस्टर्न आर्ट, बुडापेस्ट; इनजेक्ट इन्स्टिट्यूट ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज, टोकियो, सांस्कृतिक कांउसलर, चीनी राजदूतावास, नई दिल्ली इंगलिश बुक स्टोर, अहमदाबाद; यू.वी. स्वामिनाथन अय्यर लाइब्रेरी, चेन्नई; आई.एस.पी.सी.के., दिल्ली; और श्री वेंक्टेश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति। इस समय पुस्तकालयों में पुस्तकों/ खंडों की संख्या कुल मिलाकर 1,08,999 है।

व्यक्तिगत संग्रह

(स्व.) श्री. वी.के. नाराण मेनन के संग्रह में से 1850 खंडों को और (स्व.) प्रो. महेश्वर नियोग के संग्रह से 1843 खंडों को अवाप्ति रजिस्टर में दर्ज कर लिया गया है।

पत्र-पत्रिकाएं

पुस्तकालय इस वर्ष भी उन अकादमिक और तकनीकी पत्र-पत्रिकाओं का ग्राहक बना रहा जिनका उल्लेख पिछले वर्ष की रिर्पोट में किया गया था। ऐसी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या अब 400 है। ये पत्र-पत्रिकांए इन विषयों से सम्बंधित हैं मानव विज्ञान, पुरातत्व, स्थापत्य, कलाएं, संस्कृति, नृत्य, लोक साहित्य, इतिहास, मानविकी विषय, पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान, भाषा विज्ञान, साहित्य, संग्रहालय अध्ययन, संगीत मुद्रा टंकण शास्त्र, प्राच्य अध्ययन, मंचीय कार्यअध्ययन, मंचीय कलांए, दर्शन, पुत्तलिका कला, धर्म, विज्ञान, समाज शास्त्र, सामाजिक विज्ञान, ग्रंथसूची, पुस्तक समीक्षा, कम्पयूटर और सूचना विज्ञान, संरक्षण, रंगमंच और क्षेत्र अध्ययन।

श्रव्य-दृश्य सामग्री का संग्रह

इस वर्ष कुल मिलाकर 21 नए वीडियो कैसेट जोड़े गए। ये कैसेट राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.), स्मिथसोनियन इन्स्टि्टयूट की डायना ली और लौरेल केंडल, श्री अक्षर प्रतिष्ठान संस्थान, अहमदाबाद और एम.एस. स्वामिनाथन फाउंडेशन से प्राप्त किए गए हैं।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के माध्यम से प्राप्तियाँ

वर्ष के दौरान, भारत सरकार के विभिन्न द्विपक्षीय आदान-प्रदान कार्यक्रमों में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भाग लेने से पुस्तकालय को सामग्री प्राप्त होती रही। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण सामग्रियां प्राप्त हुई :

लोपेज मेमोरियल म्यूजियम (फिलिपीन्स) की विवरणिका;

अर्चीफ ऑन म्यूजियम वूर हेट, व्लास्मसे कलचर (बेल्जियम) के प्रकाशनों की सूची;

बेल्जियम के राष्ट्रीय पुस्तकालय से कैटलॉग;

फिनलैंड की फिन्निश लिटरेचर सोसाइटी के प्रकाशनों का कैटलॉग और उसकी विवरणिका;

दक्षिण कोरिया के सिओल कला केन्द्र की विवरणिका, संगठन चार्ट और मासिक पत्रिका;

पुस्तकों, माइक्रोफिल्मों, कलावस्तुओं, सांस्कृतिक धरोहर के कुछ चुने हुए क्षेत्रों से संबंधित ग्राफिक प्रलेखों आदि के आदान-प्रदान के लिए सिसली, क्रोएशिया, हंगरी, फिनलैंड, फिलीपीन्स, क्यूबा और दक्षिण कोरिया के साथ पत्र-व्यवहार प्रारम्भ किया गया है।

माइक्रोफिश

वर्ष 1997-98 में कुल मिलाकर 5,839 माइक्रोफिशें प्राप्त हुई हैं। इनमें से 1,132 माइक्रोफिशें सामाजिक विज्ञानों के वैज्ञानिक सूचना संस्थान (इनियन), रूसी अकादमी, मास्को से और रूसी पत्रिका 'रस्कई मिल्ल'' और पावो एज़िजेने हेलनाला गजट'' की 4,707 माइक्रोफिशें इंटर डॉक्यूमेंटेशन कम्पनी (आई.डी.सी.) लीडन, नीदरलैंड से प्राप्त हुई है।

माइक्रोफिल्में/माइक्रोफिशें

विभिन्न केन्द्रों से संग्रह

संदर्भ पुस्तकालय ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के माइक्रोफिल्मांकन एककों से 1,332 कुण्डलियों की प्रतिकृतियां प्राप्त कीं। ये कुण्डलियाँ एल.डी. संस्थान अहमदाबाद; रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर; वैदिक संशोधन मंडल पुणे; गवर्नमेंट ओरियंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, नागपुर; बॉम्बे यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, मुंबई; एशियाटिक सोसाइटी, मुंबई; सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर और ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट एंड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरूवनन्तपुरम से प्राप्त हुई थी।

इसके अतिरिक्त, संस्कृत पांडुलिपियों की 56 कुंडलियां और जोड़ी गई । इन कुंडलियों में 35 कुंडिलियां तुबिंजन यूनिवर्सिटी तुबिंजन (जर्मनी) से, संस्कृत पांडुलिपियों की 10 कुंडलियां, बिब्लयोथीक नेशनल पेरिस से और 11 पांडुलिपियों की कुडलियां वेलकम इन्स्टिट्यूट ऑफ हिस्टरी ऑफ मेडिसिन, लंदन से प्राप्त हुई थी।

आंतरिक उत्पादन

वर्ष के दौरान, संदर्भ पुस्तकालय को माइक्राफिल्मों की 1504 कुंडलियां आंतरिक उत्पादन दल से प्राप्त हुई। ये पॉजिटिव कुंडलियां इन संस्थाओं में उपलब्ध पांडुलिपियों की थी : वैदिक संशोधन मंडल, पुणे (304 कुंडलियां); श्री राम वर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, त्रिपुनीतुरा (138 कुंडलियां); गवर्नमेंट ओरियंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चेन्नई (286 कुंडलियां); भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान पुणे, (402 कुंडलियां); ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट और मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरूवनन्तपुरम (142 कुंडलियां); एल.डी. संस्थान, अहमदाबाद, (74 कुंडलियां); राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, उदयपुर (44कुंडलियां) सवाई मान सिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर (7 कुंडलियां); एशियाटिक सोसाइटी, मुंबई (1 कुंडली); रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर (24 कुंडलियां); नागपुर यूनिवर्सिटी (2 कुंडलियां); आनन्दाश्रम संस्थान, पुणे; रामकृष्ण मठ, चैन्नई (25 कुंडलियां), और एक विशेष दुर्लभ (1 कुंडली) और जैन विद्या संस्थान, जयपुर (1 कुंडली)। इस प्रकार कुल मिलाकर 13,845 पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में आन्तरिक उत्पादन एकक के माध्यम से तैयार की गई।

रिप्रोग्राफी एकक ने भी अपने चल माइक्रोफिल्मांकन एकक के माध्यम से एशियाटिक सोसाइटी, मुंबई, बॉम्बे यूनिवर्सिटी, मुंबई; राजकीय संग्रहालय, अलवर (राजस्थान); केलादि म्यूजियम और ऐतिहासिक अनुसंधान ब्यूरो, केलादि (कर्नाटक); और प्राच्य शोध संस्थान, मैसूर में पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने का काम हाथ में लिया।

माइक्रोफिल्म कुंडलियों की प्रतियां बनाने का कार्यक्रम भी आम परिपाटी के अनुसार चालू रहा, जिसके अन्तर्गत हर माइक्रोफिल्म की एक प्रति संदर्भ पुस्तकालय में अध्येतओं के संदर्भ के लिए रखी जाती है और एक दूसरी प्रति मूल पांडुलिपियों के मालिकों/अभिरक्षकों को दी जाती है। इसके अलावा, इंटरडॉक्यूमेंटेशन कंपनी, लीडन (नीदरलैंड) से प्राप्त माइक्रोफिशों की भी दूसरी प्रतियां तैयार की गई। नीचे दी गई सारणी में वर्ष 1997-98 के लिए आन्तरिक उत्पादन का ब्यौरा दिया गया है, जिसमें वर्ष के दौरान माइक्रोफिल्मों का उत्पादन भी शामिल है।

आन्तरिक माइक्रोफिल्में (निगेटिव)

परियोजना 1997-98	पांडुलिपियों की संख्या	पन्नों की संख्या	भाषा/लिपि
क. गीतगोविन्द			
1. राजकीय संग्रहालय, अलवर	1	76	संस्कृत/देवनागरी
2. एशियाटिक सोसाइटी, मुंबई	7	257	-तदैव-
3. बॉम्बे यूनिवर्सिटी, मुंबई	9	397	-तदैव-
4. प्राच्य शोध संस्थान, मैसूर	32	2417	-तदैव-
5. जैन विद्या संस्थान, जयपुर	2	42	-तदैव-
ख. अन्य परियोजनाएं			
1. केलाड़ी म्यूजियम और ऐतिहासिक अनुसंधान ब्यूरो, केलादि	111	9,062	संस्कृत/देवनागरी
2. विशेष दुर्लभ संग्रह	1	1	-तदैव-

माइक्रोफिल्मों/माइक्रोफिशों की प्रतियां बनाना

निम्नलिखित संस्थाओं के संग्रहों में से 3,580 माइक्रोफिल्म कुंडलियों और 13,966 माइक्रोफिशों की प्रतियां बनाने का कार्य सम्पन्न किया गया :

1. गवर्नमेंट आरियंट मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, चेन्नई;
2. ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट एंड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरूवनन्तपुरम;
3. एल.डी. संस्थान, अहमदाबाद;
4. वैदिक संशोधन मंडल, पुणे;
5. भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे;
6. श्री राम वर्मा गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, त्रिपुनीतुरा;
7. राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, उदयपुर;
8. महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर;
9. आनन्दाश्रम संस्था, पुणे;
10. रामकृष्ण मिशन, चेन्नई;
11. नागपुर यूनिवर्सिटी, नागपुर;
12. एशियाटिक सोसाइटी, मुंबई;
13. राजकीय संग्रहालय, अलवर;
14. रजा लाइब्रेरी, रामपुर;
15. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली;
16. इंटरडॉक्यूमेंटेशन कंपनी संग्रह।

माइक्रोफिल्मांकन परियोजनाएं

वर्ष के दौरान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का भिन्न-भिन्न केन्द्रों में माइक्रोफिल्म बनाने का काम भी भली-भांति प्रगति करता रहा। आनन्दाश्रम संस्थान, पुणे (द्वितीय चरण) भारत इतिहास संशोधक मंडल पुणे; राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान, जोधपुर और रामकृष्ण मिशन, चेन्नई में माइक्रोफिल्में बनाने की नई परियोजनाएं हाथ में ली गई। वर्ष 1997-98 के दौरान माइक्रोफिल्मांकन कार्यक्रम की प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा गया है :

क्रम सं०	परियोजनाएं	पांडुलिपियों/पन्नों की संख्या		भाषा/लिपि
1.	ओरियंटल रिसर्च इन्सिटट्यूट एण्ड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरूवनन्तपुरम	542	20,116	संस्कृत/मलयालम/
2.	गवर्नमेंट ओरियंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाईब्रेरी, चेन्नई	2,704	1,82,608	संस्कृत/तेलुगु
4.	सरस्वती भवन पुस्तकालय, वाराणसी	3,383	2,01,156	संस्कृत/देवनागरी
5.	तंजावूर महाराजा सरफोजी, की सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजावूर	2,289	48,573	संस्कृत/देवनागरी
6.	शंकर मठ, कांचीपुरम	590	1,26,210	संस्कृत/ग्रंथ
7.	आनन्दाश्रम संस्था, पुणे	137	7,224	संस्कृत/देवनागरी
8.	भारत इतिहास संशोधक मंडल, पुणे	881	18,530	संस्कृत/देवनागरी/ मराठी
9.	राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान	1,050	52,300	संस्कृत/देवनागरी
10.	रामकृष्ण मिशन, मैलापुर, चेन्नई	69	31,805	अंग्रेजी

पूरी की गई परियोजनाएं

आनन्दाश्रम संस्थान, पुणे (द्वितीय चरण); भारत इतिहास संशोधक मंडल, पुणे; प्राच्य शोध संस्थान, मैसूर; केलाड़ी म्यूजियम और एतिहासिक अनुसंधान ब्यूरो, केलाडी; बॉम्बे यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, मुंबई; राजकीय संग्रहालय, अलवर और

रामकृष्ण मिशन, चेन्नई में जो माइक्रोफिल्म परियोजनाएं चल रही थी वे अब पूरी हो चुकी हैं।

पाण्डुलिपि संबंधी डेटाबेस

वर्ष 1997-98 के दौरान, कैटलॉग कार्डों की 30,000 कम्प्यूटर प्रविष्टियां सही की गईं; 15,000 कैटलॉग कार्डों और 4,000 डेटाशीटों की प्रविष्टियां कम्प्यूटर में भरी गईं। इसके अतिरिक्त, कैटलॉग कार्डों के 2,500 रेकार्ड रोमन लिपि से देवनागरी लिपि में अंतरित किए गए और भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे की 570 डेटाशीटें तैयार की गई।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विशेषज्ञों ने माइक्रोफिल्म बनाने के लिए पाण्डुलिपियों का चयन किया है और वी.वी.आर.आई. होशियारपुर; डी.ए.वी. कालेज, चंडीगढ़; ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, तिरूपति; गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद; सिंधिया प्राच्य शोध संस्थान, उज्जैन; केलादि संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद; ओरियंटल रिसर्च इन्स्टिट्यूट एण्ड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरूवनन्तपुरम; डा. यू.वी. स्वामिनाथ अय्यर लाइब्रेरी, चेन्नई; और आनन्दाश्रम संस्थान, पुणे में चुनी गई पाण्डुलिपियों की सूचियां तैयार की गई हैं।

स्लाइडें

आलोच्य वर्ष में, संदर्भ पुस्तकालय के संग्रह में 461 स्लाइडें जोड़ी गई। इनमे से 107 स्लाइडें हिमालय के भू-दृश्यों की, 58 राष्ट्रीय संग्रहालय की मूर्तियों की, 36 स्लाइडें भारत के कुछ प्राचीन स्मारकों की, 62 अलवर से प्राप्त गीतगोविन्द के चित्रों की और 198 स्लाइडें भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे की पाण्डुलिपियों में उपलब्ध लघुचित्रों की थी।

कुल मिलाकर 14,136 अभिलेखागारीय स्लाइडों को, जो पहले (i) ब्रिटिश लाइब्रेरी संग्रह (2982 स्लाइडें), (ii) दक्षिण एशियाइ कला संबंधी अमरीकी समिति (777 स्लाइडें), इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अपने संग्रह (1999 स्लाइडें), (iv) कैथरीन-बी, अशर संग्रह (383 स्लाइडें); स्तासबिब्लियोथीक प्रॉसिशर, कुलतुरबिसित्ज (एस.पी.बी.के.) बर्लिन (51 स्लाइडें); भारतीय अंतर्राष्ट्रीय पुत्तलिकला संस्था (1060 स्लाइडें) से प्राप्त हुई थीं, अवाप्ति-रजिस्टर में चढ़ाया गया।

आलोच्य अवधि में, विभिन्न संग्रहों से संबंधित 17,833 हस्तचालित कैटलॉग कार्ड तैयार किए गए और शोधकर्त्ताओं के उपयोग के लिए 22,218 मुख्य प्रविष्ट कैटलॉग कार्ड कम्प्यूटर में भरे गए। 1,375 स्लाइडों की प्रतियां तैयार की गई और अध्येताओं के उपयोग के लिए संदर्भ पुस्तकालय को सौंपी गईं। 13,000 स्लाइडों को स्कैनिंग/डिजिटिकरण के लिए यू.एन.डी.पी. के पास भेजा गया।

संरक्षण एकक

समीक्षाधीन अवधि में, संरक्षण एकक में कलाकृतियों, दुर्लभ ग्रंथों, तालपत्रों पर लिखी पाण्डुलिपियों, माइक्रोफिल्मों, माइक्रोफिशों आदि के संरक्षण का कार्य सम्पन्न किया। इसके अलावा, उसने केन्द्र के अभिलेखागार में संगृहीत मुखौटों, दो काष्ठ-मूर्तियों और मिलादा गांगुली के एक मृत्पात्र और कठपुतलियों के संरक्षण के लिए उपचार किया।

ग्रंथसूची

निम्नलिखित ग्रंथसूचियां तैयार की जा रही है :-

1.	छाया पुत्तलिका विषयक ग्रंथसूची	:	912 प्रविष्टियां कम्पयूटर में भरी गई। देश-सूचक और लेखक-सूचक तैयार किए जा रहे हैं।
2.	बृहदीश्वर मंदिर विषयक सटिप्पणीक ग्रंथसूची	:	आंशिक टिप्पणियों के साथ 935 प्रविष्टयों को कम्प्यूटर में भरा गया।
3.	व्रज-प्रकल्प विषयक ग्रंथसूची	:	कुल 3,200 टिप्पणीक प्रविष्टियां कम्प्यूटर में भरी गई और लेखक के पास भेजी गई।
4.	गीतगोविन्द विषयक ग्रंथसूची	:	कुल 253 प्रविष्टियां कम्प्यूटर में भरी गईं।
5.	जरतुश्ती अध्ययन विषयक सटिप्पणीक ग्रंथसूची	:	भिन्न-भिन्न पुस्तकालयों से 165 प्रविष्टियां कम्पयूटर में भरी गई और विशेषज्ञों को उनकी टीका टिप्पणी के लिए भेजी गई।

कैटलॉग कार्य

पुस्तकें :-

आलोच्य वर्ष में, कुल मिलाकर 5,376 पुस्तक खंडों का वर्गीकरण और कैटलॉग कार्य किया गया और 2,773 पुस्तक-शीर्षकों को ''लिबसिस'' डेटाबेस में दर्ज किया गया।

माइक्रोफिशें :-

अमुद्रित सामग्री के कैटलॉग कार्य के अन्तर्गत, एस.बी.पी.के., बर्लिन और आई.ए.एस.डब्ल्यू.आर. की पाण्डुलिपियों के 1,704 शीषकों का कैटलॉग कार्य पूरा किया गया; इन माइक्रोफिशों से संबंधित 1,093 अभिलेखों को ''लिबसिस'' डेटाबेस में भरा गया।

माइक्रोफिल्में :-

अरबी और फारसी शोध संस्थान, टोंक की माइक्रोफिल्मांकित पांडुलिपियों के 468 अभिलेख ''लिबसिस'' डेटाबेस में भरे गए।

जिल्दबंदी :-

आलोच्य अवधि में 7,500 खंडों की जिल्दबंदी करवाई गई। अब जिल्दबंद खंडों की संख्या कुल मिलाकर 45,380 हो गई है।

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक

कलानिधि (ख) प्रभाग की जिम्मेदारी है : अन्य सभी प्रभागों की कम्प्यूटरीकरण संबंधी आवश्यकताओं का पता लगाना, डेटा का विश्लेषण करना, सूचना प्रणालियों का डिजाइन व विकास करना, उनका अनुरक्षण तथा संचालन करना और इनका उपयोग करने वाले स्टाफ-सदस्यों को प्रशिक्षित करना।

हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर की प्राप्ति और परिचालन

प्राप्ति

कलाकोश प्रभाग के प्रकाशन कार्य के लिए ''इंडिका सॉफ्टवेयर'' खरीदा गया।

उन्नत करना

प्रलेख छवि अंकन प्रणाली (डॉक्यूमेंट इमेजिंग सिस्टम) के हार्डवेयर को उन्नत करके 32 एम.बी.रैम, 4.3 जी.बी. एच. डी.डी. का बनाया गया; 3 पी.सी. ए.-टी. 486 सिस्टम की वन सी.सी. कंट्रोलर कार्ड मैमरी को 4 एम.बी. रैम से बढ़ाकर 20 एम.बी. रैम किया गया।

प्रशिक्षण

वर्ड प्रोसेसिंग के विषय में एक आन्तरिक कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम 22 से 25 जुलाई, 1997 तक चलाया गया। इस कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम में चौबीस स्टाफ सदस्यों को प्रशिक्षण दिया गया।

प्रलेखन छवि अंकन प्रणाली

इस प्रणाली का उपयोग मूलरूप से, केन्द्र के उन सभी अभिलेखों को सुरक्षित रखने के लिए किया जाता है जो पिछले 10 वर्षों में अभिलेखागारीय डेटा बैंक में रखे गए हैं। आलोच्य वर्ष में, कलाकोश प्रभाग की 125 फाइलों, कलानिधि में रिप्रोग्रफिक एकक की 50 फाइलों, सांस्कृतिक अभिलेखागार में प्राप्त दान-उपहार की सूची को, सूत्रधार प्रभाग की 35 फाइलों और अन्य अनेक महत्वपूण समझे गए प्रलेखों को प्रलेख छवि अंकन प्रणाली (डॉक्यूमेंटेशन इमेजिंग सिस्टम) में भरा गया। इसके अतिरिक्त 2000 माइक्रोफिल्मांकित पांडुलिपियों से संबंधित कैटलॉग्बद्ध डेटा और स्लाइडों के शीर्षकों से संबंधित 150 प्रविष्टयों को कम्प्यूटर में भरा गया।

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

वर्ष 1997-98 के दौरान, सांस्कृतिक अभिलेखागार ने निम्नलिखित वस्तुएँ उपहारस्वरूप अथवा अन्यथा प्राप्त कीं :

1. 116 ग्रामोफोन रिकार्ड, जिनमें सेमनगुडी श्रीनिवास अययर, एम.एल वसंतकुमारी, डी.के. पट्टामल, एम.के. त्यागराज भागवतार, एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी आदि कर्नाटक तथा हिन्दुस्तानी संगीत के महान प्रतिपादकों का संगीत रिकार्ड किया हुआ है, उपहारस्वरूप श्री एस.वेंकटेशन, भूतपूर्व, सीमा शुल्क, उत्पाद-शुल्क तथा स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण, और प्रधान, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क एवं सीमा-शुल्क बोर्ड भारत सरकार से प्राप्त हुए।

2. भारतीय स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित समारोहों के सात ऑडियो कैसेट उपहारस्वरूप

जवाहरलाल नेहरू स्मारक न्यास से प्राप्त हुए।

3. 10 श्याम-श्वेत और 15 रंगीत यानी कुल मिलाकर 25 फोटोग्राफ श्री आश्विन मेहता से प्राप्त किए गए। श्री मेहता गुजरात के विख्यात समसामायिक फोटोग्राफर हैं।

4. महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और कलकत्ता के जीवन से संबंधित 62 श्वेत-श्याम फोटोग्राफ विख्यात फोटोग्राफर शंभू शाह से प्राप्त किए गए।

अभिलेखागारीय कैटलॉग कार्य

सांस्कृतिक अभिलेखागार ने विभिन्न वस्तुएं प्राप्त करने के अलावा, अपनी अभिरक्षा में विद्यमान संग्रहों को अवाप्ति रजिस्टर में दर्ज करने और कैटलॉग तैयार करने पर भी अपना ध्यान केन्द्रित किया। ब्यौरा इस प्रकार है :-

डा. यशोधर मठपाल द्वारा तैयार की गई शैल-कला की मापक्रम आधारित 400 प्रतिकृतियाँ; हरिकथा संग्रह की 178 पुस्तकें; 550 फोटोग्राफ; 20 ऑडियो कैसेट; 320 स्लाइडें, 84 ऑडियो स्पूल, और विभिन्न विषयों पर चित्रकारियों की 507 अनुकृतियां अवाप्ति रजिस्टर में चढ़ाई गईं। इसके अलावा लान्स डेन संग्रह की 9,500 रंगीन स्लाइडों को कैटलॉग में दर्ज किया गया।

प्रलेखन

वर्ष 1997-98 के दौरान, निम्नलिखित विषयों के संबंध में प्रलेखन कार्य सम्पन्न किया गया :

1. हिमाचल प्रदेश के गद्दी लोग;
2. कुमाऊं का नन्दादेवी उत्सव;
3. वाराणसी का हस्तशिल्प;
4. सोनभद्र और मिर्जापुर की शैल-कला;
5. राजस्थान की फड़-कथा-शैली का प्रलेखन;
6. गीतगाविन्द प्रदर्शनी।

भीमबेटका तथा उत्तराखंड की शैलकला के नमूनों को डा. यशोधर मठपाल द्वारा तैयार की गई मापक्रम आधारित 400 प्रतिकृतियों और भारत के वाद्ययंत्रों के विषय में कृष्णस्वामी द्वारा संगृहीत रिप्रोग्राफिक सामग्री के फोटोग्राफ तैयार किए गए और आलबमों में सुरक्षित रखे गए।

आन्तरिक रूप से किए गए प्रलेखन कार्यों में से कुछ हैं कला, साहित्य, संगीत तथा नृत्य के क्षेत्र में सुविख्यात धुरंधरों के साथ साक्षात्कार जिनका ब्यौरा नीचे दिया गया है :

1. सुप्रिसद्ध उपन्यासकार तथा रंगमंच विशेषज्ञ डा. शिवराम कारन्त के साथ डा. कपिला वात्स्यायन की भेंटवार्ता ;

2. विख्यात कत्थक नृत्यांगना श्रीमती सितारा देवी के साथ डा. कपिला वात्स्यायन की भेंटवार्ता ;

3. सुप्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना श्रीमती दमयन्ती जोशी के साथ डा. कपिला वात्स्यायन की भेंटवार्ता ;

ऑडियो

पेरिस की डा. वसुन्धरा और प्रो. पिएर-सिलवैन फिलियोजा, ब्रून विश्वविद्यालय, जर्मनी के प्रो. टी.एस. मैक्सवैल और इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के डा. सम्पत नारायण के सहयोग से, यू.एन.डी.पी. कार्यक्रमों के अन्तर्गत, मल्टी-मीडिया परियोजनाओं के लिए ऑडियो रेकार्डिंग की गई।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के आलोच्य अवधि में अनुसंधान तथा क्षेत्र अध्ययन की परियोजना के अन्तर्गत निम्नलिखित वीडियो प्रलेखन कार्य हाथ में लिए :

1. लद्दाख का हेमिस उत्सव, एम.के. ऐना द्वारा;
2. नबकलेबर- पुरी में भगवान जगन्नाथ की काष्ठ प्रतिमा में प्रयुक्त काठ के नवीकरण के विषय में एक फिल्म, श्री पृथ्वीराज मिश्र द्वारा;
3. सैक्रेड वर्ल्ड ऑफ टोडाज (टोडा लोगों का पवित्र संसार), जिसमें नीलगिरि पहाड़ियों की टोडा जाति के लोगों की जीवन-शैली की झांकी प्रस्तुत की गई है, बप्पा राय द्वारा;
4. करखा-अजमेर शरीफ की दरगाह के संगीत पर एक फिल्म, श्री खालिद सुल्तान द्वारा;
5. ताबो-चोस खोर - ताबो बौद्ध मठ के सहस्राब्दि समारोह पर एक फिल्म;
6. हिमाचल प्रदेश स्थित ताबो में बौद्ध मठ;
7. फरवरी, 1998 में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, संगीत नाटक अकादमी और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से आयोजित मुखौटा नृत्य उत्सव और "रूप-प्रतिरूप : मानव और मुखौटा" विषयक प्रदर्शनी, जिसमें इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संग्रह में उपलब्ध मुखौटों को प्रदर्शित किया गया था, का अनुसंधान तथा अध्ययन के प्रयोजन के लिए व्यापक प्रलेखन किया गया।

इसके अतिरिक्त, इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने विभिन्न स्रोतों से निम्नलिखित सात फिल्में प्राप्त कीं :

1. पूर्व उत्तर : फास्ट फोरवार्ड (आठ फिल्मों की श्रृंखला) ;
2. मास्टर पीसेज ऑफ आर्ट वर्ल्ड : थ्री हर्मिटेज - 18 कड़ियों की एक वीडियो श्रृंखला ;
3. मुरक्क नफीस ;
4. अनुकम्पन ;
5. दि बेंडिंग ऑफ दि बॉ ;
6. मैहर राग ;

7. ए पियानो स्टोरी ;

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का प्रसारण

केन्द्र द्वारा निर्मित बाईस (22) कार्यक्रमों को दूरदर्शन पर प्रसारण के लिए अनुमोदित किया गया है। गारो जन-जाति पर फिल्म, वांगला उत्सव, भीष्म सहानी और शिवराम कारन्त के साथ डा. कपिला वात्स्यायन की भेंटवार्ताएँ और ''रीडिफाइनिंग ऑफ आर्ट'' शीर्षक कार्यक्रम वर्ष 1997-98 के दौरान दूरदर्शन पर प्रसारित किए गए। कथकलि के सात एपिसोडों कूडियअट्टम के दो एपिसोडों और छम नृत्य के दो एपिसोडों की संपादित प्रतियां दूरदर्शन पर प्रसारण के लिए तैयार की गईं।

कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम के अन्तर्गत, कलानिधि प्रभाग कुछ ऐसे विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करता है जिनके साथ भारत के घनिष्ठ संबंध रहे हैं।

क. दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन

दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन के कार्यक्रम के विषय के केन्द्र में विद्यमान महत्वपूर्ण संग्रह में और वृद्धि करने के लिए प्रयास किए गए। इस हेतु दक्षिण-पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र, सिंगापुर; लीडन विश्वविद्यालय (नीदरलैंड) ; दक्षिण पूर्व एशिया तथा ओशनिया के भाषा तथा संस्कृति विभाग; और उत्तरी इलिनॉइस विश्वविद्यालय, डेकाल्ब, संयुक्त राज्य अमरीका, जैसी संस्थाओं के साथ संपर्क स्थापित किए गए।

दक्षिण-पूर्व एशिया विषय के मूर्धन्य विद्वान (स्व.) प्रो. एच.बी. सरकार के शोध पत्रों का एक संकलन किया गया है। बाली द्वीप के संबंध में एक सटिप्पणीक विशिष्ट ग्रंथसूची के संकलन के लिए आवश्यक सामग्री करने का कार्य भी प्रगति पर है।

संगोष्ठी

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 12 अगस्त, 1997 को दो सत्रों में ''लाओस की कला'' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की। प्रथम सत्र की अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो बालादास घोषाल और दूसरे सत्र की अध्यक्षता भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के भूतपूर्व निदेशक श्री कृष्णदेव ने की। श्री हिमाचल सोम, जो पहले लाओस में भारत के राजदूत थे और इस समय भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक हैं, ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और नई दिल्ली स्थित भारतीय संस्कृति की अंतर्राष्ट्रीय अकादमी के अध्यक्ष डा. लोकेश चन्द्र ने मुख्य अभिभाषण दिया। विशेषज्ञों द्वारा लाओस की कला के विभिन्न पक्षों के विषय में अनेक रोचक शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए। लगभग 40 पुरातत्वज्ञों, कला-इतिहासकारों और विषय के विशेषज्ञों ने संगोष्ठी में भाग लिया।

ख. पूर्व-एशियाई अध्ययन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की चीनी-भारती अध्ययन परियोजना को चालू रखने के लिए पूर्व-एशियाई कार्यक्रम जारी रहा। चीनी-भारतीय अध्ययन परियोजना डा. कपिला वात्स्यायन द्वारा, चीन में दुनहुआंग स्थित मोगाओ गुफा स्थल

पर प्रो. दुआन वेनजी के साथ अपनी बातचीत में दी गई इस दलील पर परिकल्पित की गई थी कि इन दो महान सभ्यताओं को पश्चिमी गोलार्द्ध के माध्यम से ही एक-दूसरे के बारे में जानना बंद कर देना चाहिए। अकादमिक निदेशक के मार्गनिर्देश के आधार पर, इस एकक ने 1996 में "भारत-चीन परस्पर दृष्टि" परियोजना प्रारंभ की थी और दो संगोष्ठियां आयोजित की थी। चालू वर्ष में एकक ने निम्नलिखित प्रबंध ग्रंथों के संकलन पर ध्यान केन्द्रित किया :

(i) "हिमालयी अन्तराल के आर-पार : चीन को समझने के लिए एक भारतीय अन्वेषण"

(ii) "भारत-चीन के पारस्परिक संबंधों का कालक्रम-विज्ञान;

(iii) "जुआनजांग के पदचिन्हों के अनुसरण में : तान युन-शान"।

इसके अलावा, एकक ने दो व्याख्यानों का भी आयोजन किया। इनमें से पहला 31 जनवरी, 1997 को सैनफ्रांसिस्को के एशियाई कला संग्रहालय में भारतीय हिमालयी तथा चीनी सजावटी कला के क्यूरेटर डा. तेरेसे त्से बारथोलोम्यू द्वारा "चीनी कला में वानस्पतिक मोटीफ" विषय पर था, और दूसरा 22 अक्तूबर, 1997 को पेइचिंग विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति विभाग के प्रो. साओ बोआजु द्वारा "भारत तथा चीन के बीच घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंध" विषय दिया गया था।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अनुसंधान अधिकारी डा. राधा बैनर्जी ने मध्य-एशियाई कला और प्रतिमाविज्ञान के विज्ञान के क्षेत्र में एक अनुसंधान कार्यक्रम पूरा करने के लिए हिरियामा/युनेस्को सिल्क रोड फैलोशिप 1996-97 कार्यक्रम के अन्तर्गत चीन तथा यूरोप की यात्रा की। उन्होंने मध्य-एशिया के उपलब्ध बौद्ध स्मारकों तथा चीन, जिनजियांग और यूरोप में संगृहीत पुरावेषों का विस्तृत अध्ययन किया।

ग. स्लाविक तथा मध्य-एशियाई अध्ययन

स्लाविक तथा मध्य-एशियाई अध्ययन एकक की स्थापना मध्य-एशियाई परस्पर-क्रियाओं का अध्ययन करने के लिए की गई थी; इस हेतु उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से रचित साहित्य के सभी शोध संग्रहों को शनै: शनै: प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

तदनुसार, रूसी भाषा में उपलब्ध शोध-सामग्री इन दो संस्थाओं से माइक्रोफिशों पर प्राप्त करने के लिए बराबर भेजे जाते हैं : सामाजिक विज्ञान में वैज्ञानिक सूचना संस्थान (इनियन, मास्को) और इंटरडॉक्यूमेंटेशन कंपनी (आई.डी.सी. लीडन, नीदरलैंड)। आई.डी.सी. से रूसी तथा जर्मन भाषाओं के 40 से भी अधिक सीरियल माइक्रोफिशों की संख्या मार्च, 1998 में कुल मिलाकर 97,177 थी। इन सिरियलों के उपयोग को और सरल बनाने के लिए, इनके शीर्षक तथा विषयवस्तु वाले पृष्ठों को एक इंडेक्स सिरीज के रूप में अलग खंडों में जिल्दबंद किया जा रहा है।

इस समय पुस्तकालय स्लाविक तथा मध्य-एशियाई अध्ययनों से संबंधित 16 सामयिक पत्रिकाओं का ग्राहक है; इनमें से तीन जर्मन भाषा की और फ्रेंच भाषा की है। फॉशुंजन जुर ऑस्टयूरोपीयन जेशाच्ते का संपूर्ण सेट (खण्ड 19 को छोड़कर, जो कि अप्राप्य है) ताइझोरॉम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के प्रबन्ध निदेशक श्री धर्मवीर से पुस्तकालय को उपहारस्वरूप प्राप्त हो चुका है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पुस्तकालय में अब तक इनियन से 11,265 शीर्षक माइक्रोफिशों पर फिल्म प्राप्त हो चुकी है। इनमें से आलोच्य अवधि में कुल मिलाकर 1,135 माइक्रोफिश प्राप्त हुई। इनके शीर्षक हैं, क्रान्ति-पूर्व के

मध्य-एशिया का इतिहास और साहित्य : जीवनियां; अर्थव्यवस्था पर आधारभूत संदर्भ, जैसे गेजेटियर और वाणिज्यिक समीक्षांए; कानून और न्याय-शास्त्र की विभिन्न संहिताओं के संग्रह; सामाजिक संरचनाओं तथा आन्दोलनों पर सामग्री और उन्नीसवीं शताब्दी के रूस के बौद्धिक इतिहास की पुस्तकें। इन प्राप्तियों में इतिहास, दर्शन, भाषा तथा साहित्य और समाजशास्त्र विषयों के नए प्रकाशन (1992 के बाद के) भी शामिल हैं। इन्हें विषयानुसार वर्गीकृत किया गया और कम्प्यूटर कैटलॉग में भरा गया है।

मध्य-एशियाई पुरावेशेषों के प्रलेखन की परियोजना

इस परियोजना का उद्देश्य मध्य-एशिया में दूर-दूर तक बिखरे हुए पुरावेशेषों की स्थिति का प्रलेख तैयार करना और इन संग्रहों के हस्त एवं कम्प्यूटर चालित कैटलॉग तैयार करना है ताकि शोध-प्रयोजनों के लिए इनके विषय में सुव्यवस्थित जानकारी प्राप्त की जा सके। इस परियोजना के लिए यूनेस्को से अनुदान प्राप्त होता है।

इस परियोजना की व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा दिल्ली में 15 से 18 जुलाई, 1997 तक एक व्यवहार्यता अध्ययन सम्मेलन बुलाया गया। समरकन्द स्थित अंतर्राष्ट्रीय मध्य-एशियाई अध्ययन संस्थान और भारत विदेशों की अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। इस प्रयोजन के लिए समभागिता कार्यक्रम के अन्तर्गत यूनेस्को ने अनुदान प्रदान किया।

सम्मेलन में चर्चा प्रमुख रूप से इस विषयों पर केन्द्रित रही कि परियोजना में मध्य-एशियाई पुरावेशेषों की किन श्रेणियों को शामिल किया जाए, परियोजना में किन-किनन संग्रहों/संग्रहालयों को शामिल किया जाए और चुने गए पुरावेशषों के अध्ययन तथा प्रलेखन के लिए किन विधियों को अपनाया जाए। लगभग 40 विद्वानों ने इस सम्मेलन में भाग लिया, जिनमें उजबेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, कजाखस्तान, चीन, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्वीडन, बंगलादेश और हांगकांग के संग्रहालयों तथा पुस्तकालयों के निदेशक शामिल थे।

यूनेस्को (पेरिस) के अन्तरसांस्कृतिक परियोजना प्रभाग के निदेशक श्री दोऊदोऊ डीन सम्मेलन में उपस्थित हुए और समापन/विदाई भाषण भारत सरकार के विदेश सचिव श्री के.रघुनाथ द्वारा दिया गया।

इस बात पर सभी सहमत थे कि मध्य-एशियाई कला-वस्तुओं तथा पुरावशेषों और उनके स्थलों का प्रलेखन कार्य अत्यन्त आवश्यक, अनिवार्य तथा व्यवहार्य है। सम्मेलन ने यूनेस्को के महासम्मेलन में उनत्तीसवें अधिवेशन (अक्तूबर-नवम्बर, 1997) के लिए एक संकल्प का प्रारूप स्वीकार किया कि सदस्य राज्य और संबंद्ध इस परियोजना का समर्थन करें और यूनेस्को के महानिदेशक से अनुरोध किया कि वे शांति की संस्कृति विषयक ट्रांसडिसिप्लिनरी प्रोग्राम के ढांचे के भीतर, विशेष रूप से यूनेस्को द्वारा प्रारम्भ किए गए विश्वकार्यक्रम की स्मृति और मध्य-एशिया विषयक पूर्व-पश्चिम अंतर-सांस्कृतिक संवाद की परियोजना के अन्तर्गत इसका समर्थन करें।

सम्मेलन में परियोजना की रूपरेखा को परिभाषित करने के संबंध में भी कई प्रस्ताव स्वीकार किए गए। इनमें छह प्रकार की क्षेत्रीय संस्थाओं और भंडारों और प्रलेखन के लिए स्रोत सामग्री के 5 समूहों की पहचान से संबंधित प्रस्ताव भी शामिल था। इसके अलावा, मध्य-एशियाई धरोहर की 10 श्रेणियों को भी प्रलेखन के लिए चुना गया। उन संस्थाओं की भी एक मोटी सूची तैयार की गई जो क्षेत्रीय समन्वय केन्द्र के रूप में काम कर सकती है। अन्त में, सम्मेलन ने सुझाव दिया कि यूनेस्को के महानिदेशक से यह अनुरोध किया जाए कि वे परियोजना के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय परामर्श समिति नियुक्त करें, और यह समिति अपनी ओर से सम्मेलन की सिफारिशों के कार्यान्वयन के लिए एक सचिवालय स्थापित

करने की सिफारिश करे। सम्मेलन के टेप-अंकित विवरण पर आधारित एक विस्तृत रिपोर्ट इन्दिरा गांधी राष्ट्री कला केन्द्र द्वारा यूनेस्को को भेजी गई।

सम्मेलन की अनुवर्ती कार्रवाई के रूप मे और यूनेस्को के महासम्मेलन के अधिवेशन के लिए तैयारी के तौर पर, सम्मेलन के विदेशी प्रतिनिधियों को पत्र के माध्यम से यह अनुरोध किया गया कि वे यूनेस्कों से संबंधित अपने-अपने राष्ट्रीय आयोगों को परियोजना से अवगत करा दें ताकि स्वयं संकल्प के लिए अधिक से अधिक समर्थन मिल सके। इस संकल्प के मसौदे को अक्तूबर-नवम्बर, 1997 में हुए यूनेस्को के महासम्मेलन के अधिवेशन में पूर्ण रूप से, बिना किसी संशोधन के ज्यों-का-त्यों स्वीकार कर लिया गया। परियोजना के लिए 10,000 अमरीकी डालर का अनुदान स्वीकार कर दिया गया।

प्रकाशन

रूस के सुप्रसिद्ध प्राच्यवादी एस.एफ. ओल्डनबर्ग के चुने हुए शोध-पत्रों के खंड का रूसी भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है और अब उसका सम्पादन किया जा रहा है। सम्मेलन के कार्य-विवरण से संबंधित "सोशल आइडेंटिटीज़ इन रिवोल्यूशनरी रशिया'' (क्रान्तिकारी रूस में सामाजिक विशिष्टताएँ) शीर्षक से प्रकाशन के लिए तैयार किया जा रहा है, इसमें वे सब शोध-पत्र संकलित किए गए हैं जो "19वीं तथा 20वीं शताब्दी के रूस में सामजिक विशिष्टताओं की पहचान तथा रूपान्तरण'' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए थे।

सम्मेलन

भारत तथा इटली के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 50वीं वर्ष गांठ के उपलक्ष्य में, 5 जनवरी, 1998 को "भारत-इटली संबंध : अगले पचास वर्ष'' विषय पर एक एक-दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह आयोजन राजीव गांधी समसामयिक अध्ययन संस्थान, राजीव गांधी फाउण्डेशन तथा इटली के राजदूतावास के सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से सम्पन्न किया गया। सम्मेलन की रिर्पोट इन दोनों संस्थाओं को भिजवा दी गई।

तूरीन विश्वविद्यालय के प्रो. एम. तोरी ने इटली की ओर से भाग लिया जबकि भारतीय पक्ष का प्रतिनिधित्व डा. कपिला वात्स्यायन, डॉ. आर. के. जैन (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) और प्रो. एस. चक्रवर्ती (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने किया।

दौरे

रूस के दो विख्यात विद्वानों ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अतिथि के रूप में भारत का दौरा किया और केन्द्र के अकादमिक कार्यक्रमों में भाग लिया। इनमे से एक थे डा. सरजल सेरे ब्रायनी जो मास्को विश्वविद्यालय में भारतीय दर्शन तथा साहित्य के अध्येता हैं। वे जुलाई-अगस्त, 1997 में भारत आए थे। और दूसरे थे शिक्षाविद जी.एम. बोनगार्ड-लेविन जो मास्को विश्वविद्यालय के भारत-विद्या तथा बौद्धविज्ञान अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष हैं। डॉ. लेविन जनवरी-फरवरी, 1998 में भारत की यात्रा पर आए थे और उन्होने 12 फरवरी, 1998 को इन्दिरा गांधी राष्ट्री कला केन्द्र में नए बौद्ध ग्रंथ विषय पर व्याख्यान दिया।

कलाकोश

अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रभाग

कलाकोश प्रभाग कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविधविद्यापरक संदर्भों में अनुसंधान करते हुए केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन स्कंध के रूप में कार्य करता है। यह शास्त्र को मौखिक के साथ, दृश्य को श्रव्य के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक सांस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

इन उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए इस प्रभाग ने (क) उन मूल अवधारणाओं का पता लगाया है, जो समग्र भारतीय चिन्तन की मूलाधार है और जो सभी विषयों/शास्त्रों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त हैं; (ख) मूल ग्रंथों की स्रोत सामग्री को जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी, अनुवाद के साथ मूल भाषा में प्रकाशित करने के लिए निर्धारित किया है; (ग) उन विद्वानों तथा विशेषज्ञों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है अपने ही समग्रवादी दृष्टिकोण के माध्यम से अन्तर-सांस्कृतिक पद्धति तथा विश्वविद्यापरक नीति से कलात्मक परम्पराओं को समझने में अग्रणी रहे हैं; और (घ) एक विशेष परियोजना के अन्तर्गत एक 21 खंडीय विश्वकोश के निर्माण का कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है।

प्रभाग का कार्य मुख्य रूप से चार बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

क.	कलातत्त्वकोश	:	आधारभूत अवधारणाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां।
ख.	कलामूलशास्त्र	:	उन आधारभूत ग्रंथों की शृंखला जो भारतीय कलात्मक परम्पराओं की बुनियाद है और मूल ग्रंथ जो किसी कला-विशेष से संबंधित हैं।
ग.	कलासमालोचन	:	समीक्षात्मक पाण्डित्य तथा अनुसंधान की ग्रंथमाला, और
घ.	कलाओं का विश्वकोष एवं इतिहास		(I) कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश और ; (II) भारत की मुद्रांकन कलाओं पर एक परियोजना।

कार्यक्रम क : कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं/संकल्पनाओं का कोश)

कलाकोश प्रभाग का पहला कार्यक्रम भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोश है। ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दों की सूची तैयार की गई है जो अनेक शास्त्रों के मूल ग्रंथों में व्यवहृत हुए हैं और जिनका बीज कलाओं में दृष्टिगोचर होता है। प्रत्येक अवधारणा का अनुसंधान अनेक शास्त्रों के मूल ग्रंथों के माध्यम से किया जाता है जिससे एक परिभाषिक शब्द को चुना जा सके जिसका एक मुख्य अर्थ और व्यापक स्वरूप हो, लेकिन कालान्तर में उसी शब्द के अनेक अर्थ विकसित हो गए हों। ऐसे संकलन, विश्लेषण तथा पुन: एकत्रीकरण के द्वारा भारतीय परम्परा की मूलभूत एकता और उसके अनिवार्य अन्योन्याश्रयशास्त्रपरक स्वरूप का पुर्ननिर्माण किया जा सकेगा। जैसा कि इससे पूर्व के प्रतिवेदन में बताया गया है, कलातत्त्वकोश का प्रथम खंड 1988 में प्रकाशित किया जा चुका है। इसमें आठ पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया है। इसका द्वितीय खंड जो दिक् तथा काल से संबंधित 16 पारिभाषिक शब्दों के बारे में है, मार्च, 1992 में प्रकाशित किया गया। इस कोश का तीसरा खंड वर्ष 1996-1997 में प्रकाशित किया गया था। इसमें मूल तत्त्वों अर्थात

महाभूतों के विषय में आठ लेख हैं जो 446 पृष्ठों में समाविष्ट हैं।

कलातत्त्वकोश के चतुर्थ खंड के विभिन्न शब्दों : "इन्द्रिय", "धातु", "गुण-दोष", "अधिभूत-अधिदैव-अध्यात्म", "स्थूल-सूक्ष्म-पर" और "सृष्टि-स्थिति-प्रलय" पर तकनीकी लेख सम्पादित किए जा चुके हैं। इसी श्रृंखला में अगला खंड निकालने के प्रयास भी भली-भांति प्रगति पर हैं। कलातत्त्वकोश के पंचम खंड के लेखों में से 10 लेख, जो "आकार-आकृति", "सकल-निष्कल", "रूप-प्रतिरूप", "प्रतिमा", "मूर्ति", "विग्रह", "अर्चा", "रेखा", "चिति-चैत्य-स्तूप", अंलकार, "प्रसाद", और "बंध-प्रबंध" के बारे में हैं, तैयार हो चुके हैं। इन निबंधों का सम्पादन कार्य प्रगति पर हैं।

इस वर्ष (1997-98 में), 1,146 कार्ड तैयार किए गए हैं। इनमें से 557 कार्ड पंचम खंड, 184 कार्ड षष्ठम खंड, 15 कार्ड सप्तम खंड के हैं और 390 कार्ड अन्य शब्दों से संबंधित है जिनका चयन विभिन्न ग्रंथों से किया गया है। कलातत्त्वकोश के प्रथम खंड के लेखों को, उनका संशोधित संस्करण तैयार करने के लिए कम्प्यूटर में भरा जा चुका है।

लेखों के सम्पादन के अलावा, कलातत्त्वकोश के षष्ठम खंड और सप्तम खंड के लिए संदर्भ इकटठे करने का कार्य भी आलोच्य अवधि में प्रारम्भ किया जा चुका है। षष्ठम खंड में 10 शब्द, अर्थात् "आभास", "छाया", "अभिनय", "बिम्ब-प्रतिबिम्ब", "सादृश्य-सारूप्य", "व्यक्त-अवयक्त", प्रतीक, लिंग, "वृत्ति-रीति-प्रतिबिम्ब" और "अनुकरण" और सप्तम खंड में 17 शब्द अर्थात "कलश", "कुण्ड", "गर्भ", "पदम", "मण्डल", "मुद्रा", "यंत्र", "यूप", "योनि", लता", वृक्ष", "वेदी-स्थण्डिल", "संस्थान", "स्थान और स्वास्तिक नन्दयावर्त" हैं।

कार्यक्रम ख: कलामूलशास्त्र

(कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा दीर्घकालिक कार्यक्रम है–वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य, नाट्य आदि तक की भारतीय कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों का पता लगाना और उनका समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों तथा अनुवाद के साथ उन्हें कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के रूप में प्रकाशित करना।

वर्ष 1988-89 में कुछ प्रकाशनों के विमोचन के साथ इस कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए इस प्रभाग ने कलामूलशास्त्र की ग्रंथमाला के अन्तर्गत मार्च, 1997 तक कुल मिलकार 21 ग्रंथ प्रकाशित किए थे।

वर्ष 1997-98 में, "कृष्णगीति" का प्रकाशन किया गया। कृष्णगीति केरल की "कृष्णाट्टम" नृत्य-नाटिका शैली पर उपलब्ध सत्रहवीं शताब्दी की गीतिनाट्य विषयक स्रोत कृति हैं। इसका सम्पादन और अनुवाद सी.आर. स्वामिनाथन और सुधा गोपालकृष्णन ने किया है। "नर्तन निर्णय", "तृतीय खंड", सम्पादक : आर.सत्यनारायण; "लाट्यायन-श्रौतसूत्र, "प्रथम तथा द्वितीय खंड", सम्पादक : एच.जी. रानाडे; "चतुर्दण्डी-प्रकाशिका", सम्पादक : आर. सत्यनारायण; "पुष्प-सूत्र" "प्रथम तथा द्वितीय खंड", सम्पादक : जी.एच. तारलेकर : "ईश्वर-संहिता", "प्रथम खंड", सम्पादक : लक्ष्मी ताताचार ; "संगीत-मकरन्द", सम्पादक : विजयलक्ष्मी; और "संगीतोपनिषत्सारोद्धार", सम्पादक : एलिन माइनर को मुद्रण की अंतिम अवस्था तक पहुंचाया गया। अन्य अनेक प्राचीन तथा मध्यकालीन ग्रंथों को तैयार करने का कार्य भिन्न-भिन्न अवस्थओं में है।

कार्यक्रम ग: कला समालोचन

(कलाओं के समालोचनात्मक मूल्यांकन पर आधुनिक आलेख/रचनायें)

कलाकोश प्रभाग के तीसरे कार्यक्रम कलासमालोचन शृंखला के अन्तर्गत मुख्य रूप से द्वितीय श्रेणी की सामग्री तथा समालोचनात्मक पाण्डित्य के विश्लेषण पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इस कार्यक्रम की एक विशेषता है - 19 वीं तथा 20 वीं शताब्दी के उन विद्वानों की दुर्लभ तथा पथप्रदर्शक कृतियों का, यथा संभव संशोधनों के साथ, पुनर्मुद्रण, जो भारतीय तथा एशियाई कलाओं के प्रति नए मार्ग की नींव डालने के लिए उत्तरदायी थे। इस दिशा में आगे अनुसंधान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कलासमालोचन शृंखला के अन्तर्गत ए.के. कुमारस्वामी, पॉल मूस, ओल्डनबर्ग तथा कुछ अन्य विद्वानों की समालोचनात्मक कृतियों के पुन: प्रकाशन का कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। कृतियों के चयन का आधार उनका अन्तर-सांस्कृतिक बोध तथा विद्याविद्यापरक दृष्टिकोण है।

इस योजना के अन्तर्गत कार्य 1988 में दो एक पुस्तकों के प्रकाशन के साथ प्रारंभ हुआ और मार्च, 1997 तक कुल मिलाकर 32 पुस्तकें प्रकाशित की गईं। इस वर्ष, प्रो. जी.डी. सॉन्थीमर की उत्कृष्ट रचनाओं का प्रथम खंड "किंग ऑफ हंटर्स, वारियर्स एंड शेपहर्ड्स-ऐसेज ऑन खंडोबा" शीर्षक से प्रकाशित किया गया।

अन्य अनेक प्रबन्ध ग्रंथ जैसे "बाराबुदुर", लेखक, पॉल मूस; "जैन टैम्पल्स ऑफ दिलवाड़ा एंड राणकपुर ; लेखक : सहदेव कुमार; "आइकॉनाग्राफी ऑफ दि बुद्धिस्ट स्कल्पचर ऑफ ओड़िसा" लेखक : थॉमस डॉनाल्डसन ; "सलेक्टेड राइटिंग्स ऑफ जी.डी. सॉन्थीमर, द्वितीय खंड; आनन्द के. कुमारा स्वामी कृत "हिन्दुइज्म एण्ड बुद्धिज्म", परसेप्शन ऑफ वेदाज" और उनकी कृतियों की ग्रंथसूची तैयारी तथा सम्पादन की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में है।

कार्यक्रम घ : कलाओं का विश्वकोष एवं इतिहास

भारतीय कलाओं के रूपकों का एक पंचखंडीय कोश

"बीज" विषयक प्रथम खंड तैयार हो चुका है और आशा है कि शीघ्र ही इसे प्रकाशन के लिए अंतिम रूप दिया जायगा। अन्य आधारभूत कला शब्दावली पर सामग्री इकट्ठी करने का कार्य भी प्रगति पर है।

भारत की मुद्रांकन कलाएं

कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रो. बी.एन. मुखर्जी द्वारा प्रणीत खण्ड सम्पादन की उन्नत अवस्था में है। लेखक द्वारा सामग्री सत्यापित तथा संशोधित की जा चुकी है।

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टैम्पल आर्किटैक्चर

"एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टैम्पल आर्किटैक्चर" खण्ड-2 भाग-3 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा अमरीकन इन्स्टिट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज़ द्वारा संयुक्त रूप से जनवरी, 1998 में प्रकाशित किया जा चुका है। एम. ए.ढाकी द्वारा सम्पादित यह भाग दक्षिण भारत के ऊपरी द्राविड देश से संबंधित है और इसमें ईस्वी सन् 973 से 1426 तक के परवर्ती काल का विवेचन है।

कार्यशालांए/संगोष्ठियां

(1) तंत्र-आगम

तंत्र-आगम विषय पर पांच-दिवसीय कार्यशाला इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी एकक द्वारा वाराणसी में 2 से 6 अप्रैल, 1997 तक आयोजित की गई। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और अन्य संस्थाओं के विख्यात विद्वानों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। केन्द्र के वाराणसी एकक के अनुसंधान अध्येताओं ने कार्यशाला में शोधपत्र प्रस्तुत किए और उसके आयोजन में सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

(2) ''संस्कृत में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग/विनियोग

''संस्कृत में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग'' विषय पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में 22 से 23 सितम्बर, 1997 को एक दो-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। देश की विभिन्न संस्थाओं से 30 प्रशिक्षुओं ने इस कार्यशाला में भाग लिया। इसके अलावा, संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन में कम्प्यूटर के अनुप्रयोग पर चर्चा के दौरान, कार्यशाला में भारत की पुराकालीन लिपियों पर पाठ पढ़ाए गए।

(3) ''पाण्डुलिपि विज्ञान और पुरालिपिशास्त्र

''पाण्डुलिपि विज्ञान और पुरालिपिशास्त्र'' विषय पर चौथी कार्यशाला कलकत्ता विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संयुक्त तत्त्वाधान में 27 मार्च, से 12 अप्रैल, 1997 तक आयोजित की गई। इसके बाद इसी विषय पर पांचवी कार्यशाला मैसूर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहयोग से 27 नवम्बर से 17 दिसम्बर, 1997 को मैसूर में आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य युवा पीढ़ी के संस्कृत अध्येताओं को अछूती पाण्डुलिपि सामग्री से समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने के लिए उसका उपयोग करने और उन पुरातनलिपियों का अर्थ निकालने की विधि सिखाना था, जिनमें प्राचीन तथा मध्यकालीन संस्कृत पाण्डुलिपियां उपलब्ध हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं के क्रमश: अट्ठाईस और सत्ताईस युवा अध्येताओं ने कलकत्ता तथा मैसूर की कार्यशालाओं में भाग लिया।

(4) वाक्यपदीय

अर्थविज्ञान तथा व्याकरण दर्शन विषयक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ भर्तृहरिकृत ''वाक्यपदीय'' पर एक सतत संगोष्ठी के कार्यक्रम के अन्तर्गत, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी में व्याख्यानों तथा परिचर्चाओं की एक श्रृंखला आयोजित की। डॉ. विद्यानिवास मिश्र, पं. राम प्रसाद त्रिपाठी, प्रो. के.डी. त्रिपाठी, डॉ. आद्याप्रसाद मिश्र, डॉ. नरेन्द्रनाथ पाण्डेय तथा डॉ. परमहंस मिश्र जैसे मूर्धन्य विद्वानों के साथ ऐसी ग्यारह बैठकें हो चुकी हैं।

(2) प्रपंञ्चसारतंत्र और परशुराम कल्पसूत्र

''प्रपंञ्चसारतंत्र और परशुराम कल्पसूत्र'' विषय पर एक पांच-दिवसीय कार्यशाला 26 से 30 मार्च, 1998 तक वाराणसी में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में अनेक विद्वानों ने भाग लिया।

इसके अतिरिक्त, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी एकक ने वाराणसी में विभिन्न विषयों पर बारह व्याख्यान आयोजित किए।

जनपद-सम्पदा

(क्षेत्रीय संस्कृतियों के संबंध में जीवन शैली अध्ययन तथा अनुसंधान करने वाला प्रभाग)

जनपद-सम्पदा प्रभाग कलाकोश प्रभाग के कार्यक्रमों के पूरक के रूप में कार्य करता है। इसका ध्यान शास्त्र के बजाय लघुस्तरीय संसक्त समाजों की समृद्ध और विविध रूप-रंगों में उपलब्ध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर केन्द्रित रहता है। जनपद सम्पदा प्रभाग के अनुसंधान कार्यकलापों का उद्देश्य इन कलाओं को उनके पारिभाषिक सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक संदर्भों में पुन: स्थापित करना है। दैनन्दिन जीवन से जुड़े लोकप्रिय भारतीय शब्द, जैसे "जन", "लोक", "देश", "लौकिक", "मौखिक", कार्यक्रम तैयार करने के मामले में महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों को विभाजन इस प्रकार है :-

(क) **मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह** : इन संग्रहों में मूल, अनुकृतियां तथा रिप्रोग्राफिक प्रतिलिपियां बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में एकत्र की जाती हैं।

(ख) **बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां** : इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत दो दीर्घाओं की स्थापना की जा रही है : (।) आदि दृश्य, जिसमें भारत तथा अन्य देशों की पूर्व-ऐतिहासिक शैल कला और (।।) आदि श्रव्य जिसमें संगीत एवं संगीतेतर ध्वनि की अभिव्यक्ति होगी। दूसरे शब्दों में दृष्टि तथा ध्वनि की ज्ञानेन्द्रियों आंख एवं कान से संबंधित आधारभूत संकल्पनाँए प्रस्तुत की जांएगी।

(ग) **जीवन शैली अध्ययन** : ये कार्यक्रम (1) लोक परम्परा और (2) क्षेत्र सम्पदा नामक दो भागों में बंटे हैं। लोक परम्परा के अन्तर्गत, भारत के भिन्न-भिन्न आर्थिक क्षेत्रों में मनुष्य की जीवन शैलियों का अध्ययन किया जाता है। क्षेत्र सम्पदा के अन्तर्गत विशेष स्थानों पर मंदिर परिसरों के ऐसे अध्ययन की कल्पना की गई है जिसमें उनके भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक और सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने वाली प्रक्रिया को भी ध्यान में रखा जाता है।

(घ) **बाल जगत** : इस अनुभाग के कार्यक्रमों का उद्देश्य बच्चों को जनजातीय तथा लोक संस्कृतियों की समृद्ध परम्परा तथा तत्संबंधी वास्तविकताओं से उनके घरेलू तथा स्कूली वातावरण के माध्यम से परिचित कराना है, जिनसे वे अब तक अछूते रहे हैं।

(उ.) **यूनेस्को चेयर** : सांस्कृतिक विकास विषय एक यूनेस्को चेयर 1994 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में स्थापित की गई थी। इस समय पीठ के अन्तर्गत भारत तथा श्री लंका में, विकास के एक साधन के रूप में सांस्कृतिक धरोहर के उपयोग का अध्ययन किया जा रहा है।

वर्ष 1997- 98 में जनपद सम्पदा विभाग के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में की गई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

कार्यक्रम क : मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

इस कार्यक्रम की स्थूल रूपरेखा को ध्यान में रखते हुए, वर्ष 1997 - 98 के दौरान निम्नलिखित सामग्रियां प्राप्त की गई :

(i) वाराणसी से पच्चीस मुखौटे, सराइकेला से एक सौ सैंतालीस, तमिलनाडू से एक, लद्दाख से पच्चीस, हिमाचल प्रदेश से चार और मध्य प्रदेश से अस्सी मुखौटे प्राप्त किए गए।

(ii) जहां तक विदेशों से प्राप्त होने वाले मुखौटों का संबंध है, श्रीलंका से पच्चीस, भूटान से उनत्तीस, स्विटजरलैंड से नौ, आइवरी कोस्ट से पन्द्रह, कोरिया से तीन, चीन से एक, इटली से दो, नेपाल से नौ, घाना से एक, जर्मनी से दो और थाईलैंड से पन्द्रह मुखौटे प्राप्त किए गए।

(iii) इक्कीस कांथा कसीदाकारियां प्राप्त की गई।

(iv) संथाल समुदाय की अट्ठाईस मानवजाति - वर्णनात्मक वस्तुए प्राप्त की गई जिनमें आदिश्रव्य दीर्घा के लिए प्राप्त आठ-वाद्य यंत्र शामिल हैं।

संगोष्ठी

भारत की स्वतंत्रता की 50वीं जयन्ती मनाने के लिए 24 से 28 फरवरी 1998 तक "मन, मानव और मुखौटा" विषय पर एक अंतर्राष्ट्री संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह अनेक प्राचीन तथा समसामयिक विचारों और मन-मानव-मुखौटों के पारस्परिक संबंधों के अन्वेषण का एक अन्तविर्षयक कार्यक्रम था। इटली, स्वीडन, स्विटजरलैंड, संयुक्त राज्य अमरीका, फ्रांस, ग्रीस, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, आइवरी कोस्ट, जिम्बाब्वे, जापान, इंडोनेशिया, श्रीलंका भूटान और भारत के विद्वानों ने "मन-मानव और अहम्/आत्मा, "प्राचीन विश्व में मुखौटा और उसकी सामाजिक भूमिका" विषयों पर विचार-विर्मश किया।

कार्यक्रम ख : बहु-माध्यमिक प्रस्तुतियां और गतिविधियां

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित प्रस्तुतियों तथा गतिविधियों का उद्देश्य हजारों वर्षों के दौरान भारतीय समाज द्वारा प्रस्तुत की गई कला सामग्री से जनता को अवगत कराना है। इस योजना का मुख्य कार्यक्रम (1) आदि दृश्य तथा (2) आदि श्रव्य नाम की दो दीर्घाओं का निर्माण करना है। शैलकला संबंधी अनुसंधान आदि दृश्य दीर्घा का महत्त्वपूर्ण अंग है। नाद की आद्य अनुभूति, संगीत वाद्यों का विवेचन आदि श्रव्य दीर्घा का प्रमुख कार्य है। वर्ष 1997-98 के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्पन्न की गईं।

आदि दृश्य

1. भारत-फ्रांस झिरी शैल कला परियोजना के अन्तर्गत प्राप्त की गई रिप्रोग्राफिक सामग्री का प्रलेखन सम्यक् रूप से सम्पन्न किया गया।

2. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैल कला स्लाइड संग्रह की प्रतिलिपियां तैयार करने का काम पूरा किया गया।

प्रकाशन

यशोधर मठपाल लिखित पुस्तक "रॉक आर्ट ऑफ केरल" फरवरी, 1998 में प्रकाशित की गई।

आदि श्रव्य

जनजातीय संगीत "हनीविंड-साउंडस फ्रॉम ए संथाल विलेज" की एक "सी.डी." डॉ. ऐंड्रस बॉसहार्ड और डॉ. पीटर पेनके की सहायता और जर्मनी के प्रो. म्यूजिका वाइवा फाउंडेशन के सहयोग से प्रकाशित की गई।

गतिविधियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में नागा कला कृतियों के मिलादा गांगुली संग्रह पर आधारित एक प्रदर्शनी - "सुंगकोंग-लॉगड्रम की पुकार" 7 से 26 अक्टूबर, 1997 तक आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी द्वारा नागा संस्कृति के उस रूप को प्रस्तुत किया गया जो तादात्म्य और प्रतिरूप के तात्विक मूल्य पर आधारित है और जिसे शक्ति तथा सामर्थ्य की भौतिक आधार शिला पर वर्षों में विकसित मिथकों तथा दन्तकथाओं से संबल मिला है।

तृतीय प्रो. निर्मलकुमार बोस मेमोरियल लेक्चर सुविख्यात विद्वान प्रो. एम.ए. ढाकी द्वारा 1 तथा 2 दिसम्बर, 1997 को दिया गया। व्याख्यान के विषय थे: "कलिंग की ओडीसी वास्तुकला के अध्ययन में एन.के. बोस का योगदान" और "वैरोचनी का लक्षणसमुच्चय तथा कलिंग की मध्यकालीन वास्तुकला"।

कार्यक्रम ग : जीवन शैली अध्ययन

(लोक परम्परा)

अब तक लोक परम्पराओं और उनसे संबंधित संस्कृतियों पर जो भी अनुसंधान/अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्रीय दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक, राजनीतिक-इतिहास या कला इतिहास की दृष्टि से। इन विषयों ने जीवन अनुभव के कुछ अंगों या कुछ आयामों का ही ध्यान रखा है, जीवन अनुभव की सम्पूर्णता का नहीं। जनपद सम्पदा प्रभाग एक नया दृष्टिकोण, एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और वर्तमान पद्धतियों की जाँच करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक मॉडल तैयार करने का प्रयास कर रहा है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन अलग-अलग आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमांकित या सुनिश्चित स्थान में बहु-आयामी प्रणाली मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, वार्षिक पंचांग तथा जीवन चक्र, विश्व दृष्टिकोण, ब्रह्मांड विज्ञान, खेती तथा अन्य आर्थिक कार्य, सामाजिक संरचना, ज्ञान व कौशल, पारंपरिक प्रौद्योगिकी और कला अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार के संबंध जोड़ना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक हैं और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर एक दूसरे के असर और जनजातीय, ग्रामीण तथा शहरी परम्पराओं, मौखिक या लिखित के पारस्परिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को सामने रखकर और बहुविषयक रीति अपनाते हुए कई प्रायोजित परियोजनायें प्रारंभ की गई हैं।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वान् देश की विभिन्न संस्थाओं से लिए गए बहुविषयक अध्ययन दलों के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर रहे हैं। उन लोगों के साथ एक सार्थक संवाद स्थापित किया गया है जो जातीय वनस्पति विज्ञान, जातीय इतिहास, हिमालय परिशीलन, मौखिक परम्पराओं के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, लोक परम्पराओं की प्रायोगिक परियोजनाओं के कार्यक्रम ने वर्ष के दौरान प्रगति की है, जिसका ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

सहयोगात्मक परियोजनाएँ (बाह्य परियोजनाएं)

निम्नलिखित परियोजनाएं जो अन्य संस्थाओं के सहयोग से वर्ष 1996-97 के दौरान प्रारम्भ की गई थी अब पूरी की जा चुकी हैं :-

(i) "संथालों का भोजन विषयक ज्ञान : बीरभूम के ग्रामीण तथा अर्द्धनगरी क्षेत्र में तुलनात्मक अध्ययन'', कु. इंद्राणी भट्टाचार्य द्वारा;

(ii) "पशुओं के विषय में संथाल बोध" प्रो. अजित कुमार आदित्य द्वारा;

(iii) "लोकतक ताल की उत्पत्ति'' डॉ. विजयलक्ष्मी द्वारा ;

(iv) "पाफन -मैतेई की दैत्य सर्प संस्कृति,'' (द्वितीय चरण), श्री निंगोमबाम मजिजाओ द्वारा ;

(v) "अरूणाचल की जनजातियों का शब्दकोश'', प्रो. तामो मिबांग द्वारा ;

(vi) "चावल और केला : जनजातीय कर्मकाण्ड संदर्भ में एक अध्ययन'', डॉ. एस.के. चक्रवर्ती द्वारा ;

(vii) "थांगता : मणिपुर की शौर्यकलाएं'', श्री देवब्रत सिंह द्वारा ;

(viii) "मैतेई परिवार -परम्परागत अवस्था से आधुनिकता तक रूपान्तरण की प्रक्रिया'', डॉ. निंगोमबाम बसन्त द्वारा ;

(ix) "शामनवाद और चंगाई : स्थिति के भारती-तिब्बतियों में एक अध्ययन,'' श्री शिरीष जैन द्वारा ;

(x) "तेय्यम की परम्परा : एक कला-ऐतिहासिक व्याख्या,'' डॉ. टी.वी. चन्द्रन द्वारा ;

वर्ष 1997 - 98 के दौरान प्रारम्भ की गई नई सहयोगात्मक परियोजनाओं में निम्नस्थ विषय शामिल है :-

(i) "गालो की वंश-परम्परागत खोज'', डॉ. टी.पांडु द्वारा ;

(ii) "चिलका ताल और उसके ब्रह्मांड विज्ञान का अध्ययन'', डॉ. एस.एम.पटनायक द्वारा ;

(iii) "गुरूवायुर मंदिर : केरल के सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनों तथा सांस्कृतिक तंत्र में उसकी भूमिका'', डॉ. पी.आर.जी. माथुर द्वारा;

(iv) "संथाल साहित्य की सटिप्पणीक ग्रंथसूची'' प्रो. एस.ए. महापात्र द्वारा;

(v) "कुमाऊं के कत्यूरी एवं चन्दकालीन वीर स्मारक'', कु. शीला देवी द्वारा ;

(vi) "मणिपुर के मिटटी के बरतन'', डॉ. सोबिता देवी ;

आन्तरिक परियोजनाएं

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के द्वारा हाथ में ली गई निम्नलिखित आन्तरिक परियोजनाओं का कार्य वर्ष 1997-98 में प्रगति पर रहा :

(i) "भरमौर, चम्बा (हिमाचल प्रदेश) के गद्दी लोगों में दिक् और काल की सांस्कृतिक श्रेणियां,'' डॉ. मौली कौशल द्वारा ;

(ii) "शरीर, गर्भाशय तथा बीज के बारे में संथालों का बोध,'' डॉ. नीता माथुर द्वारा ;

(iii) "राजस्थान में बाजरा उगाने वाले एक गांव की लोक परम्परा", डॉ. रामाकर पंत द्वारा;

(iv) "गढ़वाल हिमालय के स्थानीय लोक रंगमंच के प्रतिपादन के रूप में पाण्डव नृत्य शैली," कु. ऋचा नेगी द्वारा ;

(v) "मध्य भारत में समसामायिक भित्ति-चित्रों का अध्ययन'', डॉ. बी.एल. मल्ला द्वारा ।

संगोष्ठी

1. "संथाल विश्व-दृष्टि'', विषय पर 17 से 19 सितम्बर, 1997 तक एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें मानव-विज्ञानियों, कलाकारों, परिस्थित विज्ञानियों, भाषा विज्ञानियों, दर्शनशास्त्रियों तथा वैज्ञानिकों ने जिन विषयों पर विचार विमर्श किया वे थे : (1) ध्वनि तथा संगीत, (2) संस्कृति की भाषा, (3) शरीर तथा बीज और (4) प्रकृति तथा संस्कृति। देश-विदेश के लगभग इक्कीस विख्यात विद्वानों ने इस संगोष्ठी मे भाग लिया और उक्त विषयों पर चर्चा की।

2. राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के सहयोग से, राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में एक संगोष्ठी 22-23 नवम्बर, 1997 को आयोजित की गई, जिसका विषय था : "पुरावशेषों तथा कला वस्तुओं की प्रामाणिकता के प्रश्न''। इस संगोष्ठी में चर्चित कुछ विषय थे : प्रामाणिकता के विषय में कला-इतिहासकारों तथा सरंक्षण विशेषज्ञों के दृष्टिकोण : कला का वाणिज्यीकरण और अनधिकृत व्यापार। देश के अग्रणी कला-इतिहासकारों, पुरातत्वज्ञों, मानव विज्ञानियों, वैज्ञानिकों विशेषज्ञों तथा अन्य विद्वानों ने विचार-विमर्श में भाग लिया।

3. सुप्रसिद्ध विचारक प्रो. चार्ल्स टेलर द्वारा 13 दिसम्बर, 1997 को एक-दिवसीय संगोष्ठी में "संस्कृत-सांस्कृतिक संचार'' विषय पर एक शोधपत्र प्रस्तुत किया गया। प्रो. टेलर इस समय मैकगिली विश्वविद्यालय से संबद्ध हैं। इस संगोष्ठी में अनेक मानव विज्ञानी, संगीत विज्ञानी, कला-इतिहासकार, लोक साहित्यकार, राजनीति शास्त्री, इतिहासकार, और अन्य विशेषज्ञ उपस्थित हुए।

4. गांधी जी का 50वां बलिदान दिवस मनाने के लिए, गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति के सहयोग से, 19 जनवरी, 1998 को "गांधी और ग्रामोद्योग'' विषय पर एक संगोष्ठी-एवं-प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसमें गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति के सदस्यों सहित लगभग बीस विद्वानों ने भाग लिया। इस अवसर पर गांधी समिति द्वारा एक पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

5. ''परम्परा और व्यक्ति'' विषय पर एक संगोष्ठी 2-23 जनवरी, 1998 को आयोजित की गई। ये संगोष्ठी भारत की स्वतंत्रता की 50 वीं वर्षगांठ और श्रीमती इन्दिरा गाधी की स्मृति को समर्पित थी, जो अक्सर व्यक्ति की स्वयं अपने साथ शांति और विश्व के साथ सुख-चैन के विषय में चर्चा किया करती थी। इस संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में और उनकी अन्तर्क्रिया और पारस्परिक प्रभाव के आयामों में परम्परा की विभिन्न संकल्पनाओं को जांचा परखा। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और देश के विभिन्न भागों से पधारे ख्यातनामा विद्वानों ने इस संगोष्ठी मे भाग लिया और उनके रोचक शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

इस सन्दर्भ में प्रमुख प्रकाशन इस प्रकार हैं :-

(1)धरती और बीज (हिन्दी), लेखक : राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी ;

(2)परिब्राजक की डायरी, लेखक : निर्मल कुमार बोस (हिन्दी अनुवाद: मनोज कुमार मिश्र)

(3)विहंगम, खण्ड - 5

क्षेत्र-सम्पदा (प्रादेशिक धरोहर)

कतिपय प्रदेश/क्षेत्र समय के साथ-साथ सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते गए हैं और उनसे आकर्षित होकर संसार के सभी भागों से लोग वहां आते रहे हैं। वे आवागमन के मुख्य केन्द्र रहे हैं। वहां लाने और ले जाने वाली दोनों तरह की शक्तियां काम करती रही हैं और उन्होंने केन्द्र स्थान का काम किया है, स्थान की व्यवस्था करने के साथ-साथ उन्होंने गतिशीलता और पारस्परिक क्रिया व प्रभाग को प्रेरित किया है। अक्सर कोई मंदिर या मस्जिद यहां का भौतिक या भावात्मक आकर्षण रहा है। अब तक ऐसे केन्द्रों का अध्ययन, काल निर्णय, इतिहास, धर्म या अर्थशास्त्र जैसे किसी एक विषय तक ही सीमित या एकांगी रहा है, सर्वसम्पूर्ण नहीं, जिससे सृजनात्मक कलाओं के क्षेत्र में बहुविध कार्यकलाप संचालित होते हैं। इसलिए क्षेत्र सम्पदा प्रभाग के अन्तर्गत किसी स्थान विशेष या मंदिर और उसकी ''इकाइयों'' के अध्ययन की ही कल्पना नहीं की गई बल्कि एक केन्द्र विशेष के भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक या सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने की प्रक्रिया को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दो ऐसे केन्द्रों को अध्ययन के लिए चुना है जो इस प्रकार हैं उत्तर भारत में व्रज और दक्षिण भारत में बृहदीश्वर मंदिर।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्तर्गत अधोलिखित कार्य किए गये :

प्रकाशन

गौडीय वैष्णवमत से संबद्ध एक मध्यकालीन भक्ति ग्रंथ ''भक्तिरसामृत् सिन्धु'' (संस्कृत में) इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित किया गया है। इस रचना का संपादन एंव हिन्दी अनुवाद डॉ. प्रेमलता शर्मा ने किया है।

बृहदीश्वर मंदिर के कुम्भाभिषेकम् उत्सव का प्रलेखन कार्य पूरा किया जा चुका है।

बृहदीश्वर मंदिर के मूर्तिशिल्प पर प्रतिमावैज्ञानिक अध्ययन का कार्य पूरा किया जा चुका है और तत्संबंधी प्रबंध ग्रंथ की टाइप-प्रति उसके लेखक डॉ. आर.डी. नागस्वामी से प्राप्त हो चुकी है।

कार्यक्रम घ : बाल जगत

इस कार्यक्रम का उद्देश्य पुत्तलियों, पहेलियों तथा खेलों जैसे विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से बच्चों को परम्परागत कलाओं की समृद्ध धरोहर से परिचित कराना है, जो आमतौर पर स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत "गांधी जी का जीवन" विषय पर एक बाल थिएटर कार्यशाला गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति, नई दिल्ली के परिसर में 14 से 30 मार्च, 1998 तक आयोजित की गई।

कालाहस्ती की कलमकारी की कलाकाराओं द्वारा "पंचतंत्र" विषय पर तैयार की गई चित्रकारियों/रेखाचित्रों, पुस्तकों, फलकों को इक्ट्ठा करने के लिए कार्रवाई प्रारम्भ की जा चुकी हैं और संस्कृत के इस सुप्रसिद्ध प्राचीन कथा-संग्रह "पंचतंत्र" पर प्रस्तावित प्रदर्शनी के लिए अन्य संगत सामग्री भी तैयार की जा रही है। यह प्रदर्शनी सितम्बर, 1998 में होने वाली 26 वें विश्व बाल पुस्तक कांग्रेस के अवसर पर आयोजित की जाएगी।

आलोच्य अवधि में, विशेष रूप से बच्चों के लिए निम्नलिखित सचित्र हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित की गई :

(1) धरती : गांधी बापू के सिद्धान्त - स्वावलम्बन, ले.हकू. शाह;

(2) सोमी : गांधी बापू के सिद्धान्त - नई तालीम, ले. हकू. शाह।

कलादर्शन
(प्रचार-प्रसार एवं प्रस्तुतिकरण प्रभाग)

कलादर्शन प्रभाग विभिन्न संस्कृतियों, विषयों/शास्त्रों, समाज के भिन्न-भिन्न स्तरों एवं नानाविध कलाओं के बीच रचनात्मक संवाद को सुकर बनाने के लिए स्थान एवं मंच की सुविधा उपलब्ध कराता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इस प्रभाग ने अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुति की एक अद्भुत शैली विकसित की है जो विद्वानों, कलाकारों, विचारकों तथा जन-सामान्य के बीच संवाद की व्यवस्था करती है।

वर्ष 1997-98 के दौरान, पांच संगोष्ठियां और तीन प्रदर्शनियां आयोजित की गई जिनमें " प्रतिमुख (मुखौटा)'' विषय पर एक विशाल बहु-विषयक संकुल सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल था।

कार्यक्रम क : संग्रह

कलादर्शन प्रभाग इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से प्रदर्शनियां आयोजित करता है जो बहु-आयामी तथा बहु-विषयक होती हैं। इन प्रदर्शनियों के आयोजन से पहले व्यापक रूप से शैक्षिक/अकादमिक तथा अनुसंधान कार्य किया जाता है। प्रदर्शनी के बाद उससे संबंधित पाठ्यासामग्री तथा उसमे प्रदर्शित वस्तुंए प्रदर्शनी अभिलेखागार में रख दी जाती है, जहां से उनका उपयोग उन विद्वानों/अध्येताओं तथा संस्थाओं द्वारा संदर्भ तथा स्रोत सामग्रियों के रूप में किया जाता है जो इन अकादमिक जानकारियों का लाभ उठाना चाहते हैं। प्रदर्शनियों में प्रदर्शित वस्तुएं तथा सहायक सामग्रियां प्रदर्शनी अभिलेखागार से समय-समय पर उधार दी जाती हैं। वर्ष 1997-98 के दौरान आयोजित प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों और व्याख्यानों के माध्यम से संग्रही नानाविध सामग्रियों का वर्गीकरण करने, उन्हें अवाप्ति रजिस्टर में दर्ज करने और पुन: व्यवस्थित करने के प्रयत्न जारी रहे।

कार्यक्रम ख : संगोष्ठियां और प्रदर्शनियां

1. संगोष्ठियां

कलादर्शन प्रभाग ने (1) "मध्य-एशियाई पुरावेषों के प्रलेखन के विषय में व्यवहार्यता अध्ययन'' विषय पर 15 से 19 जुलाई, 1997 तक संगोष्ठी; (2) "संथाल विश्वदृष्टि'' विषय पर 17 से 19 सितम्बर, 1997 तक संगोष्ठी; (3) "संस्कृत में कम्प्यूटर का विनियोग'' विषय पर 22-23 सितम्बर, 1997 को कार्यशाला; (4) "व्यक्ति तथा परम्परा'' विषय पर 21-23 जनवरी, 1998 तक संगोष्ठी; और (5) "मन, मानव और प्रतिमुख'' विषय पर 24 से 28 फरवरी, 1998 तक संगोष्ठी के आयोजन में अन्य प्रभागों को भारतंत्रीय तथा अन्य सहायता प्रदान की।

प्रदर्शनियां

(i) ''दीवारें तथा फर्श : ग्राम भारत की जीवन्त परम्परा'' : ज्योतिभट्ट द्वारा फोटोग्राफ

बड़ोदरा के एक विख्यात फोटोग्राफर ज्योतिभट्ट के कुछ चुने हुए फोटोग्राफों की एक प्रदर्शनी "दीवारें और फर्श :

ग्राम भारत की जीवन्त परम्परा'' नाम से 12 से 25 सितम्बर, 1997 तक माटी घर (इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र परिसर) में राष्ट्रीय निष्पादक कला केन्द्र, मुंबई के सहयोग से आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन सुप्रसिद्ध कलाकार प्रो. शंखों चौधुरी द्वारा 12 सितम्बर, 1997 को किया गया।

ज्योति भट्ट ने रंगोली और ग्रामीण भारत में दीवारों तथा फर्श पर खींचे जाने वाले अन्य परम्परागत रेखाचित्रों की संपूर्ण धरोहर को अपने फोटोग्राफों में अभिलिखित किया है।

कला प्रेमियों तथा समालोचकों ने इस प्रदर्शनी का अच्छा स्वागत किया है। कुछ दर्शकों का टीका-टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :

''मैं इन श्वेत-श्याम फोटोग्राफों, विशेषत: फोटोग्राफ संख्या 14 और 43 से बहुत प्रभावित हुआ हूं।''

-- उवे लोवेंज
स्वतंत्र फोटोग्राफर, जर्मनी

''एक महान भारतीय परम्परा के अद्भुत फोटोग्राफ।''

-- हेलगा नेगमायर
कलास्तम्भ लेखक, आस्ट्रेलिया

''एक दृश्य आनन्द, अनेक प्रश्न उपस्थित किए''

-- रीता मुखर्जी
प्रस्तुतिकर्ता, आकाशवाणी

''एक जीवन्त परम्परा की रोचक प्रदर्शनी। धन्यवाद''

-- प्रो. ए.के. दास
राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान

''देश के भिन्न-भिन्न भागों में वास्तविक जीवन का अत्यन्त रचनात्मक प्रेक्षक।''

-- फ्रैंक क्रिस्टोफर
शिक्षाविद तथा सांसद (राज्य सभा)

सुंङ कांङ : लॉग ड्रम की पुकार - मिलादा गांगुली संग्रह

''सुंङकांङ : लॉग ड्रम की पुकार - मिलादा गांगुली संग्रह'' नामक प्रदर्शनी का उद्घाटन 6 अक्तूबर, 1997 को सांय 5 बजे इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के खुलेमञ्च में प्रो. बी.के. राय बर्मन द्वारा किया गया। श्रीमती मिलादा गांगुली की पुत्री डॉ. उर्मिला गांगुली इस अवसर पर उपस्थित थीं।

इस प्रदर्शनी का पांच उप-खंडों में विभाजित करके, नागा जीवन के समस्त सांस्कृतिक वातावरण को उजागर किया गया था। ये उपखंड थे : (1) मिथक तथा महापाषाण; (2) बिंब तथा तादात्म्य; (3) शांतिकाल में मोरंङ, (4) उर्वरता और कामोत्तेजक; और (5) लॉगड्रम की पुकार। ये सभी विषय एक समग्र संसक्त जीवन कथा के परस्पर संबंधित प्रसंगों को प्रदर्शित करते हैं। प्रदर्शनी में नागा संस्कृति को प्रतिबिंबित किया गया और जो बिंब तथा तादात्म्य के तात्त्विक मूल्य पर आधारित है और शक्ति तथा सामर्थ्य की भौतिक नींव पर विकसित मिथकों तथा दंतकथाओं द्वारा परिपुष्ट हैं।

इस प्रदर्शनी का अच्छा स्वागत हुआ : कुछ दर्शकों की टीका टिप्पिणयां नीचे दी जा रही हैं :

''प्रदर्शनी को देखकर मैं वस्तुत: मंत्रमुग्ध सी हो गयी। प्रदर्शनी की अत्यन्त विचारपूर्ण और व्यवसायिक व्यवस्था के लिए मैं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्राधिकारियों की अत्यन्त आभारी हूं। अनेको धन्यवाद।''

-- उर्मिला गांगुली
(मिलादा गांगुली की पुत्री)
शांति निकेतन

''उत्कृष्ट प्रदर्शन''

-- श्री जेड. लोथा
मुख्य कमांडेट, नागा पुलिस रेजिमेंट

''प्रामाणिक संग्रह की प्रामाणिक प्रस्तुति''

-- डॉ. वी.के. रायबर्मन
समालोचक

''यह प्रदर्शन महान नागाओं की यशस्वी सभ्यता के भव्य गौरव को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करती है। आयोजकों, वाह-वाह।''

-- गिरीश श्रीवास्तव
कला समालोचक (स्वतंत्र)

"यह नागाओं की कला तथा संस्कृति की एक उत्तम प्रदर्शनी है। प्रदर्शन उच्च कोटि का है, लेबल बड़ी सुन्दरता से लगाए गए हैं और प्रकाश व्यवस्था भी अति-सुन्दर है। पृष्ठभूमि संगीत ने तो प्रदर्शनी के आकर्षण में चार चांद लगा दिए हैं।

-- डॉ. आर.डी. चौधरी
निदेशक, संग्रहालय, असम

"नागा कला की अत्यन्त सुन्दर अभिव्यक्ति; उनके परम्परागत जीवन की जीवन्त झांकी प्रस्तुत करती है।"

-- कुमारी शैलजा
भूतपूर्व मंत्री, भारत सरकार

गीतगोविन्द : बहु-माध्यमिक अनुभव

परराष्ट्रीय सूचना-प्रणाली केन्द्र के महानिदेशक डॉ. एन. शेषगिरी ने "गीतगोविन्द : बहुमाध्यमिक अनुभव" नामक प्रदर्शनी का 10 दिसम्बर, 1997 का उद्घाटन किया और यह जनता के अवलोकनार्थ 11-12-1997 से 8-1-1998 तक खुली रही।

यह प्रदर्शनी संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि जयदेव द्वारा बारहवीं शताब्दी में रचित संस्कृत काव्य 'गीतगोविन्द' में प्रस्तुत राधा-कृष्ण की प्रणय-लीला प्रसंगों और संकल्पनात्मक कलारूपों के गहन अध्ययन तथा प्रलेखन का फल थी। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अकादमिक निदेशक डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा प्रकल्पित यह प्रदर्शनी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत आयोजित की गई थी। इसका उद्देश्य प्रणाली के सॉफ्टवेयर के तकनीकी विकास को कम्प्यूटर-अनुकूल कांपैक्ट डिशों (सी.डी.) पर अनुभव, सार्वजनिक प्रस्तुति के लिए प्रदर्शित करने के साथ-साथ मल्टीमीडिया तकनीक का उपयोग करते हुए गीतगोविन्द के मूलपाठ और उसकी अभिव्यक्तियों के माध्यम से भारतीय संगीत, नृत्य तथा कलाओं और उनके पारस्परिक संबंधों की आधारभूत संकल्पनाओं से दर्शकों को परिचित कराना था।

"गीतगोविन्द : बहुमाध्यमिक अनुभव" प्रदर्शनी को देखने के लिए बडी संख्या में लोग आए जिनमें उच्च प्रतिष्ठित महानुभाव विद्वान, छात्र, पत्रकार आदि सभी श्रेणियों के दर्शक शामिल थे। सबने प्रदर्शनी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उनमें से कुछ की टीका-टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :

"सम्पूर्ण प्रदर्शनी को देखकर अत्यन्त आश्चर्यजनक अनुभव हुआ। हमारी संस्कृति ने वस्तुत: उत्कृष्ट ऊंचाइयों को छू लिया था।"

कृष्णकान्त
उप-राष्ट्रपति, भारत

"गीतगोविन्द अपने आप में एक संसार है। प्रदर्शनी को देखने से मेरा अनुभव समृद्ध हुआ है। इसके लिए मैं अत्यन्त आभारी हूं।"

अशोक एच. देसाई
अटर्नीजनरल, भारत

"कपिला जी और उनके सहयोगियों की एक और शानदार उपलब्धि, बधाईयाँ।"

डॉ. कर्णसिंह

"मैं नही जानती कि मैंने कोई ऐसी प्रदर्शनी पहले कभी देखी है जो भारत की समृद्ध लोक परंपरा को एक ऐसे रूप में प्रस्तुत करती हो जो अत्यन्त सहज भाव से संदेश देती हो। शाबाश! इसकी परिकल्पना करने वालों को अनेक धन्यवाद!"

डॉ. (श्रीमती) ए.एस. देसाई
अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

"महान काव्यकृति गीतगोविन्द को आधुनिक इलेक्ट्रानिक साधनों से अभिव्यक्त करने का एक महान साहस"

डॉ. एम.आर. श्रीनिवासन
सदस्य, योजना आयोग

"सुनियोजित ढंक से प्रस्तुत, अत्यन्त प्रेरणाप्रद, इतनी शानदार कि इससे उत्पन्न भाव और अनुभूति का वर्णन नहीं किया जा सकता; भ्रमातीत"

किरीट जोशी
अध्यक्ष, इन्स्टिट्यूट ऑफ धरम हिन्दुजा
सोसाइटी फॉर इडिक रिसर्च, नई दिल्ली

"शिक्षा का कोई अन्त नही।"

बी.सी. सान्याल
चित्रकार

"सबके लिए आकर्षक- विशेष रूप से हम लोगों के लिए जो नृत्य, संगीत तथा रंगमंच से जुड़े हैं। इस अद्भुत मल्टीमीडिया संकल्पना के शुभारंभ के लिए कपिला जी को बार-बार धन्यवाद।

शोभा दीपक सिंह
निदेशक, श्रीराम कला तथा संस्कृति केन्द्र

"बंगाल से कुछ क्यों नहीं? केन्दुली जयदेव का जन्म स्थान है। तथापि एक अत्यन्त उत्कृष्ट अभिव्यक्ति और एक अभिनव प्रस्तुति - सुन्दर अभिकल्पना। कपिला जी को हार्दिक बधाईयां। उनकी उत्तम व्याख्या तथा अभिव्यक्ति के साथ हमें और भी ऐसी प्रस्तुतियों की प्रतीक्षा है।"

पी.के. भट्टाचार्य, कलकत्ता

"विलक्षण! कितना आश्चर्यजनक है कि प्रौद्योगिकी मुझे अपनी धरोहर के बारे में शिक्षा दे रही है। आशा है, यह सम्पूर्ण उपक्रम ही किसी न किसी रूप में एक स्थायी प्रदर्शनी बन जाएगा और इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अधिकाधिक भारतीय धरोहर को मल्टीमीडिया में प्रस्तुत करेगा।

विद्या विश्वनाथन
दर्शक

"अभिभूत कर देने वाला जबरदस्त अनुभव"

आर.सी. त्रिपाठी
महासचिव, राज्य सभा

"अत्यन्त संवेदनशील और अति सुन्दर-आनन्द विभोर कृष्ण, साक्षात्कार को सुनकर बहुत आनन्द आया-अत्यन्त हृदयस्पर्शी"

सुनीला बिन्द्र चोपड़ा

"एक सी.डी. रोम मैक फारमैट में चाहुँगा। एक श्रेष्ठ परियोजना; ऐसी दूसरी भी सम्पन्न कीजिए।"

शेरॉन लोवन डैनील
दर्शक

4. रूप-प्रतिरूप : मानव और मुखौटा

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अपने संग्रह से की गई प्रदर्शनी "रूप-प्रतिरूप : मानव और मुखौटा" का उद्घाटन 20 फरवरी 1998 को सांय 6.30 बजे केन्द्र के एम्फीथिएटर में जापान की प्रीफैक्चुरल सरकार के गवर्नर, श्री नाओयुकी ताकाहास्की द्वारा किया गया।

इस प्रदर्शनी में विश्व के नौ क्षेत्रों अर्थात् दक्षिण एशिया ; हिमालय पर्वतमाला तथा मध्य-एशिया; पूर्व-एशिया; दक्षिण-पूर्व एशिया; अफ्रीका; ओशनिया तथा आस्ट्रेलिया; यूरोप; मेसो-अमेरीका; कैरीबियन तथा दक्षिण अमरीका; और उत्तरी अमरीका तथा आर्कटिक से प्राप्त लगभग 380 मुखौटे प्रदर्शित किए गए। इन्हें विभिन्न अनुभागों, जैसे प्राकृतिक शक्तियां, मनोभाव, वर्णनात्मक, सामाजिक संसार, उत्सव और कर्मकाण्ड में वर्गीकृत किया गया। प्रदर्शनी के दौरान, समय-समय पर मुखौटों के विषय में छोटी फिल्में दिखाई गई। प्रदर्शनी की एक विशेषता यह भी थी कि मुखौटा परम्परा के अध्ययन में सहायता देने के लिए एक अंतरसक्रिय मल्टीमीडिया कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। इसकी परिकल्पना डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा और डिजाइन भारत के सुप्रसिद्ध पुत्तलिकलाकार श्री दादी पदुमजी द्वारा स्वीडन के पुत्तलिकलाकार माइकल मेश्के के परामर्श से की गई थी। कुछ दर्शकों की टीका-टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :

"सौंदर्यशास्त्र के मेटालॉजिकल आयामों में जीवन का प्रवाह।"

लोकेशचन्द्र, भारत-विद्याविद,
भूतपूर्व सांसद

"अद्भुत अनुभव; संग्रह तथा प्रदर्शन दोनों ही उत्तम कोटि के हैं। जिस किसी ने इस संपूर्ण कार्यक्रम की परिकल्पना की और जिन्होंने इसे निष्पादित किया उन सबको धन्यवाद।"

प्रेमलता शर्मा
उप-प्रधान, ए.एन.ए.

"एक सुन्दर प्रदर्शनी-बधाईयां और शुभकामनाएं।"

एम.आर. श्रीनिवासन
सदस्य, योजना आयोग

"अत्युत्तम"

एबरहर्ड पिचार, निदेशक,
संग्रहालय, रीटबर्ग, स्विटजरलैंड

"एक मनमोहक प्रदर्शनी जिसे संभालकर रखने की आवश्यकता है।"

एच.के. कौल,
पुस्तकालय, आई.आई.सी.

"मानव और मुखौटा प्रदर्शनी, खासतौर से इस चुनाव के समय, सचमुच उत्कृष्ट और अर्थपूर्ण है। गांधी जी की आकृति उत्तम है। इस सर्वोत्कृष्ट उपक्रम के लिए धन्यवाद।"

लीला सेठ
कानूनी सलाहकार

"विलक्षण संग्रह"

आर.वी.वी. अय्यर
सचिव, संस्कृति विभाग

"रूप-प्रतिरूप मुखौटों की इस प्रदर्शनी का एक शीर्षक मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को भली भांति अभिव्यक्त करता है। सचमुच चित्ताकर्षक और शिक्षाप्रद।"

सुधीर और हेमा देवारे
सचिव (ई.आर.) विदेश मंत्रालय

"इतनी मनमोहक कि मैं इसे फिर देखने आ रहा हूं।"

पी.वी. नरसिम्हा राव
भूतपूर्व प्रधानमंत्री, भारत

"इस प्रदर्शनी को देखकर मेरी ज्ञानवृद्धि हुई है और यह मेरे शोध कार्य में सहायक सिद्ध होगी। मुझे स्लाइडों तथा फोटोग्राफों की आवश्यकता है। धन्यवाद"

निरंजन गोस्वामी
निदेशक, भारतीय स्वांग थिएटर, कलकत्ता

"एक अत्यन्त असामान्य विषय को अत्यन्त प्रभावोत्पादक ढंग से कुशलता पूर्वक किया गया है। इसका प्रदर्शन, प्रकाश-व्यवस्था तथा पृष्ठभूमि सभी उत्तम हैं। इस सफल प्रदर्शनी के लिए मैं आयोजक को बधाई देता हूं।"

प्रो. फरीद खान
पुरातत्त्वविद, पाकिस्तान

"यह वस्तुत: आनन्दप्रद है और उपासना, कर्मकाण्ड तथा उत्सव एवं रंगशाला नृत्यों की एक पूर्ण प्रस्तुति है। इस अनुपम प्रदर्शनी को एक बार देख लेने से ही इसके साथ पूरा न्याय नहीं होगा।"

कृष्णदेव
पुरातत्त्वविद

कार्यक्रम ग : स्मारकीय व्याख्यान

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने ऐसे विख्यात विद्वानों के सम्मान में जिनका अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, एक स्मारकीय व्याख्यानमाला प्रारम्भ की। इस वर्ष, केन्द्र ने 1-2 दिसम्बर, 1997 को नई दिल्ली में प्रो. एन. के. बोस स्मारकीयव्याख्यान का आयोजन किया।

वाराणसी स्थित भारतीय अध्ययन के अमरीकी संस्थान के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर श्री एम.ए. ढाकी ने (1) "उड़ीसा की वास्तुकला के अध्ययन में एन.के.बोस का योगदान" और (2) "वैरोचन का लक्षणसमुच्चय और कलिंग की मध्यकालीन वास्तुकला" विषयों पर व्याख्यान दिए।

इस स्मारकीय व्याख्यान समारोह की अध्यक्षता भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के भूतपूर्व महानिदेशक श्री एम.एन. देशपाण्डे ने की। इस आयोजन में बड़ी संख्या मे वास्तुकलाविद, मानव विज्ञानी, अन्य विद्वान और बुद्धिजीवी उपस्थित हुए।

कार्यक्रम घ : अन्य कार्यक्रम

1 फिल्म प्रदर्शन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने कला अपने सांस्कृतिक अभिलेखागार में, अन्य वस्तुओं के साथ-साथ, महान सांस्कृतिक विभूतियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के प्रलेखन, उनके कार्यक्रमों तथा शिक्षाओं के विषय में अनेक फिल्में भी संगृहीत की हैं। इन संग्रहों में से निम्नलिखित फिल्मों को निम्नलिखित अवसरों पर दिखाने के लिए निकाला गया :

"कुर्गीज" नामक एक वृत्त-चित्र इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 13 जून, 1998 को जनसाधारण को दिखाया गया। इसी प्रकार एक अन्य वृत्तचित्र "सेराइकेला छाऊ" (अरविन्द सिन्हा द्वारा निर्देशित) बाल भवन में उन बच्चों को दिखाया गया जो 27 जून को एक संगोष्ठी शिविर में भाग ले रहे थे। एक छाया-पुत्तलिका कार्यक्रम "रूस्तम सोहराब" और "असम के गीत" (भूपेन हजारिका द्वारा) 28 जून, 1997 को प्रस्तुत किए गए।

नई दिल्ली नगर परिषद स्कूलों के बच्चों के लिए एक तीन-दिवसीय फिल्म उत्सव इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में 9.10 और 11 जुलाई 1997 को दो पारियों में आयोजित किया गया। भोपाल के लिटल बैले ट्रूप द्वारा

निर्मित और स्वर्गीय श्री शांतिबर्धन के नृत्यों से संजोई गई फिल्म "रामायण ए बैले" लगभग 450 स्कूली बच्चों को दिखलाई गई, जिन्होंने इसे बहुत पसन्द किया।

श्याम बैनेगल द्वारा निर्देशित एक अन्य फिल्म "कोर्णाक-चैरियट ऑफ सन" इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सम्मेलन कक्ष में दिखाई गई। नियोजन तथा वास्तुकला विद्यालय के छात्रों और पुरातत्व संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्येताओं ने कला-इतिहास, परम्परा तथा धर्म के संदर्भ में फिल्म की विषयवस्तु सहित संपूर्ण विषय पर चर्चा की।

पुस्तक विमोचन समारोह

कलादर्शन प्रभाग द्वारा मंगलवार, 15 अप्रैल, 1997 को आयोजित एक समारोह में, डॉ. कपिला वात्स्यायन ने डॉ. के. शिवराम कारन्त की सुप्रसिद्ध कृति "यक्षगान" के संशेधित संस्करण का विमोचन किया। यह ग्रंथ इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कलाकोश प्रभाग की कलासमालोचन ग्रंथमाला के अन्तर्गत, अभिनव पब्लिकेशन्स के सह-प्रकाशन में, प्रकाशित किया गया था। श्री एच.वाई शारदा प्रसाद ने इस विमोचन समारोह की अध्यक्षता की और डॉ. कपिला वात्स्यायन ने अकेले डॉ. कारन्त द्वारा यक्षगान के लिए किए गए योगदान और नए संस्करण में किए गए अपेक्षित परिवर्तनों/परिवर्द्धनों के लिए उनकी प्रशंसा की।

कार्यक्रम-प्रस्तुतियां

1. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति ने 4 दिसम्बर, 1997 को संयुक्त रूप से नई दिल्ली में इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में एक बाल नाटक का आयोजन किया। (स्वर्गीय) प्रो. जी. शंकर पिल्लै द्वारा मलयालम भाषा में लिखित यह नाटक "साबरमती दूरेयानु" (साबरमती दूर है) तिरूवनतपुरम (केरल) के रंगप्रभात बाल थिएटर द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से गांधी जी के सिद्धान्तों को सशक्तरूप में प्रस्तुत किया गया।

2. "मन, मानव और मुखौटा" विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर और 24 से 28 फरवरी, 1998 तक हुई प्रदर्शनी "रूप-प्रतिरूप:मन, मानव और मुखौटा" के अवसर पर एक अंतराष्ट्रीय मुखौटा उत्सव 12 से 28 फरवरी, 1998 तक, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, संगीत नाटक अकादमी और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से आयोजित किया गया। दूसरे आठ देशों से आई मुखौटा नृत्य मण्डलियों तथा भारत की पांच मण्डलियों ने इस उत्सव में भाग लिया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने स्वेडन की मैरियोनेटर्न द्वारा प्रस्तुत और प्रो. मा मेश्के द्वारा निर्देशित एक नाटक "फॉस्ट-ए कंटेम्पोरेरी कल्चरल हैरिटेज ऑफ यूरोप" की और रेवरेडं डोबूम तुलकू के मार्गदर्शन में एक तिब्बती नृत्य-मण्डली द्वारा प्रस्तुत तिब्बती छम नृत्य को प्रायोजित किया।

सार्वजनिक व्याख्यान

वर्ष 1997-98 में, कलादर्शन प्रभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनियों के अलावा, पैंतालीस से अधिक कार्यक्रम आम जनता के लिए आयोजित किए। इनमें सार्वजनिक व्याख्यान, फिल्म प्रदर्शन, सी.डी. रोम के निरूपण, पुस्तक विमोचन समारोह

और बाल-नाटक शामिल थे। इस वर्ष विश्व के कोने-कोने से आए विद्वानों द्वारा 36 सार्वजनिक व्याख्यान दिए गए। इनमें से विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं डॉ. विलियम सैक्स का "उत्तराखण्ड में दैव बंधुता की परम्परा'' विषय पर व्याख्यान; संयुक्त राज्य अमरीका के विख्यात कलाकार डॉ. पीटरकैन के रोचक भाषण का विषय था : "कला पूर्व/पश्चिम 2000 : परम्परागत और समकालीन संस्कृतियों में, चेतना में कलाओं की भूमिका के संबंध में कलाकार की दृष्टि ; और प्रो. अंबिका प्रसाद शुक्ल ने "नैषधीयचरित में कला और संस्कृति'' विषय पर व्याख्यान दिया।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के निदेशक डॉ. आर. एस. बिस्ट ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के स्टाफ सदस्यों के सम्मुख "धोलावीर की खुदाई से प्राप्त नवीनतम वस्तुएं'' विषय पर भाषण दिया। "बांगलादेश के विद्वान डॉ. इनामुल हक ने बंगलादेश के 'मृद्फलक' विषय पर अपनी सोदाहरण वार्ता प्रस्तुत की। डॉ. पौल श्रोडर ने "कुमारस्वामी के यक्षों के प्रकाश में : संयुक्त राज्य के घरेलू भूदृश्यों में पवित्र अन्तरिक्ष का प्रतीक'' विषय पर भाषण दिया। डॉ. रैमन पणिक्कर ने "इन्द्र की धूतर्ता: आधुनिकता की चुनौती भारत का मामला'' विषय पर एक आकर्षक वार्ता प्रस्तुत की। एक अन्य विदेशी महानुभाव जिन्होंने "भारत तथा चीन के बीच सांस्कृतिक संबंध विषय पर शिल्प परिषद की सदस्य हैं, ने "नक्शी कंथा की शब्दावली और सौंदर्यमीमांसा'' पर एक सुन्दर वार्ता प्रस्तुत की। "टौरेन्स थिनोमेनन: भगवान विश्वकर्मा के लिए सर्जनात्मक खोज'' विषय पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद के डॉ. एम.के. रैना द्वारा एक रोचक भाषण दिया गया जिसका अच्छा स्वागत हुआ। प्रो. एच.डी. छैया ने "ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों में जनसामान्य की सर्जनात्मकता: राजस्थान के एक विद्यालय का स्थिति अध्ययन'' विषय पर अपनी वार्ता में ग्रामीण भारत के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों में सहयोगात्मक प्रबंध के महत्त्व को उजागर किया। डॉ. रसना इमहास्लाई का भाषण भी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लिए बहुत आनन्ददायक रहा; उन्होंने "राधा-कृष्ण'' मिथक : एक जुंगीय मनोवैज्ञानिक व्याख्या'' विषय पर अपना व्याख्या'' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। मास्को विश्वविद्यालय के प्रो. जी.एम. बोनगार्ड ने "पूर्वी तुर्किस्तान से बौद्ध ग्रन्थ'' विषय पर एक रोचक भाषण किया। पंजाब विश्वविद्यालय की रीडर डॉ. अलका पाण्डे ने "पंजाब के लोक वाद्य: एक मानव जातिवर्णनात्मक अध्ययन'' विषय पर सुन्दर वार्ता प्रस्तुत की। ब्रिटिश संग्रहालय के डॉ. जॉर्ज मिचल द्वारा "सोहलवीं शताब्दी के भारत में कला और उसका संरक्षण'' विषय पर 30 तथा 31 मार्च, 1998 को विचारोत्तेजक भाषण दिए गए जिनका श्रोताओं ने बहुत स्वागत किया।

वर्ष 1997-98 के दौरान आयोजित व्याख्यानों की अनुसूची अनुबन्ध-9 पर दी गई है।

अन्तर्राष्ट्रीय संवाद

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों समेत भारत सरकार द्वारा अनुमोदिक अनेक अन्तरसांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा गतिविधियों के माध्यम से, भिन्न-भिन्न राष्ट्रों तथा संस्कृतियों में उपलब्ध कलाओं के बीच सक्रिय संवाद को पोषण एवं प्रोत्साहन देता है। इसके लिए वह भारत आने वाले विशेषज्ञों के अतिरिक्त विदेशी सांस्कृतिक तथा अकादमिक/शैक्षिक निकायों के साथ संपर्क बनाए रखता है। इस अंतर्राष्ट्रीय सेवा को केन्द्र के सदस्यों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संवाद को केन्द्र के सदस्यों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, अधिवेशनों, संगोष्ठियों आदि में भाग लिए जाने से और भी बढ़ावा मिलता है। सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, प्रकाशन ग्रंथसूचियां, फोटोग्राफ और स्लाइडें प्राप्त करने और विद्वानों के आदान-प्रदान जैसे समान हित के कार्यक्रम बनाने के उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करत है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

आलोच्य वर्ष में, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा निम्नलिखित देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अन्तर्गत विषय शामिल किए गए :

1. भारत रोमानिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम - 1997-99
2. भारत-श्रीलंका सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम - 1995-98
3. भारत-रूस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम - 1998-2000
4. भारत-चेकोस्लोवाकिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-99
5. भारत-दक्षिण अफ्रीका सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-99
6. भारत-ब्राजील सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-99
7. भारत-मिस्र सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-2000
8. भारत-बांगलादेश सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-99

निम्नलिखित देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में शामिल करने के लिए विषय प्रस्तावित किए गए हैं :

1. भारत-मेक्सिको सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1999-2000
2. भारत-नीदरलैंड सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000
3. भारत-पेरू सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1999-2000

4. भारत-जर्मनी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

5. भारत उज्बेकिस्तान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

6. भारत-इंडोनेशिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

7. भारत-चीन सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

8. भारत-इटली सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-2000

9. भारत-ईरान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

10. भारत- यूनान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

11. भारत- स्लोवेनिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

12. भारत-क्यूबा सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

13. भारत-किर्गिजस्तान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1995-1997

14. भारत-स्लोवाकिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-1999

15. भारत-बोट्सवाना सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-1999

16. भारत-साइप्रस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-99

17. भारत-मैडागास्कर सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1997-99

18. भारत-सिसिली सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, 1998-2000

बहुमाध्यमीय प्रयोगशाला/गीतगोविन्द परियोजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने संयुक्त राज्य अमरीका के "जीरोक्स पालो आल्टो अनुसंधान केन्द्र" (जीरोक्स पार्क) के सहयोग से एक बहु-माध्यमिक प्रयोगशाला (मल्टीमीडिया लैब) स्थापित की है और "गीतगोविन्द" पर एक परियोजना प्रारंभ की है। गीतगोविन्द 12वीं शताब्दी में जयदेव द्वारा रचित एक वैष्णव काव्य है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की अकादमिक निदेशक डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन के मार्गदर्शन ने केन्द्र के वरिष्ठ अध्येता और कलाकार और जीरोक्स पार्क के मल्टीमीडिया डिजाइन के विशेषज्ञों ने जयदेव की इस ऐतिहासिक कृति के कथा-प्रसंगों पर आधारित एक अत्यन्त समृद्ध एवं अनुपम सौंदर्याभिव्यक्ति के प्रसारण के लिए बहु-माध्यमिक अनुभव विकसित किया है। अब यह परियोजना सफलतापूर्वक पूरी हो चुकी है और 10 दिसम्बर, 1997 को "गीतगोविन्द मल्टीमीडिया अनुभव" शीर्षक प्रदर्शनी का उद्घाटन 10.12.1997 को राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र के महानिदेशक डॉ. एन.शेषगिरि द्वारा किया गया था और यह 11.12.1997 से 8.1.1998 तक जनता के लिए खुली रही थी।

इस काव्य का शब्द रूपक एक दृश्य, श्रव्य तथा गत्यात्मक अनुभव अभिव्यक्त कराता है। गीतागोविन्द के काव्य-प्रसंग भारत की कलात्मक परम्परा में एक बहु-माध्यमिक रचना के लिए तत्वतः उपयुक्त हैं। कृष्ण और राधा की प्रणय लीला, उनके संयोग, वियोग और पुनः संयोग पर आधारित यह काव्य एक ऐसा ब्रहमांडीय रूपक प्रस्तुत करता है जो बृहत तथा लघु स्तरों पर अभिव्यक्त होता है। काव्य का बहु-स्तरीय ऐन्द्रिय तथा आध्यात्मिक, लौकिक तथा अलौकिक, मानवीय तथा दिव्य और लोकातीत स्तरों पर एक-साथ आगे बढ़ता है। काव्य के शब्द तथा भाव ने चित्रकला संगीत तथा नृत्य की परम्पराओं अनेक प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्तियों के लिए प्रेरणा प्रदान की है। उसका जीवन्त आस्तित्व समसामयिक शास्त्रीय संगीत तथा नृत्य के रोम-रोम में व्याप्त है।

"गीतगोविन्द मल्टीमीडिया अनुभव" प्रदर्शनी को देखने के लिए विशिष्ट महानुभाव, विद्वान लोग, छात्र, पत्रकार आदि सभी श्रेणियों के लोग आए और उन्होंने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

गीतगोविन्द मल्टीमीडिया परियोजना के तकनीकी सहयोगियों अर्थात जीरोक्स कारपोरेशन ने अब विकास/प्रस्तुति के लिए ही नहीं बल्कि सॉफ्टवेयर प्रोग्रामरों के लिए सहमत वेतन सहायता संबंधी अपनी वचनबद्धतओं को पूरा कर दिया है। कुल 37,5000 अमरीकी डालर की सहमत राशि की अंतिम किस्त के 7500 अमरीकी डालर अब प्राप्त हो चुके हैं।

विदशों से अनुदान

फोर्ड फाउंडेशन

फोर्ड फाउंडेशन से प्राप्त 2,50,000 अमरीकी डालर के अनुदान में से विडियो प्रोग्राम के लिए एक सम्पादन स्टूडियो स्थापित करके चालू कर दिया गया है। इस वर्ष इससे माइक्रोफिशें/माइक्रोफिल्में, मुखौटे और शैलकला की प्रतिकृतियां प्राप्त की गई हैं, इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्येताओं/स्टाफ सदस्यों को प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजा गया और बाहरी विद्वानों/परामर्शदाताओं को आमंत्रित किया गया। 31 दिसम्बर, 1997 तक 2,19,000 अमरीकी डालर की राशि खर्च की जा चुकी है।

जापान फाउंडेशन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने राजकोषीय वर्ष 1998-99 में कार्यक्रम के अन्तर्गत "संस्कृति और प्रौद्योगिकी" विषय पर एक सम्मेलन बुलाने, प्रदर्शनी सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत टोकियो में "गीतगोविन्द मल्टीमीडिया अनुभव" प्रदर्शनी का आयोजन करने और जापान फाउंडेशन के पुस्तकालय सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत 7,61,903 येन के मूल्य की 79 शीर्षकों की पुस्तकें मंगाने के लिए जापान फांउंडेशन को एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है।

यूनेस्को

वर्ष 1996-97 के सहभागिता कार्यक्रम के अन्तर्गत, यूनेस्को ने निम्नलिखित प्रस्तावों के लिए धनराशि देना स्वीकार कर लिया है:-

1. मध्य-एशियाई पुरावेशषों के प्रलेखन पर व्यवहार्यता अध्ययन सम्मेलन; और

2. मन, मानव और मुखौटा विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी।

यूनेस्को ने मध्य-एशियाई पुरावशेषों के प्रलेखन पर व्यवहार्यता अध्ययन के लिए 26,000 अमरीकी डालर का अनुदान दिया था। यूनेस्को ने इस सम्मेलन के लिए 2,000 अमरीकी डालर की एक और राशि भी प्रदान की थी, उसका भी पूरी तरह उपयोग हो चुका है।

नई दिल्ली में 15 से 18 जुलाई, 1997 को मध्य-एशियाई पुरावशेष, विषय पर हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा पारित संकल्प को महासम्मेलन में भारत की ओर से संकल्प के प्रारूप के तौर पर प्रस्तुत किया गया था, जिसे स्वीकार कर लिया गया और उस संबंध में 10,000 अमरीकी डालर की राशि अनुमोदित कर दी गई। इस संबंध में यूनेस्को से औपचारिक सूचना की प्रतीक्षा है।

सहभागिता कार्यक्रम के अन्तर्गत, यूनेस्को से 24 से 28 फरवरी, 1998 तक "मन, मानव और मुखौटा" विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए अपने अंशदान के रूप में 2,000 अमरीकी डालर (71,000 रूपये) की राशि प्रदान की है।

"विकास के लिए वैकल्पिक प्रतिमान" विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने के उद्देश्य से वर्ष 1998-99 के दो वर्ष की अवधि के लिए यूनेस्को के सहभागिता कार्यक्रम के अन्तर्गत 50,000 अमरीकी डालर की वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए एक प्रस्ताव यूनेस्को के साथ सहयोग के लिए गठित भारतीय राष्ट्रीय आयोग को दिसम्बर, 1997 में प्रस्तुत किया गया।

यूनेस्को प्रपीठ

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में सांस्कृतिक विकास के लिए स्थापित यूनेस्को प्रपीठ को "विकास के लिए उपकरण के रूप में सांस्कृतिक धरोहर" के उपयोग के लिए भारत तथा श्रीलंका में स्थापित कार्यक्रम सम्पन्न करने के लिए यूनेस्को, नई दिल्ली से 15,000 अमरीकी डालर की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, वाराणसी के कारीगरों

के विषय में एक क्षेत्र-आधारित अध्ययन सम्पन्न किया गया। इसी प्रकार, दिसम्बर, 1997 में श्रीलंका में "विकास के कुशल आदर्श" विषय पर एक पांच-दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस परियोजना की अंतरिम रिपोर्ट और सिफारिशें 4 फरवरी, 1998 को यूनेस्को, नई दिल्ली के पास भेज दी गई थी। हमारे आन्तरिक स्टाफ-सदस्यों द्वारा वाराणसी के कारीगरों के पास एक वीडियो प्रलेखन भी तैयार किया गया।

"कल्चरल डाइमेंशन ऑफ एजूकेशन" शीर्षक से एक पुस्तक फरवरी, 1998 में प्रकाशित की गई, जो 1995 में शिक्षा तथा परिस्थिति विज्ञान के सांस्कृतिक आयाम विषय पर यूनेस्को-प्रायोजित सम्मेलन के संबंध में इस प्रपीठ (चेयर) की गतिविधियों की देन है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.)

सांस्कृतिक संसाधनों के परस्पर सक्रिय बहु-माध्यमिक प्रलेखन की सुविधा को सुदृढ बनाना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र यह परियोजना संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से कार्यान्वित करता रहा है। इस परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के व्यापक एवं समेकित अध्ययन, प्रलेखन तथा प्रसार के लिए राष्ट्रीय क्षमता विकसित करना है। इस प्रकार निर्मित क्षमता से यह आशा भी की जाएगी कि वह एक ऐसी धरोहर को, जो छिन्न-भिन्न हो चुकी है अथवा लुप्त होने के कगार पर है, उसके असली रूप में पुन: निर्मित करने में सहायता प्रदान करेगी।

इस हेतु 39.5 करोड़ रूपए मूल्य के हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर प्राप्त किए जा चुके हैं। और "सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला" नाम की एक नेटवर्क से जुड़े मल्टीमीडिया कम्प्यूटर प्रयोगशाला स्थापित कर दी गई है। इस प्रयोगशाला में 20 से अधिक राष्ट्रीय परियोजना कार्मिक, जिनमें कम्प्यूटर व्यावसायिक, ग्राफिक डिजाईनर, कलाकार आदि शामिल हैं, कार्यरत हैं। कुछ अतिरिक्त कार्मिकों को परियोजना कार्यान्वयन अवधि के लिए भरती किया जा रहा है ताकि पदत्याग आदि के कारण कोई रिक्ति पैदा हो जाए तो उसे तुरन्त भरा जा सके।

सी.डी. रोम के माध्यम से मल्टीमीडिया प्रस्तुतिया तैयार करने के लिए ग्यारह प्रायोगिक परियोजनाए हाथ में ली गई हैं। वे हैं : (1) गीतगोविन्द, (2) बृहदीश्वर मंदिर (3) अग्निचयन, (4) शैलकला, (5) विश्वरूप (6) सुश्री एलिजाबेथ ब्रूनर तथा (स्व.) सुश्री सैस ब्रूनर की चित्रकारियां (7) कर्नाटक के मंदिर (8) मौखिक महाकाव्य और देवनारायण की कथा (9) पुस्तकालय धरोहर और (10) देवदासी मुरई (जो कि बृहदीश्वर मंदिर के कर्मकाण्डीय संघटक के लिए एक आदर्श होगी। यह परियोजना समाप्त और प्रकाशित हो चुकी है और इसकी प्रतियां बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। चार अन्य परियोजनाओं पर सी.डी. रोम के प्रथम संस्करण समाप्त होने वाले हैं।

इस परियोजना पर सोलह अंतराष्ट्रीय विशेषज्ञों ने अपना परामर्श कार्य संभाला है। कुछ परामर्शदाताओं ने अपनी परामर्श अवधि में परियोजना कार्मिकों तथा अध्येताओं के लिए कार्यशालाएं भी चलाई हैं। वे है :

1. श्री कृष्ण पेंडियाल, सहायक निदेशक, इन्फोरमीडिया परियोजना, कारनेजी मेलॉन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमरीका ;

2. प्रो. फ्रित्जस्टाल, दर्शन तथा दक्षिण एशियाई अध्ययन के प्रोफेसर, दक्षिण तथा दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग,

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमरीका;

3. डॉ. ए.के. जैन, विश्वविद्यालय के जाने-माने प्रोफेसर, इंजीनियरिंग तथा कम्प्यूटर विज्ञान महाविद्यालय, मिशिगन राज्य विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमरीका;

4. प्रो. टी.एस. मैक्सवैल, प्रोफेसर तथा निदेशक, प्राच्य कला इतिहास विभाग, बोन विश्वविद्यालय, जर्मनी;

5. प्रो. मिचियो यानो, संस्कृत तथा विज्ञान इतिहास विभाग के प्रोफेसर, अंतर्राष्ट्रीय भाषा विज्ञान संस्थान, कियोतो सांगियो विश्वविद्यालय, जापान;

6. श्री पिएरपिशर्ड, अध्यक्ष, पुरातत्व केन्द्र, इकॉले फ्रैंकाइज दि एक्सट्रीम आरिंएट, पांडेचेरी;

7. प्रो. अलिस्टेयर गोर्डन स्टक्लिफ, निदेशक, सिटी, विश्वविद्यालय; लंदन

8. प्रो. गारी मार्शियोनिनी, पुस्तकालय तथा सूचना सेवा महाविद्यालय, मैरी लैंड विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमरीका;

9. डॉ. चिन-चिह-चेन, पुस्तकालय तथा सूचना विज्ञान स्नातक विद्यालय, सिम्मन्स कालेज, संयुक्त राज्य अमरीका;

10. प्रो. डेविड पिंग्री, प्रो. गौरव ग्रंथ तथा गणित इतिहास, ब्राऊन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमरीका;

11. डॉ. आदित्य मलिक, शोध अध्येता, भारत-विद्या विभाग दक्षिण एशिया संस्थान, हीडरबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी;

12. प्रो. डोमिनिक वुजास्तिक, चिकित्सा शास्त्रीय इतिहास का वेलकम संस्थान, लन्दन;

13. श्री पॉल चार्ल्स श्रोडर, मैन विश्वविद्यालय, अंतरिक्षीय सूचना विज्ञान तथा इंजीनियरिंग विभाग, आरेनो, मैन;

14. डा. सस्किया करसनबूम, भाषाई मानव विज्ञान के प्रोफेसर, संस्कृति मान विज्ञान विभाग, ऐम्स्टर्डम विश्वविद्यालय, हालैंड;

15. डा. आइरीन विंटर, प्रो. तथा पीठाध्यक्ष, ललित कला विभाग, हारवर्ड विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमरीका।

निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं को वर्ष 1998-99 के शेष भागों में यू.एन.डी.पी. परियोजना पर परामर्श कार्य सौंपने के लिए चुना गया है :

1. डॉ. शिंगेहारू सुगिता, राष्ट्रीय मानवजाति विज्ञान संग्रहालय, जापान;

2. डॉ. माइकेल लॉरब्लांशे, निदेशक अनुसंधान, ए.यू.सी.एन. आर.एस., रॉक डेस मॉसिज, 46200 सैंट सोज़ी, फ्रांस;

वर्ष 1998-99 में परामर्श कार्य सौंपने के लिए अन्य अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं का पता लगया जा रहा है।

राष्ट्रीय स्तर के निम्नलिखित आठ विशेषज्ञों को परियोजना के कार्य पर राष्ट्रीय व्यावसायिक परियोजना कार्मिक (एन.पी.पी.पी.) के रूप में नियुक्त किया गया है :

1. प्रो. नवीन प्रकाश, डीन तथा अध्यक्ष कम्प्यूटर इंजीनियरिंग प्रभाग, दिल्ली प्रौद्यौगिकी संस्थान, दिल्ली;

2. डॉ. मुकुल के. सिन्हा, प्रबंध निदेशक, एक्सपर्ट सॉफ्टवेयर कंसल्टैंट्स लि. नई दिल्ली;

3. प्रो. राजीव लोचन, चित्रकला विभाग, कला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली;

4. डॉ. सुगत मित्र, वरिष्ठ उप-प्रधान, एन.आई.आई.टी., नई दिल्ली;

5. डॉ. अरूण के. पुजारी, कृत्रिम बुद्धि प्रयोगशाला, एम.आई.सी.एस. स्कूल, हैदराबाद विश्वविद्यालय;

6. डॉ. एस.पी. मुदुर, सह-निदेशक तथा अध्यक्ष, राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी केन्द्र, मुम्बई;

7. डॉ. आर. नागस्वामी, बृहदीश्वर मंदिर विशेषज्ञ, चेन्नई;

8. डॉ. आर.के. जोशी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई;

इनमें से प्रो. नवीन प्रकाश, डॉ. मुकुल के. सिंहा, प्रो. राजीव लोचन, डॉ. सुगत मिश्र, डॉ. अरूण के पुजारी और डॉ. एस.पी. मुदुर ने 1996 में अपना परामर्श कार्य संभाला था। डॉ. मुकुल के. सिंहा, प्रो. राजीव लोचन, डॉ. सुगत मिश्र और डॉ. एस.पी. मुदुर ने 1997 में भी अपना परामर्श कार्य जारी रखा। 1997 में डॉ. आर.नागस्वामी ने भी परामर्शदाता के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। परियोजना कार्य के लिए इन परामर्श दाताओं की सेवाओं की आवश्यकता के आधार पर इन्हें वर्ष 1998-99 के दौरान भी परियोजना पर कार्यरत रखा जाएगा।

"सांस्कृतिक धरोहर में ऑडियो-विजुअल और डिजिटल मीडिया सामग्रियों का प्रबंध" विषय पर सितम्बर, 1996 में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन लिया गया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने फरवरी 1996 में इलेक्ट्रोनिक्स और दूरसंचार इंजीनियरों की संस्था के साथ मिलकर मल्टीमीडिया सूचना प्रणाली विषय पर एक अंतराष्ट्रीय सम्मेलन का सह-प्रयोजन किया और उसमें भाग लिया। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने साइबरएक्सपो तथा आई.ई.टी.ई. द्वारा 23-25 जनवरी, 1998 को दिल्ली में आयोजित "मल्टीमीडिया 1998 नामक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी जोर शोर से भाग लिया।

मल्टीमीडिया विनियोग के विषय में तीन विशिष्ट लक्ष्यबद्ध समूहों, अथार्त पुस्तकालय विज्ञान कार्मिक, संस्कृत अध्येता और नृत्य अध्ययन के व्यससायिकों के लिए क्रमश: अप्रैल, जुलाई और अक्तूबर, 1997 में तीन कार्यशालांए आयोजित कीं और लगभग 85 व्यावसायिकों को उनके अपने-अपने क्षेत्र में मल्टीमीडिया विषय-वस्तु तथा विनियोगों के प्रयोग के विषय में प्रशिक्षित किया।

सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला के अधिकारियों को, देश-विदेश में, अध्येतावृत्ति कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, परिचर्चाओं और आन्तरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से समुचित प्रशिक्षण दिया जाता है और मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकी से अवगत कराया जाता है।

इस परियोजना के लिए यू.एन.डी.पी. का अंशदान 22,25,260 अमरीकी डालर तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का योगदान 7,95,50,000 रूपये हैं। इनमे से यू.एन.डी.पी. के अंशदान में से 15,19,041 अमरीकी डालर और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अंशदान में से 3,38,60,257 रूपये की राशियां 28 फरवरी, 1998 तक उपयोग में लाई जा चुकी है।

सूत्रधार

(प्रशासन एवं वित्त प्रभाग)

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का सूत्रधार प्रभाग जो इसका प्रशासनिक स्कंध है, केन्द्र के अन्य सभी प्रभागों तथा एककों को प्रशासनिक, प्रबंधकीय तथा संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएं प्रदान करता रहा और संस्था के लेखों के अनुरक्षण तथा प्रबन्ध के साथ-साथ केन्द्र की समस्त गतिविधियों के समन्वय, प्रशासन तथा नीति-निर्धारण के लिए भी एक प्रमुख ऐजेंसी के रूप में कार्य करता रहा।

क. कार्मिक

वर्ष 1997 - 98 के दौरान, केन्द्र में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करने के लिए कुछ नए अधिकारी नियुक्त किए गए। 31 मार्च, 1998 की स्थिति के अनुसार केन्द्र के महत्त्वपूर्ण अधिकारियों, परामर्शदाताओं, शोध अध्येताओं आदि की सूची अनुबन्ध 3, 4, और 5 पर दी गई है।

ख. आपूर्ति एवं सेवाएं

आपूर्ति एवं सेवाएं एकक केन्द्र के सभी अकादमिक प्रभागों को सम्भारतंत्रीय तथा संबंधित सहायता प्रदान करता रहा। इस एकक ने वर्ष के दौरान अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों की व्यवस्था में भी सहायता दी। इसने सभी सम्बद्ध मंत्रालयों/विभागों और अन्य संगठनों के साथ समन्वय बनाए रखा ताकि केन्द्र का कार्य सुचारु रूप से कुशलतापूर्वक चलता रहे।

ग. शाखा कार्यालय

वाराणसी

वाराणसी का शाखा कार्यालय, जो 1988 में स्थापित किया गया था, कलाकोश प्रभाग के अन्तर्गत एक अवैतनिक समन्वायक की देखरेख में अपने नियमित कर्मचारियों के माध्यम से काम करता रहा। और उसने विशेषज्ञों की सहायता से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की परियोजनाओं के लिए शोध संबंधी गतिविधियों तथा डेटा संग्रह का काम किया।

इम्फाल

इम्फाल कार्यालय 1991 में स्थापित किया गया था और यह जनपद-सम्पदा विभाग के अन्तर्गत एक अवैतनिक समन्वायक के देख रेख में कार्य कर रहा है।

घ. वित्त एवं लेख

31 मार्च, 1997 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लेखों को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यास द्वारा अपने घोषणा विलेख के अनुच्छेद 19.1 के अनुसार अनुमोदित और स्वीकृत किया जा चुका है।

भारत सरकार ने केन्द्र को निम्नलिखित लाभ/रियायतें प्रदान करते हुए अधिसूचनाएं जारी की हैं :-

(1) न्यास की आय को कर निर्धारण वर्ष 2000 - 2001 तक आयकर से मुक्त कर दिया गया है। आयकर अधिनियम की धारा 10 (23-ग) (IV) के अन्तर्गत आवश्यक कर मुक्ति दे दी गई है। देखिए : 9 अप्रैल, 1997 की अधिसूचना संख्या 10337 (एफ. सं0 197/39/97 आई. टी. ए.-1)

(2) न्यास को धारा-35 (I) (III) के अन्तर्गत, अधिसूचना संख्या 1075 एफ.सं.डी.जी.आई.टी.(ई) एन. डी.-22/35 (I) (III) 89 आई.टी.(ई.) दिनांक 14 मार्च, 1996 के द्वारा 1.4.96 से 31.3.1998 तक की अवधि के लिए एक संस्था घोषित कर दिया गया है, जिससे सामाजिक विज्ञान आदि में अनुसंधान के लिए केन्द्र को दी गई कोई भी राशि आयकर अधिनियम की धारा 35 (I) (III) के अन्तर्गत दाता की आय में से कटौती की पात्र होगी। आयकर अधिनियम के अन्तर्गत इस छूट की पूर्वपीठिका के रूप में, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इस संगठन केन्द्र को आयकर नियम, 1962 के नियम 6 के अन्तर्गत एक वैज्ञानिक तथा अनुसंधान संस्थान के रूप में अपनी मान्यता प्रदान कर दी है। इस मान्यता के आधार पर केन्द्र को आयात पर सीमा शुल्क से भी छूट मिल सकती है और आयात प्रक्रिया में भी सुविधा प्राप्त हो सकती है।

(3) केन्द्र को किसी कलाकृति, पाण्डुलिपि, रेखाचित्र, छायाचित्र, मुद्रण आदि की बिक्री से किसी व्यक्ति को होने वाले पूंजीगत लाभ आयकर अधिनियम की धारा 47 IX के अन्तर्गत निर्धारण वर्ष 1998 - 99 तक के लिए आयकर से मुक्त कर दिए गए हैं: देखिए भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) की दिनांक 24-11-1993 की अधिसूचना संख्या 207/5/93 आई.टी.ए.-II.

(4) व्यक्तियों द्वारा केन्द्र को किया गया कोई भी दान आयकर अधिनियम की धारा 80 (छ) के अन्तर्गत 50 प्रतिशत तक छूट का पात्र होगा। केन्द्र को यह छूट 31-3-1999 तक दी गई है : देखिए : आयकर निदेशक (छूट) का दिनांक 18 नवम्बर, 1993 का पत्र संख्या डी.आई.टी. (छूट) /93-94/379/ 87/531.

(5) वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) के केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ने अपने 21 अप्रैल, 1997 के आदेश संख्या: एफ. 199/18/96/ आई.टी.ए.-। के अन्तर्गत, आयकर अधिनियम, 1961 की धारा-10 के खंड (17-क) के उपखंड (I) के प्रयोजन के लिए इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति को निर्धारण वर्ष 1995-96 से 1997-98 तक के लिए कर-मुक्ति स्वीकार कर दी है। आगे के वर्षों के लिए कर मुक्ति प्राप्त करने हेतु इस मंत्रालय से लिखा-पढ़ी हो रही है।

ङ. आवास

केन्द्र का प्रधान कार्यालय जनपद स्थित सैंट्रल विस्टा मेस के भवनों और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग स्थित बंगलो संख्या 3 में स्थापित रहा। आशा की जाती है कि सैंट्रल विस्टा मेस भवन केन्द्र के विभिन्न प्रभागों तथा एककों के लिए पर्याप्त स्थान उपलबध करा सकेगा। डॉ. राजेंन्द्र प्रसाद मार्ग के बंगलों संख्या 5 की इमारत अब तोड़ दी गई है और उस स्थल पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के नये भवन का निर्माण कार्य 1993 में शुरु किया गया था। इस कार्य में वर्ष 1997-98 के दौरान अच्छी प्रगति हुई।

च. अध्येतावृत्ति योजनाएं

1 शोध अध्येतावृत्तियां

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शोधवृत्ति योजना इस वर्ष भी चलती रही और वर्ष 1997 - 98 के दौरान शोध अध्येताओं की संख्या इस प्रकार रही:-

मुख्यालय कार्यालय	:	7
चेन्नई माइक्रोफिल्म एकक	:	8

(II) इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्तियां

कलाओं, मानविकी विषयों तथा संस्कृति के क्षेत्र में सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक कार्य में अपने आप को स्वतंत्रतापूर्वक संलग्न रखने के लिए विख्यात एवं अत्यन्त प्रतिभाशाली व्यक्तियों को उपयुक्त अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम से स्मारकीय अध्येतावृत्तियों की एक योजना प्रारंभ की है। ये अध्येतावृत्तियां किसी भी विषय के ऐसे विद्वानों/सृजनधर्मी कलाकारों के लिए उपलब्ध हैं जिनके पास सृजनात्मक परियोजनाएं हैं और जो बहु-विषयक, अंतर्विषयक अथवा संकुल सांस्कृतिक स्वरूप पर शोध कार्य करने को तत्पर हैं। आवेदकों को ऐसे सर्जनात्मक या समालोचनात्मक कार्य का प्रामाणिक अनुभव होना चाहिए जो विशुद्ध अकादमिक स्वरूप के संकीर्ण क्षेत्र तक ही सीमित न हो। अध्येताओं को भारत के भीतर अपनी पसंद के किसी भी स्थान में रह कर कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी। वृत्तिका प्राप्त कर रहे अध्येताओं की संख्या किसी भी समय छह से अधिक नहीं होगी। प्रत्येक अध्येता की मासिक रूप से 12,000 रुपए वृत्तिका और 2500 रुपए सचिवालयिक सहायता के रूप में प्रतिमाह दिए जाएंगे। इसके अलावा उसे 25,000 रुपए प्रतिवर्ष के हिसाब से दो वर्ष की अवधि के लिए आकस्मिक तथा यात्रा व्यय दिया जाएगा। वृत्तिका की राशि पर आयकर से छूट देने के संबंध में भारत सरकार से निवेदन किया गया है।

इन अध्येतावृत्तियों के बारे में घोषणा दिवंगत श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्मदिन पर नवम्बर, 1995 में देश के सभी प्रमुख सामचार पत्रों तथा सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ व्यक्तियों तथा विद्वद् निकायों के माध्यम से देश भर में की गई थी और अनेक विद्वानों/शोधछात्रों से एतदर्थ आवेदन पत्र प्राप्त हुए।

वर्ष 1996 की अध्येतावृत्ति पुणे के विख्यात मराठी तथा अंग्रेजी लेखक श्री दिलीप चित्रे को दी गई है। वर्ष 1997 में, दो सुप्रसिद्ध महानुभावों अर्थात् मशहूर परम्परागत संगीतज्ञ उस्ताद आर.फहीमुद्दीन डागर और अंग्रेजी तथा मलयालम के विखात लेखक प्रो. के. अय्यप्पा पणिक्कर का इन अध्येतावृत्तियों के लिए चयन किया गया है। योजना के अन्तर्गत उस्ताद डागर ने तो "संगीत के तीन रूपों यानी अलाप, ध्रुवपद, धमार" का एक विश्लेषणात्मक तथा अभिलिखित विवरण देने की अपनी प्रस्तावित परियोजना पर कार्य पहले ही प्रारम्भ कर दिया था, और प्रो. पणिक्कर "भारतीय कथा-विज्ञान" पर अपना कार्य प्रारम्भ कर रहे हैं।

छ. राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने विभिन्न प्रभागों के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संगठनों तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ काफी व्यापक रूप से संबंध स्थापित किए हैं।

कलानिधि

केन्द्र का कलानिधि पुस्तकालय भारतीय विशिष्ट पुस्तकालय संस्थान के सदस्य के रूप में अन्तर्पुस्तकालय (उधार) ऋण और कम्प्यूटरबद्ध आदान-प्रदान की अनेक प्रणालियों में भाग लेता रहा। केन्द्र ने अपनी माइक्रोफिल्म बनाने की योजना के कार्यान्वियन के लिए अनेक संस्थाओं के साथ सूचनाओं का आदान प्रदान करने, अध्येताओं/विद्वानों को सहायता देने और परस्पर शोध कार्य के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए सुव्यवथित एवं नियमित कार्यक्रम स्थापित किए हैं। वर्ष 1997-98 के दौरान केन्द्र ने विभिन्न अकादमिक क्षेत्रों में जिन संस्थाओं से आदान प्रदान किया है उनमें प्रमुख हैं :

एशियाटिक सोसायटी, मुंबई;

एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता;

आनन्द आश्रम संस्था, पुणे;

भाण्डाकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे;

भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी;

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई;

भारत इतिहास संशोधक मंडल, पुणे;

केन्द्रीय पुरातत्त्व पुस्तकालय,
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली;

डी.ए.वी. कालेज पुस्तकालय, चण्डीगढ़;

दरिया-तुल-मरिफ उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद;

गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद;

हजरत पीर मोहम्मदशाह दरगाह शरीफ लाइब्रेरी, अहमदाबाद;

केन्द्रीय एशियाई अध्ययन संस्थान, श्रीनगर;

भारतीय पुस्तकालय संगम, दिल्ली;

भारतीय विशिष्ट पुस्तकालय, संस्थान, कलकत्ता ;

केलाड़ि संग्रहालय तथा ऐतिहासिक अनुसंधान केन्द्र, केलाड़ि ;

खुदाबख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना ;

के.आर.कामा संस्थान पुस्तकालय, मुंबई ;

एल.डी. संस्थान, अहमदाबाद ;

मौलाना अबुलकलाम आजाद अरबी एवं फारसी अनुसंधान संस्थान, टोंक ;

महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर ;

मणिपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय, मणिपुर ;

महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजुवर ;

राष्ट्रीय संग्रहालय पुस्तकालय, नई दिल्ली ;

राष्ट्रीय अभिलेखागार, जनपथ, नई दिल्ली ;

नागपुर विश्वविद्यालय पुस्तकालय, नागपुर ;

ओरिएंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट एण्ड मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, तिरुवनन्तपुरम् ;

रजा लाइब्रेरी, रामपुर ;

शंकर मठ, कांचीपुरम ;

यू.वी.स्वामिनाथ अय्यर लाइब्रेरी, चेन्नई।

कलाकोश

समीक्षाधीन वर्ष में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का कलाकोश प्रभाग अपने शोध कार्यक्रमों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं और प्रकाशन की योजनाओं के माध्यम से अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़ा रहा और उसने देश के विभिन्न भागों तथा विदेशों में स्थित कई शोधकर्त्ताओं तथा विशेषज्ञों सहित अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं तथा विद्वन्निकायों के साथ बराबर संबंध एवं संम्पर्क बनाए रखा।

इस संदर्भ में निम्नलिखित अकादमिक निकाय उल्लेखनीय हैं :

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़,

अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज, वाराणसी;

भारत का मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण, नई दिल्ली ;

एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता।

भाण्डाकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे;

भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी;

केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, वाराणसी;

दकन कॉलेज, पुणे;

संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,

गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ , इलाहाबाद;

गवर्नमेंट ओरिएंटल मेनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, चेन्नई;

भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता;

पांडिचेरी फ्रेंच संस्थान, पांडिचेरी;

भारतीय इस्लामिक अध्ययन संस्थान, हमदर्द नगर, नई दिल्ली;

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली;

जादवपुर विश्वविद्यालय, कलकत्ता;

काशी विद्यापीठ, वाराणसी;

एल.डी.भारत विद्या संस्थान, अहमदाबाद;

·प्रज्ञा पाठशाला, वाई,

रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता;

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ;

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी;

श्री वेंकटेश्वर प्राच्य शोध संस्थान, तिरुपति;

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली;

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता;

वैदिक संशोधन मंडल, पुणे।

जनपद-सम्पदा

अपने परियोजना निदेशकों तथा अनुसंधान कर्ताओं के माध्यम से भारत के भिन्न-भिन्न भागों में अपने कार्यक्रमों के अकादमिक कार्यान्वयन के संदर्भ में, जनपद सम्पदा प्रभाग ने विश्वविद्यालय तंत्र तथा उसके बाहर के विभिन्न शोध संगठनों के साथ अपने संबंध बनाए रखे। प्रभाग मूलभूत विज्ञानों तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों की अग्रणी संस्थाओं के साथ बराबर सम्पर्क तथा संवाद बनाए रखने में सफल रहा है। इन संस्थाओं में शामिल हैं : खगोल-भौतिकी केन्द्र, पुणे; विज्ञान संस्थान, बंगलौर; राष्ट्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विकास संस्थान और परिस्थिति विज्ञान केन्द्र (भारतीय विज्ञान संस्थान), बंगलौर; एशियाई अध्ययन संस्थान तिरुनमियूर, चेन्नई; पर्यावरण केन्द्र, राजमुंदरी, हैदराबाद; और भारतीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली। केन्द्र के अनुसंधान कार्यक्रमों में अनेक विश्वविद्यालयो के मानव-विज्ञान विभाग भी भाग ले रहे हैं। इनमें से कुछ विभाग जो इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं वे हैं : मानव विज्ञान विभाग, एच.एन. बहुगुणा विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तर प्रदेश; मानव-विज्ञान विभाग, नॉथ ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय; सामाजिक विज्ञान तथा विकास अनुसंधान, भुवनेश्वर; राजाराम मोहन राय सामाजिक विकास (मानव विज्ञान), संस्थान, कलकत्ता; अंग्रेजी विभाग, गवर्नमेंट कालेज, आइटानागर; सेंट एलबर्ट कालेज, एरणाकुलम, कोचि, केरल; आनन्दोराम बरूआ कला, भाषा तथा संस्कृति संस्थान, गुवाहाटी; वनस्पति विज्ञान विभाग, भागलपुर; विश्वविद्यालय, बिहार; मानव-विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय,

कलकत्ता; कला इतिहास विभाग, ललित कला संकाय, बड़ौदा विश्वविद्यालय, बड़ोदरा; और मानव विज्ञान संस्थन, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली। इनके अलावा, राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल; मानव जाति अध्ययन संस्थान, उड़ीसा; तिब्बत हाउस, नई दिल्ली; सॉन्थीमर कल्चरल एसोसिएशन, पुणे; तथा लोकवार्ता विज्ञान, एस.डी.कालेज, पानीपत के सहयोग से भी कई कार्यक्रम चल रहे हैं। जनजातीय अध्ययन संस्थानों जैसे आदिमजाति सेवा संघ, नई दिल्ली; जनजातीय अध्ययन विभाग, अरुणाचल विश्वविद्यालय, आइटानगर; जनजातीय बोलियां तथा संस्कृति अकादमी, भुवनेश्वर तथा असम राज्य संग्रहालय, गुवाहाटी के साथ भी परस्पर आदान-प्रदान तथा सम्पर्क संबध चल रहे हैं।

अपने क्षेत्र सम्पदा कार्यक्रम में, जनपद सम्पदा प्रभाग ने केन्द्रीय तथा राज्यों के पुरातत्त्व विभागों के साथ, और श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, वृंदावन, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद; ऐतिहासिक उच्च अध्ययन केन्द्र, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश; नियोजन तथा स्थापत्य विद्यालय, नई दिल्ली जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भी नियमित रूप से संपर्क-संबंध बनाए रखा है। सांस्कृति आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत, जनपद सम्पदा प्रभाग बृहदीश्वर परियोजना पर पांडिचेरी के फ्रेंच संस्थान से सहयोग ले रहा है। कलाओं के क्षेत्र में अपने बालजगत के कार्यक्रमों, विशेष रूप से पुत्तलिका कला तथा संगीत में जनपद सम्पदा प्रभाग राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं के साथ सम्पर्क एवं सहयोग बनाए रखता है; इनमें से कुछ हैं : संगीत नाटक अकादमी; क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र और मंचनीय/प्रदर्शनीय कला संस्थान, उडिपी (कर्नाटक); भारतीय पेपर अकादमी (भारतीय कला केन्द्र), चेन्नई; भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर; और गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति, नई दिल्ली गांधी पर पुत्तलिका कार्यक्रमों के लिए।

कलादर्शन

इसी प्रकार कलादर्शन प्रभाग ने अपनी प्रदर्शनियां तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं जैसे गवर्नमेंट म्यूजियम, चेन्नई, भारत भवन, भोपाल, भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश; राष्ट्रीय मंचनीय प्रदर्शनीय कला केन्द्र, मुंबई; चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट; बाल भवन सोसायटी, नई दिल्ली; नगर निगम तथा नई दिल्ली के पब्लिक स्कूलों के साथ परस्पर सम्पर्क की व्यवस्था बना रखी है। इसके अलावा, राष्ट्रीय मंचनीय/प्रदर्शनीय कला केन्द्र, मुंबई; गैलरी आर्ट ट्रस्ट, चेन्नई; राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान, अहमदाबाद; और संस्कृति प्रतिष्ठान; राष्ट्रीय नवकला वीथि; राष्ट्रीय संग्रहालय तथा भारतीय पुरातत्व सोसायटी, नई दिल्ली के साथ-साथ कुछ राजनयिक मिशनो के सास्कृतिक केन्द्रों तथा विदेशी सांस्कृतिक केन्द्रों, जैसे इतावली सांस्कृतिक केन्द्र, आस्ट्रेलियाई सांस्कृतिक केन्द्र, जापान फाउंडेशन, चीनी सांस्कृतिक एकक और मैक्समूलर भवन, नई दिल्ली के साथ भी नियमित आदान-प्रदान कार्यक्रम बना हुआ है।

भवन परियोजना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भवन परियोजना ने एक कठिन एंव कंटकाकीर्ण मार्ग तय करने के बाद, जैसा कि ऐसी परियोजनाओं में अक्सर होता है, अब राजधानी के सैंट्रल विस्टा क्षेत्र में संदर्भ पुस्तकालय भवन के अस्तित्व के साथ, जो कि निर्माण की उन्नत अवस्था प्राप्त कर चुका है, अपनी स्पष्ट उपस्थिति दर्ज की है। इस भवन का ढांचा पूरी तरह तैयार हो चुका है और तापन, वातायन और वातानुकूलन यंत्र, जल-पूर्ति और स्वच्छता प्रणालियों आदि की सभी व्यवस्थाएं भी लगभग सम्पन्न हो चुकी है। बाहर पत्थर जड़ने और भीतर फर्श तथा सजावटी छत आदि बनाने का काम तेज रफ्तार से हो रहा है। यह इस परियोजना का पहला भवन है इसलिए इसका अत्यधिक महत्व है क्योंकि यह भवन वास्तुशिल्पीय, सौंदर्यशास्त्रीय, तकनीकी प्रबंध तथा प्रशासनिक आदि विभिन्न पक्षों के लिए मानदंड प्रस्तुत करने के साथ-साथ पत्थर के

काम की गुणवत्ता तथा साज-सज्जा से लेकर परियोजना निष्पादन विधियों, संविदा-प्रणालियों और प्रबंधकीय संरचनाओं के लिए मानक स्थापित करती है। डिजाइन तथा निष्पादन दोनों में उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है, विशेष रूप से इस बात को ध्यान में रखते हुए कि इस राष्ट्रीय परियोजना के समारम्भ एक अंतराष्ट्रीय निर्णायक मंडल की सहायता से, अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता के माध्यम से चुने गए एक सर्वोत्कृष्ट डिजाइन के आधार पर किया गया था।

जहां तक केन्द्र संकुल के अन्य भवनों का प्रश्न है, खेद का विषय है कि भवनों के नक्शों के अनुमोदन के लिए स्थानीय प्राधिकरणों में कार्रवाही की गति काफी धीमी रही है। दिल्ली नगर कला आयोग और सैंट्रल विस्टा समिति ने तो भवन के नक्शों को मई, 1994 में ही अनुमोदित कर दिया था किन्तु नई दिल्ली नगर परिषद् से सर्वाधिक अनुमति अभी तक नही मिली है। नई दिल्ली नगर परिषद ने हाल में भवन के नक्शों को अनुमोदित कर दिया है और कुछ अंतिम औपचारिकताएं पूरी हो जाने पर भवन निर्माण संबंधी अनुमति पत्र उनकी ओर से भेजा जाएगा। उसके बाद ही, धनराशियों की उपलब्धता के अधीन रहते हुए निर्माण-कार्य प्रारंभ किया जाएगा।

अनुबन्ध

अनुबन्ध-1 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्यों की सूची, अनुबन्ध-2 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची, अनुबंध-3 पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची, अनुबध-4 पर केन्द्र के अनुसंधान अध्येताओं की सूची, अनुबन्ध-5 पर वर्ष 1997-98 के दौरान हुई केन्द्र में हुई प्रदर्शनियों की सूची, अनुबंध-6 पर वर्ष 1997-98 के दौरान केन्द्र में हुई संगोष्ठियों/कार्यशालाओं की सूची, अनुबंध-7 पर वर्ष 1997-98 के दौरान केन्द्र में हुए फिल्म तथा वीडियां प्रलेखनों की सूची, अनुबंध-8 पर अप्रैल, 1997 से 31 मार्च, 1998 तक हुई घटनाओं (व्याखयानों) की तालिका और अनुबंध-9 पर 31 मार्च, 1998 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची संलग्न है।

अनुबन्ध - 1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य

1. श्रीमती सोनिया गांधी — न्यास अध्यक्ष
   10, जनपथ,
   नई दिल्ली-110 011
2. श्री आर. वेंकटरामन
   "पोतिगै" ग्रीनवेज रोड,
   चेन्नई-600 028
3. श्री पी.वी. नरसिम्हाराव
   9, मोती लाल नेहरू मार्ग
   नई दिल्ली-110 011
4. डॉ. मनमोहन सिंह
   9, सफदरजंग लेन,
   नई दिल्ली-110 011
5. श्री पी.एन. हक्सर
   4/9, शांतिनिकेतन,
   नई दिल्ली-110 021
6. श्री रामनिवास मिर्धा
   7, लोदी एस्टेट,
   नई दिल्ली-110 003
7. श्री एच. वाई शारदा प्रसाद
   19, मैत्री अपार्टमेंट्स,
   ए-3 पश्चिम विहार,
   नई दिल्ली - 110 063
8. डॉ. कपिला वात्स्यायन,
   डी-1/23, सत्यमार्ग,
   नई दिल्ली-110 021
9. डॉ. एस. वरदराजन
   4ए गिरिधर अपार्टमेंट,
   28, फिरोजशाह रोड़
   नई दिल्ली-110 001
10. प्रो. ए. रामचन्द्रन
    22 भारती आर्टिस्ट्स कालोनी, विकास मार्ग,
    नई दिल्ली-110 001

11. माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री
शास्त्री भवन,
नई दिल्ली (पदेन)

12. माननीय शहरी विकास एवं रोजगार कार्य मंत्री
निर्माण भवन,
नई दिल्ली-110 001 (पदेन)

13. अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-110 002

14. उप-कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय,
विश्वविद्यालय मार्ग,
दिल्ली-110 007

15. अध्यक्ष, साहित्य अकादमी
रवीन्द्र भवन, 35 फिरोजशाह रोड़,
नई दिल्ली-110 001
(पदेन)

16. श्री एम.सी. जोशी, सदस्य सचिव
सी-2/64, शाहजहां रोड़,
नई दिल्ली-110 001
(पदेन)

अनुबन्ध - 2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्य

1.	श्री पी.वी. नरसिम्हाराव, 9, मोती लाल नेहरू मार्ग, नई दिल्ली-110 001	अध्यक्ष
2.	डॉ. मनमोहन सिंह 9 सफदरजंग लेन, नई दिल्ली 110 001	सदस्य (पदेन)
3.	प्रो. यशपाल, 11 बी. सुपर डीलक्स फ्लैटस, सैक्टर-15-ए., नोएडा, उत्तर प्रदेश	
4.	श्री एच. वाई. शारदा प्रसाद, 19, मैत्री अपार्टमेंटस, ए-3, पश्चिम विहार नई दिल्ली-110063	सदस्य
5.	डॉ. कपिला वात्स्यायन डी.-1/23,सत्यमार्ग, नई दिल्ली-110 021	सदस्य
6.	श्री प्रकाश नारायण, डी.-36, प्रथम तल, जंगपुरा एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 014	सदस्य (पदेन)
7.	श्री एम.सी. जोशी सी-2/64, शाहजहां रोड, नई दिल्ली-110 011	सदस्य सचिव (पदेन)

अनुबन्ध - 3

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची

डॉ. कपिला वात्स्यायन, अकादमिक निदेशक/आचार्या
श्री एम.सी. जोशी, सदस्य सचिव

कलानिधि प्रभाग

1.	डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	डॉ. सम्पत् नारायण	विषय स्कॉलर
3.	श्री ऋषि पाल गुप्ता	मुख्य प्रशासन अधिकारी
4.	श्री आत्म प्रकाश गक्खड	उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
5.	डॉ. अरूप बनर्जी	असोशिएट प्रोफेसर
6.	श्रीमती वाणि घोष	नियंत्रक, वीडियो प्रलेखन
7.	श्री वी. कोटनाला	अनुलिपिक अधिकारी
8.	डॉ. राधा बनर्जी	अनुसंधान अधिकारी

कलाकोश प्रभाग

मुख्यालय

1.	पं. सातकड़ि मुखोपाध्याय	समन्वायक
2.	श्री टी. राजगोपालन	प्रशासन अधिकारी
3.	डॉ. नारायण दत्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ. वी. एस. शुक्ल	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. अद्वैतवादिनी कौल	सहायक सम्पादक

वाराणसी कार्यालय

6.	डॉ. आर. सी. शर्मा	अवैतनिक समन्वायक
7.	डॉ. वी.एन. मिश्र	अवैतनिक सलाहकार
8.	डॉ. उर्मिला शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
9.	डॉ. सुकुमार चट्टोपाध्याय	अनुसंधान अधिकारी
10.	डॉ. नरसिंह चरण पण्डा	अनुसंधान अधिकारी

जनपद सम्पदा प्रभाग

1.	डॉ. बैद्यनाथ सरस्वती	वरिष्ठ अनुसंधान प्रोफेसर
2.	श्री वाई.पी. गुप्ता	प्रशासन अधिकारी
3.	डॉ. मौलि कौशल	अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ. बंसीलाल मल्ला	अनुसंधान अधिकारी
5.	डॉ. नीता माथुर	अनुसंधान सहयोगी
6.	डॉ. रामाकर पंत	अनुसंधान सहयोगी

इम्फाल कार्यालय

7.	श्री अरिबाम श्याम शर्मा	अवैतनिक समन्वायक

कलादर्शन प्रभाग

1.	श्री बसंत कुमार	सलाहकार (क.द.)
2.	डॉ. मधु खन्ना	असोशिएट प्रोफेसर
3.	कु. सबीहा ए. जैदी	कार्यक्रम निदेशक

सूत्रधार प्रभाग

1.	श्रीमती नीना रंजन	संयुक्त सचिव(आई. डी.)
2.	श्री एस.एल. टक्कर	निदेशक (ए. एण्ड एफ.)
3.	श्री एस.पी. अग्रवाल	मुख्य लेखा अधिकारी
4.	श्री अभय मोहन लाल	परियोजना प्रबन्धक
5.	श्री संजय गोयल	परियोजना प्रबन्धक
6.	श्री प्रतापानन्द झा	प्रणाली विशेषज्ञ
7.	श्री आर.सी. सहोत्रा	निजी सचिव
8.	श्री पी.पी. माधवन्	निजी सचिव
9.	श्री सोहन एस. सैनी	अवर सचिव (एस.डी.)
10.	श्री ओ.पी. डोगरा	अवर सचिव (आई.डी.पी.)
11.	श्री एन.जे. थॉमस	अवर सचिव (आई.डी.पी.)
12.	श्री आर. हरप्रसाद	वरिष्ठ लेखा अधिकारी

13.	श्री एस. पी. मंगला	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
14.	श्रीमती नीलम गौतम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
15.	श्री जे.पी. एस.त्यागी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
16.	श्री एस.एल. दीवान	निजी सचिव

अनुबन्ध - 4

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में

वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची

कलानिधि (संदर्भ पुस्तकालय)

1. श्री जे. मोहन, कनिष्ठ माइक्रोफिल्म निर्माण परियोजना सहयोगी (मद्रास)
2. श्री पी.पी. श्रीधर उपाध्याय, कनिष्ठ माइक्रोफिल्म निर्माण परियोजना सहयोगी (मद्रास)
3. श्रीमती वी.पार्वतन, कनिष्ठ माइक्रोफिल्म निर्माण परियोजना सहयोगी (मद्रास)

चीनी-भारतीय अध्ययन कक्ष

4. श्रीमती सुधांशी बसू, कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता

कलाकोश प्रभाग

1. डॉ. श्रीमती सुषमा जाडू, वरिष्ठ अध्येता
2. डॉ. श्रीमती संघमित्रा बसु, वरिष्ठ अध्येता
3. श्री सुधीर कुमार लाल, कनिष्ठ अध्येता
4. श्री अजय कुमार मिश्र, कनिष्ठ अध्येता

जनपद-सम्पदा प्रभाग

1. श्री कैलाश कुमार मिश्र, कनिष्ठ अध्येता
2. श्रीमती मीना पॉल, कनिष्ठ अध्येता

अनुबंध – 5

वर्ष 1997-98 के दौरान हुई प्रदर्शनियां

क्रं सं0	प्रदर्शनी का शीर्षक	अवधि	प्रभाग का नाम
1.	"दीवारें और फर्श : ग्राम भारत की जीवन्त परम्परा : छायाचित्र (फोटोग्राफ) ज्योति भट्ट द्वारा"	12-25 सितम्बर, 1997	कलादर्शन
2.	"सुंग कोंग : लॉग ड्रम की पुकार मिलादा गांगुली संग्रह"	6-26 अक्टूबर, 1997	कलादर्शन
3.	"गीतगोविन्द बहु-माध्यमिक अनुभव"	10 दिसम्बर, 1997 से 8 जनवरी, 1998	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द य.एन.डी.पी. परियोजना
4.	"रूप-प्रतिरूप : मानव और मुखौटा" अनुभव"	20 फरवरी, से 12 अप्रैल, 1998	कलादर्शन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

अनुबन्ध – 6

वर्ष 1997-98 के दौरान हुई संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

क्रं सं0	शीर्षक	दिनांक/अवधि	प्रभाग का नाम
1.	"पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपिशास्त्र" विषय पर कार्यशाला (कलकत्ता विश्वविद्यालय के सहयोग से) कलकत्ता में।	27 मार्च से 12 अप्रैल 1997	कलाकोश
2.	"मल्टीमीडिया अनुप्रयोग" विषय पर कार्यशाला	अप्रैल, 1997	इ.गा.रा.क.के. यू.एन.डी.पी. परियोजना
3.	"मध्य-एशियाई पुरावेशेषों" का प्रलेखन विषय पर एक व्यवहार्यता अध्ययन सम्मेलन, नई दिल्ली में	15-18 जुलाई 1997	कलानिधि

4.	"मल्टीमीडिया विषय-वस्तु और अनुप्रयोग" विषय पर कार्यशाला, इलेक्ट्रॉनिकी विभाग, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय और इंदिरा गांधी कला केन्द्र द्वारा संयुक्त रूप से, नई दिल्ली में	22-23 जुलाई, 1996	इ.गा.रा.क.के. यू.एन.डी.पी. परियोजना
5.	"लाओस की कला" विषय पर संगोष्ठी नई दिल्ली में	12 अगरस्त, 1997	कलानिधि
6.	"संस्कृत अध्ययन और कम्प्यूटर" विषय पर कार्यशाला, नई दिल्ली में	22-23 सितम्बर, 1997	कलाकोश
7.	"संथाल विश्व-दृष्टि" विषय पर संगोष्ठि नई दिल्ली में	17 सितम्बर, 1997	जनपद-समपदा
8.	"पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपिशास्त्र" विषय पर कार्यशाला (मैसूर विश्वविद्यालय के सहयोग से) मैसूर में	27 नव.-17 दिसम्बर, 1997	कलाकोश
9.	"सांस्कृतिक दाय का अध्ययन : विकास का उपकरण" विषय पर कार्यशाला (इ.गा.रा.क.के. और यूनेस्को) के संयुक्त तत्त्ववाधान में) कोलम्बो में	दिसम्बर, 1997	जनपद-सम्पदा
10.	"समकालीन भारत (व एशिया) पर इटली में अध्ययन तथा समकालीन इटली (व यूरोप) पर भारत में अध्ययन विषय पर संगोष्ठी, नई दिल्ली में	5 जनवरी 1998	जनपद-सम्पदा
11.	"गांधी और ग्रामोद्योग" विषय पर संगोष्ठी, नई दिल्ली	19 जनवरी, 1998	जनपद-सम्पदा
12.	"परम्परा तथा व्यक्ति" विषय पर संगोष्ठी नई दिल्ली में	21-23 जनवरी, 1998	जनपद-सम्पदा
13.	"रूप-प्रतिरूप : मानव, मन और मुखौटा" विषय पर संगोष्ठी, नई दिल्ली में	24-28 जनवरी, 1998	जनपद-सम्पदा

अनुबन्ध-7

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में अप्रैल 1997 से मार्च, 1998 तक हुए फिल्म/वीडियो प्रलेखनों की सूची

1. नबकलेबर - *पृथ्वीराज मिश्र द्वारा*

पुरी में भगवान जगन्नाथ की मुख्य काष्ठ प्रतिमा के प्रतिस्थापन से संबंधित एक अनूठे सांस्कृतिक कार्यक्रम के वीडियो प्रलेखन का कार्य सम्पन्न कर दिया गया है।

2. हेमिस उत्सव - *एम.के. रैना द्वारा*

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने हेमिस उत्सव के वीडियो प्रलेखन का कार्य पूरा कर दिया है। यह उत्सव लद्दाख के बौद्ध धर्मानुयायियों का एक अत्यन्त रंगारंग और पवित्र उत्सव है। इस उत्सव में अनेक नृत्यनाटक प्रस्तुत किए जाते हैं, जिनमें कलाकार अत्यन्त आकर्षक मुखौटे लगाकर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।

3. ''सैक्रिड वर्ल्ड ऑफ दि टोडाज'' (टोडा लोगों का पवित्र त्योहार) - *एस.बप्पा राय द्वारा*

नीलगिरि की पहाड़ियों में बसी टोडा जाति की जीवन-शैलियों पर आधारित फिल्म बनाने का कार्य सम्पन्न हो चुका है।

4. करखा - *खालिद सुल्तान द्वारा*

करखा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह से जुड़े लोक संगीत का एक परंपरागत रूप है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अपने आन्तरिक दल ने इसके वीडियो प्रलेखन का कार्य पूरा कर दिया है।

5. ताबो चोस खोर - *कु. उषा जोशी द्वारा*

हिमाचल प्रदेश में स्थित ताबो बौद्ध मठ के विस्तृत वीडिया-प्रलेखन का कार्य सम्पन्न हो चुका है।

महान गुरूजन श्रृंखला

1. विख्यात साहित्य मनीषी डॉ. शिवराम कारन्त के साथ साक्षात्कार - डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा
2. अपने समय की महान कत्थक नृत्यांगना श्रीमती दमयन्ती जोशी के साथ साक्षात्कार - डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा।
3. महान कत्थ नृत्यांगना श्रीमती सितारा देवी के साथ साक्षात्कार - डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा।

अर्जन/प्राप्ति

इन्दिरा गांधी राष्टीय कला केन्द्र ने राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय स्रोतों से निम्नलिखित मशहूर फिल्में तथा वीडियो कार्यक्रम प्राप्त किए :

1. पूर्व-उत्तर : फास्ट फॉरवार्ड (आठ फिल्मों की एक श्रृंखला)

2. मास्टर पीसेज ऑफ दि आर्ट वर्ल्ड : थ्री हर्मिटेज (18 प्रसंगों की एक वीडियो श्रृंखला)

3. मुरक्क नफीस

4. अनुकम्पन

5. दि बेंडिंग ऑफ दि बौ

6. मैहर राग

7. ए पिआनो स्टोरी

आन्तरिक प्रलेखन कार्य

इन्दिरा गांधी राष्टीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/समारोहों के विषय में ऑडियो तथा विज्युअल प्रलेखन कार्य आन्तरिक रूप से केन्द्र में किए गए। इनमें से कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य थे : "रूप-प्रतिरूप : मानव और मुखौटा'' शीर्षक प्रदर्शनी और अन्तर्राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा संयुक्त नाटक अकादमी और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित विश्व के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के मुखौटा-नृत्यों के कार्यक्रमों के वीडियो तथा निश्चल प्रलेखन, गीतगोविन्द मल्टीमीडिया प्रदर्शनी और वाराणसी के हस्तशिल्प का प्रलखन/यू.एन.डी.पी. परियोजनाओं के लिए भी कुछ ऑडियो-अभिलेखन का कार्य आन्तरिक रूप से केन्द्र में ही किया गया।

अनुबन्ध-8

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में अप्रैल 1997 से मार्च, 1998 तक हुई घटनाओं (व्याख्यानों) की तालिका

क्रम	विषय	दिनांक	वक्ता का नाम
1.	"एक मूल्य-प्रणाली के निर्माण में सर्जनात्मकता, अर्थशास्त्र और शिक्षा की भूमिका"	03-04-1997	श्री नेविल तुली
2.	"उत्तराखंड में देव बन्धुता की परम्परा"	24-04-1997	डॉ. विलियम एस. सैक्स
3.	"वैदिक मंत्रों के उच्चारण में अन्तर"	29-04-1997	पं. सातकड़ि मुखोपाध्याय
4.	"पांडुलिपि, आयुर्वेद और भारतीय विज्ञान के इतिहास का समस्याकरण"	06-05-1997	डॉ. डॉमिनिक वुजास्तिक
5.	"आधुनिकता और साहित्य की एक भारतीय साहित्य में कुछ समस्याएं"	09-05-1997	प्रो. जी.पी. देशपांडे
6.	"कला पूर्व/पश्चिम 2000 : परम्परागत और समकालीन संस्कृति में, चेतना में कलाओं की भूमिका के संबंध में कलाकार की दृष्टि"	12-05-1997	प्रो. पीटर जिन
7.	"कत्थक में साहित्यिक निवेश"	20-05-1997	कु. शोभना नारायण
8.	"श्रीहर्षकृत नैषधीयचरितम् में कला और संस्कृति"	10-06-1997	प्रो. सी. प्रसाद शुक्ल
9.	"धोलावीर की खुदाई से हुई नवीनतम प्राप्तियां"	19-06-1997	प्रो. आर.एस. बिस्ट
10.	"भारमूर के गद्दी लोगों में और अंतरिक्ष की संस्कृति श्रेणियां"	23-06-1997	डॉ. मौली कौशल
11.	"प्राचीन बंगाल की मृण्मूर्ति कला पर नवीन साक्ष्य"	21-07-1997	प्रो. इनामुल हक
12.	"कुमारस्वामी के यक्षों के प्रकाश में; संयुक्त राज्य के घरेलू भू-दृश्य में पवित्र अंतरिक्ष का प्रतीक"	24-07-1997	श्री पॉल. सी. श्रोडर

13.	"उस्ताद बड़े गुलाम अली खां के संगीत में भावना तथा प्रेरणा	30-07-1997	श्रीमती मालती गिलानी
14.	"भारतीय रंगमंच और अमरीकी पाण्डित्य :	26-08-1997	प्रो. आर. स्केचनर
15.	"वीणा पर गायकी अंग''	10-09-1997	श्रीमती एस.राजगोपालन
16.	"भगवद्गीता में सामाजिक विचार''	24-09-1997	डॉ. विवेकानन्द झा
17.	"हिन्दी साहित्य में सांझी संस्कृति''	29-09-1997	डॉ. अब्दुल बिस्मिल्लाह
18.	"इन्द्र की धूर्तता : आधुनिकता की चुनौती - भारत का मामला''	17-10-1997	प्रो. रैमन पणिक्कर
19.	"बहुमाध्यमिक विषयवस्तु और विनियोग''	21-10-1997	डॉ. सस्किया केवसेबूम
20.	"ताम्रयुगीन विश्व''	24-10-1997	डॉ. शेरीन रत्नागर
21.	"उर्दू गज़ल और सूफीवाद के कुछ पहलू''	28-10-1997	डॉ. शेख सलीम अहमद
22.	"नक्शी कंथाओं की शब्दावली और सौन्दर्य-मीमांसा''	11-11-1997	डॉ. परवीन अहमद
23.	"टॉरेन्स फिनोमेनन्'' भगवान विश्वकर्मा के लिए विस्तृत सर्जनात्मक खोज''	20-11-1997	डॉ. एम.के. रैना
24.	"समकालीन आस्ट्रेलियाई कला''	25-11-1997	डॉ. साइमन नेल्सन और कु. फेलिसिटी फेनर
25.	"ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में जन-सामान्य की सर्जनात्मकता : राजस्थान के एक ग्राम विद्यालय का मामला''	27-11-1997	प्रो. हिमांशु छैया
26.	"प्रो. एन.के. बोस और भारतीय मंदिर स्थापत्य के अध्ययन में उनका योगदान''	01-12-1997	श्री एम. ए. ढाकी

27.	"वैरोचन का लक्षण-समुच्चय और कलिंग की मध्यकालीन वास्तुकला"	02-12-1997	श्री एम.ए. ढाकी
28.	"राधा-कृष्ण मिथक : एक जुंगीय मनोवैज्ञानिक व्याख्या"	02-12-1997	श्रीमती रसना इमहास्लाई
29.	"भारत की आध्यात्मिक संस्कृति और नई विश्व-व्यवस्था"	18-12-1997	डॉ. एलेक्जेंडर जैकब
30.	"देवदासी पर सी.डी.रोम प्रस्तुति"		
31.	"पूर्वी तुर्किस्तान से बौद्ध ग्रंथ"	12-02-1998	प्रो. जी.एम. बॉनगार्ड लेविन
32.	"पंजाब के लोक वाद्य : एक मानवजाति वर्णनात्मक अध्ययन"	20-03-1998	डॉ. अलका पाण्डे
33.	"सोलहवीं शताब्दी के भारत में कला और उसका संरक्षण	30-03-1998 और 02-04-1998	डॉ. जार्ज मिशेल

अनुबन्ध-9

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में मार्च 1998 तक के प्रकाशनों की तालिका

कलातत्त्वकोश ग्रन्थमाला

1. कलातत्त्वकोश : भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोश, खण्ड - 1 (अप्राप्य)

यह एक आदर्श (मॉडल) खण्ड है जिसमें भारतीय कलाओं की आठ आधारभूत अवधारणाओं, अर्थात् ब्रह्म, पुरुष, आत्मन्, शरीर, प्राण, बीज, लक्षण और शिल्प का विवेचन किया गया है। ये पारिभाषिक शब्द बहुत व्यापक अर्थ लिए हुए हैं। इन शब्दों ने कलाओं के सिद्धांत तथा व्यवहार दोनों पक्षों को प्रभावित किया हैं। सुयोग्य विद्वानों तथा विशेषज्ञों द्वारा समालोचनात्मक पद्धति पर प्रस्तुत इन अवधारणाओं के विवेचन में उनके प्रयोग तथा उद्धरणों के माध्यम से अनेक बहुस्तरीय अर्थों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला
केन्द्र तथा मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1988, पृष्ठ : xxviii + 189, मूल्य : 200 रुपए

2. कलातत्त्वकोश: भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोश, खण्ड - 2

इस खण्ड में 'दिक्' और 'काल' विषयक बीजभूत पारिभाषिक शब्दों का विवेचन शामिल है। इन पारिभषिक शब्दों की तत्त्वमीमाँसा से लेकर विज्ञान तथा कलाओं तक के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मूल ग्रंथों की व्यापक छानबीन के द्वारा विवेचन किया गया है। इन शब्दों पर लिखे गए निबंधों को पढ़कर पाठक विभिन्न संदर्भों में इन अवधारणाओं के बहुस्तरीय अर्थ समझ सकता है। इस खण्ड में सम्मिलित किए गए शब्द है: *बिन्दु, नाभि, चक्र, क्षेत्र, लोक, देश, काल, क्षण, क्रम, संधि, सूत्र, ताल, मान, लय, शून्य, पूर्ण* ।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्रा.लि.
41, यू.ए. बंगलो रोड़ जवाहर नगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : xxxvii + 478, मूल्य : 450 रुपए

3 कलातत्त्वकोश: भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का कोश, खण्ड - 3

इस खण्ड में महाभूतों-मूल तत्त्वों से संबंधित बीजभूत पारिभाषिक शब्दों का विवेचन किया गया है। इन पारिभाषिक शब्दों की तत्वमीमांसा से लेकर विज्ञान तथा कलाओं तक के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मूल ग्रंथों की व्यापक छानबीन के द्वारा यह विवेचन किया गया है। इन शब्दों पर लिखे गए निबंधों को पढ कर पाठक विभिन्न संदर्भों में इन अवधारणाओं के बहुस्तरीय अर्थ समझ सकता है। इस खण्ड में सम्मिलित किए गए शब्द हैं : प्रकृति, भूत-महाभूत, आकाश, वायु, अग्नि, ज्योतिष/प्रकाश, अप, पृथ्वी/भूमि।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्रा.लि.
41, यू.ए. बंगलो रोड जवाहर नगर, दिल्ली-110 007
1999, पृष्ठ : xxxviii + 446, मूल्य : 450 रुपए

कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला

4. मात्रालक्षणम् (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं.-1)

यह खण्ड इस कृति की पूर्ण रूप से उपलब्ध दो पाण्डुलिपियों पर आधारित है और साथ में इसका अंग्रेजी अनुवाद तथा विस्तृत टिप्पणियां भी दी गई हैं। यह खण्ड अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि संभवत: यह ऐसा प्रथम ग्रंथ है जिसमें समय की मात्रा की संकल्पना पर विचार किया गया है, यानी छंदों के लिखित रूप पर स्वराघात दर्शाने वाले उच्चारण चिह्न लगाने तथा उनका सस्वर पाठ करने की शैली को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है।

यह ग्रंथ संगीतज्ञों, संगीत शास्त्रियों, सामवेद के गायकों, यहां तक कि उन शोधकर्ताओं के लिए भी अनिवार्य रूप से पठनीय है जो वैदिक संगीत के स्वरों तथा उनका भारत के शास्त्रीय और लोक संगीत पर प्रभाव, विषय पर शोधकार्य में रुचि रखते हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : वेन हॉवर्ड
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1988, पृष्ठ : xvi + 98, मूल्य : 150 रुपए

5. दत्तिलम् (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 2)

यह 'गंधर्व' का सार-संग्रह है जो वैदिक संगीत का प्रतिरूप या प्रतिपक्ष और अवैदिक संगीत का मूलाधार है। यह अपनी ही कोटि का एक अनुपम ग्रंथ है और इसलिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत के नाट्यशास्त्र में किए गए इस विषय के प्रतिपादन का निचोड़ प्रस्तुत करता है और साथ ही एक तरह से उसका अनुपूरक भी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : मुकुन्द लाठ
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1988, पृष्ठ : xvii + 236, मूल्य : 300 रुपए

6. श्रीहस्तमुक्तावली (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 3)

भारत के विभिन्न भागों में 17वीं शताब्दी तक संगीत, नृत्य और नाट्य विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी जाती रहीं। 12वीं से 16वीं सदी के बीच क्षेत्रीय शैलियां उभर आई। सभी भागों में मध्यकालीन ग्रंथ खोजे गए हैं। उनमें से एक है *श्रीहस्तमुक्तावली* जो पूर्वी परम्परा से सम्बद्ध है। यद्यपि इसके उद्भव के विषय में अस्पष्टता है, इसका पाठ मैथिली तथा असमिया प्रतिलिपियों में पाया गया है। लेखक ने अपने प्रयास को 'हस्त' (हस्त संकेतों) के विस्तृत विवेचन तक ही सीमित रखा है। डॉ. महेश्वर नियोग ने बड़ी सावधानी से इसके पाठ का सम्पादन तथा अनुवाद किया है और साथ ही नाट्यशास्त्र तथा *संगीतरत्नाकर* की परम्परा से उसकी समानताओं तथा भिन्नताओं को दर्शाया है। यह ग्रंथ उन हस्तसंकेतों की भाषा पर पर्याप्त प्रकाश डालता है जो सम्भवत: पूर्वी प्रदेशों में अपनाए जाते रहे होंगे।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : महेश्वर नियोग
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : xii + 205, मूल्य : 300 रुपए

7. कविकर्णेरपाला, 4 खंडों में (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 4, 5, 6, 7)

17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बंगला भाषा में रचित कविकर्ण के "सोलोपाला" यानी सत्यनारायण के गुणानुवाद के 16 पदों का गायन समकालीन उड़ीसा में व्यापक रूप से प्रचलित है। सत्यनारायण की पूजा और व्रतकथा का वाचन तथा उसके पश्चात् "शिरनी" खास किस्म के मुस्लिम प्रसाद का वितरण जो "सत्यपीर" (जैसा कि पाला/पदों में सत्यनारायण

को कहा गया है) को चढ़ाया जाता है। भारत में सर्वत्र हिन्दुओं द्वारा इसी समेकित प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इन पालाओं सहित, सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध व्रत कथाओं का उद्‌गम स्कंद पुराण के रेवा खंड में पाया जाता है परन्तु 'सत्यपीर' शब्द किसी भी व्रत कथा में नहीं मिलता, केवल कविकर्ण के पालाओं में ही प्रयुक्त हुआ है। एक मुस्लिम फ़कीर का अपने सभी पालाओं में उल्लेख करके और 'शिरनी' को 'प्रसाद' के तौर पर बंटवा कर कविकर्ण ने धार्मिक तथा कर्मकांडीय धरातलों पर सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है जो राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक बहुमूल्य योगदान है। कविकर्ण ने अपने 16 पालाओं को जिस क्रम में रखना चाहा था उसी क्रम को इस पुस्तक में अपनाया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : विष्णुपद पाण्डा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : ci + 1182, मूल्य : 1200 रुपए (4 खण्ड).

8. बृहद्‌देशी खण्ड-1 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 8)

संगीत के क्षेत्र में बृहद्देशी पहला उपलब्ध ग्रंथ है जिसमें *राग* का वर्णन किया गया है, *सारिगम* के विषय में बताया गया है, *श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना* आदि के बारे में नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है और देशी तथा उसके प्रतिरूप मार्ग की संकल्पना को प्रतिष्ठापित किया गया है।

यद्यपि पाण्डुलिपि की खोज के अभाव में, यह ग्रंथ अभी तक अपूर्ण है, तथापि यह संस्करण, जहां तक इसका व्याप्ति क्षेत्र है जो कि पर्याप्त रूप से विस्तृत है, अध्ययन एवं शोध के प्रयोजन से काफी उपयोगी होगा। सम्पूर्ण कृति तीन खण्डों में प्रकाशित की जाएगी।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1992, पृष्ठ : xviii + 194, मूल्य : 275 रुपए.

9. कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देशः (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 9)

कालिकापुराणे मूर्तिविनिर्देशः, *कालिकापुराण* में से लिए गए लगभग 550 श्लोकों का संग्रह है, जिसमें अनेक देवी-देवताओं तथा अंशावतारों का शारीरिक वर्णन किया गया है। उनमें कुछ तो केवल संकल्पनात्मक हैं, किन्तु कुछ अन्य पत्थर तथा धातु प्रतिमाओं के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

कालिकापुराण ईसा की नौवीं शताब्दी के अंतिम दशकों या दसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल का एक महत्त्वपूर्ण उप-पुराण है। इसकी रचना प्राचीन असम (कामरूप) में मातृदेवी कामाख्या के गुणानुवाद और उसकी आराधना की कर्मकाण्डीय विधि बताने के लिए की गई थी। *कालिकापुराण* के विभिन्न अध्यायों में विभिन्न देवी-देवताओं के विषय में बिखरे हुए श्लोकों को प्रत्येक देवता का सम्पूर्ण चित्रण प्रस्तुत करने के लिए देवतानुसार संकलित किया गया है। संस्कृत मूलपाठ के साथ-साथ प्रत्येक श्लोक का अंग्रेजी में यथार्थ अनुवाद भी दिया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : विश्वनारायण शास्त्री
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xxxiv + 159, मूल्य : 250 रुपए

10. बृहद्देशी खण्ड - 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 19)

इस खण्ड में *बृहद्देशी* के *प्रबन्धाध्याय* तक का सम्पूर्ण उपलब्ध पाठ प्रस्तुत किया गया है। यह *जाति* के विवेचन से प्रारंभ होकर *ग्रामराग* तथा *याष्टिक* एवं शार्दूल के अनुसार उनकी परिभाषाएं देते हुए *देशी रागों* का आंशिक वर्णन करके **प्रबन्धाध्याय** के साथ समाप्त हो जाता है। इस खण्ड के मूलपाठ का कलेवर प्रथम खण्ड में प्रस्तुत पाठ से लगभग दोगुना है। मूल पाठ में दिए गए इन विषयों के विवेचन की प्रमुख विशेषताएँ 'विमर्श' में यत्र-तत्र इंगित की गई हैं। किन्तु ये केवल बिन्दुओं के अनुसार ही स्पष्टीकरण हैं। तृतीय खण्ड में जो समालोचना दी जाएगी वही सम्पूर्ण मूल ग्रंथ की विषयवस्तु की समीक्षा प्रस्तुत करेगी। उसमें पूर्ववर्ती तथा परवर्ती ग्रंथों के माध्यम से दृष्टिपात किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xviii + 320, मूल्य : 300 रुपए

11. काण्वशतपथब्राह्मणम् खण्ड-1 व 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 12)

यह पहला अवसर है जबकि शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा के शतपथ ब्राह्मण का एक सम्पूर्ण आलोचनात्मक संस्करण अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है। इस संस्करण में, तेलुगु लिपि में प्रकाशित पाठों के अलावा, कुछ अन्य पाण्डुलिपियों में उपलब्ध पाठान्तरों को भी ध्यान में रखा गया है, जो प्रो. कैलेंड को उपलब्ध नहीं थे जिन्होंने इसके प्रथम सात कांडों का समालोचनात्मक संस्करण निकाला था। यह सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत करने का भी प्रथम प्रयास है निस्संदेह माध्यन्दिन तथा काण्व शाखा का शतपथ ब्राह्मण के पाठों में उसके अष्टम से षोडश तक के काण्डों में कोई विशेष अंतर नहीं है और पूर्वोक्त का प्रो0 ईगलिंग का अनुवाद उपलब्ध है, फिर भी श्रौत यज्ञों के कर्मकांडों में सक्रिय रूप से संलग्न परम्परागत विद्वानों के साथ विशद विचार-विमर्श के फलस्वरूप परवर्ती भाग का नए सिरे से अनुवाद करना आवश्यक समझा गया ।

पाठान्तर-विशेष को अपनाने का आधार बताने के लिए मूलपाठ संबंधी टिप्पणियां मूलपाठ के अध्ययन के फलस्वरूप उत्पन्न हुए कुछ चुने हुए प्रश्नों पर चर्चा स्वरूप 'विमर्श' शीर्षक खण्ड; ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार विषयवस्तु की विस्तृत सूची और पारिभाषिक शब्दों की सूची इस प्रयास की कुछ अतिरिक्त विशिष्टताएँ हैं। श्रौत यज्ञों के विशेषज्ञ परम्परागत विद्वानों से प्राप्त सुझाव और मार्गदर्शन इस संस्करण की श्रेष्ठता के प्रतीक हैं।

प्रथम खण्ड में पहले काण्ड का पाठ अनुवाद के साथ पाठविमर्श सहित प्रस्तुत किया गया है। दूसरा तथा तीसरा खण्ड पाठ्य टिप्पणियों के साथ समाहित है। शेष भाग को कलामूलशास्त्र ग्रंथमाला के अन्य खण्डों में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सी.आर. स्वामिनाथन
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xxiii + 168, मूल्य : 300 रुपए (खण्ड-I)
1997, पृष्ठ : xxv + 297, मूल्य : 550 रुपए (खण्ड-II)

12. स्वायम्भुवसूत्र-संग्रह : (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 13)

स्वायम्भुवसूत्र संग्रह : शैवसिद्धान्त के 28 आगमों की परम्परागत सूची में तेरहवां आगम है। शैव सम्प्रदाय के प्राचीनतम आचार्यों में से एक आचार्य सद्योज्योति ने इसके विद्यापाद खण्ड पर एक टीका लिखी थी। इसमें जिन विषयों का विवेचन किया गया है वे हैं : पशु अर्थात् बंधनयुक्त जीवात्मा; पाश यानी बंधन; अनुग्रह अर्थात् प्रभुकृपा और अध्वन् यानी मुक्ति प्राप्ति के मार्ग। सद्योज्योति ने इन संकल्पनाओं द्वारा उठाई गई दार्शनिक समस्याओं पर सुनिश्चित एवं आत्यन्तिक दृष्टिकोण अपनाया है। उसने उनके कर्मकांडीय आधार पर बल दिया है, जो कि तांत्रिक साहित्य की मूल प्रवृत्ति और शैव धर्म का मर्म है। इस पुस्तक में सद्योज्योति की टीका के मूलपाठ का समालोचनात्मक सम्पादन करके उसे अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : पियरे सिलवैन फिलियोजा

सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xxxviii + 144, मूल्य : 200 रुपए

13. मयमतम् खण्ड-1 व 2 (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 14 और 15)

मयमतम् एक वास्तुशास्त्रीय अर्थात् वास (घर) विषयक ग्रंथ है और इस प्रकार यह देवी-देवताओं तथा मनुष्यों के वासगृहों के संबंध में उनके निर्माणस्थल से लेकर मंदिर की दीवारों के प्रतिमा विज्ञान तक सभी पक्षों का विवेचन करता है। इसमें ग्रामों एवं नगरों तथा देवालयों, घरों, भवनों एवं प्रासादों के यथार्थ विवरण प्रचुर मात्रा में दिए गए हैं। यह ग्रंथ मकान के लिए उचित स्थान एवं दिशा, सही आयाम और उपयुक्त सामग्री के चयन के बारे में निर्देश देता है। यह एक ओर वास्तुविद् के लिए नियमपुस्तक है तो दूसरी ओर जनसाधारण के लिए मार्गदर्शक पुस्तक। दक्षिण भारत के पारम्परिक स्थपतियों के चिन्तन की उपज यह पुस्तक इस समय पर्याप्त रुचि का विषय है जब सभी क्षेत्रों में उपलब्ध तकनीकी परम्पराओं को इस उद्देश्य से जांचा-परखा जा रहा है कि क्या आज उनका उपयोग हो सकता है।

डॉ. ब्रूनो दाजां द्वारा तैयार किए गए इस द्विभाषी संस्करण में समालोचनात्मक रूप में सम्पादित संस्कृत मूलपाठ दिया गया है जो कि इसी सम्पादक द्वारा पहले सम्पादित उस संस्करण का संशोधित एवं परिष्कृत रूप है जो पांडिचेरी के फ्रेंच इंडोलॉजी संस्थान के प्रकाशनों में प्रकाशन संख्या-40 के रूप में प्रकाशित हुआ है। पूर्व-प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद भी अब प्रचुर टिप्पणियों के साथ संशोधित कर दिया गया है। इस संस्करण की उपयोगिता इसमें विश्लेषणात्मक विषयवस्तु की तालिका तथा विस्तृत शब्दावली जोड़ देने से और भी बढ़ गई है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : ब्रूनो दाजां
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : ci + 978, मूल्य : 1000 रुपए

14. शिल्परत्नकोश (क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 16)

शिल्परत्नकोश 17वीं शताब्दी में उडीसा के स्थापक निरंजन महापात्र द्वारा रचित ग्रंथ है जिसमें मंदिर के सभी भागों और उड़ीसा के मुख्य-मुख्य मंदिर रूपों, जैसे 'मुंजश्री' तथा 'खाकार' का वर्णन किया गया है। इसमें एक खंड मूर्तिकला (प्रासादमूर्ति) पर भी है और मूर्ति निर्माण (प्रतिमालक्षण) पर एक परिशिष्ट जोड़ा गया है। यह ग्रंथ यद्यपि इसमें वर्णित मंदिरों के निर्माण काल से बहुत बाद की रचना है, अपने समय की जीवंत परम्परा का चित्रण करता है और उड़ीसा के मंदिर स्थापत्य संबंधी शब्दावली को स्पष्ट करने में बहुत सहायक है। तथापि इस ग्रंथ का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने श्रीचक्र के साथ मंजुश्री मंदिर के तादात्म्य का निरूपण किया है जिसके फलस्वरूप लेखकों को भुवनेश्वर के राजराणी मंदिर के बारे में यह जानने में सहायता मिली है कि यह मंदिर श्रीचक्र के रूप में राजराजेश्वरी को समर्पित है।

इस प्रकाशन का मूल पाठ तीन तालपत्रीय पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित तथा अनूदित किया गया है और साथ में बहुत से चित्र (रेखाचित्र एवं तस्वीरें) दिए गए हैं। साथ में दी गई शब्दावली पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ाती है। यह ग्रन्थ अब तक प्रकाशित शिल्प/वास्तु साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाला एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है और यह उड़ीसा के मंदिर स्थापत्य में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं के लिए बहुत उपयोगी होगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक एवं अनुवादन : बेट्टिना बॉमर तथा राजेन्द्र प्रसाद दास
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xii + 229, प्लेटें, मूल्य : 400 रुपए

15. नर्तननिर्णय-खण्ड-1 व 2(क.मू.शा. ग्रंथमाला सं. 17 व 18)

यह भारतीय संगीत एवं नृत्य पर, संगीत रत्नाकर के बाद रचे जाने वाले ग्रंथों में से एक है। यह अपने काल(ईसा की 16वीं शताब्दी) की इन कलाओं के सिद्धान्त और व्यवहार दोनों पक्षों की जानकारी के लिए एक प्रामाणिक स्रोत है। यद्यपि यह एक सीधी-सादी और सुस्पष्ट साहित्यिक शैली में लिखा गया है तथापि यह अपने चित्रोपम वर्णनों के माध्यम से विशद कल्पनाशीलता प्रस्तुत करता है।

एक अद्वितीय क्रमबद्ध योजना के अन्तर्गत, *नर्तननिर्णय* में उसके प्रथम तीन अध्यायों में नृत्य के प्रति क्रमशः करताल वादक, मृदंग वादक और गायक के योगदान का वर्णन करने के बाद अंतिम तथा सबसे लम्बे चतुर्थ अध्याय में नर्तक की कला का विवेचन किया गया है। इस अध्याय में कला से संबंधित वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण तथा मुहावरे के विषय में ही नहीं, अपितु उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत की कुछ नृत्य शैलियों समेत (कुछ को तो वस्तुतः निरूपित किया गया है) प्रस्तुति संबंधी परम्पराओं तथा रंगपटल में भी नई विशेषताओं का समावेश किया गया है। इसमें बंध नृत्य तथा अनिबंध नृत्य का जो विशद विवेचन प्रस्तुत किया है वह परम्परावादी तथा नवाचारवादी दोनों प्रकार के नर्तकों के लिए गम्भीरतापूर्वक ध्यातव्य है।

इस ग्रंथ का सम्पूर्ण मूल पाठ एक विस्तृत एवं विद्वत्तापूर्ण टीका के साथ 3 खण्डों में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : आर. सत्यनारायण
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xiii + 357, मूल्य : 450 रुपए.(खण्ड-।)
1996, पृष्ठ : xii + 491, मूल्य : 650 रुपए(खण्ड-।।).

16. रिसाल-ए-रागदर्पण

तर्जुमा-ए-मानकुतूहल और रिसाल-ए-रागदर्पण एक संयुक्त ग्रंथ है जिसकी रचना नवाब सैफ ख़ान जो फ़कीरूल्लाह के नाम से ज्यादा मशहूर थे, ने की थी। रिसाल-ए-रागदर्पण तत्कालीन व्यवहृत संगीत विषय की एक मौलिक रचना है जबकि तर्जुमा-ए-मानकुतूहल अनुवाद (तर्जुमा) मात्र है।

जैसा कि पाण्डुलिपि के पन्ने पर दर्ज किया गया है, फकीरूल्लाह इस नुस्खा (पाण्डुलिपि) के मालिक व मुसन्निफ़ (स्वामी एवं लेखक) दोनों थे। यह स्पष्ट है कि फकीरूल्लाह ने अपने इस अनुवाद तथा मूल रचना (तस्नीफ़) दोनों को एक साथ वर्ष 1076 हिजरी (1666 ई0) मे पूरा किया था।

फ़कीरूल्लाह का यह ग्रंथ 10 बाबों (अध्यायों) में है। पहले बाब में बताया गया है कि इस ग्रंथ की रचना क्यों की गई। दूसरे बाब में भिन्न-भिन्न रागों की पहचान बताई गई है। तीसरा बाब उन रागों से संबंधित ऋतु-काल के बारे में है जिसमें यह भी बताया गया है कि अमुक राग के लिए दिन अथवा रात का कौन सा प्रहर/समय उपयुक्त है। चौथा सुर (स्वर) बोध के विषय में, पांचवां विभिन्न साज़ (वाद्यों) की सही पहचान के बारे में है। छठे बाब में गोइन्दों (गीतकार तथा संगीतकार) के दोषों को स्पष्ट किया गया है। सातवां बाब आवाज की खासियतों (कण्ठ की विशेषताएं), उनकी श्रेणियों तथा हंजरा (स्वर यंत्र) के बारे में है। आठवें बाब में उस्ताज-ए-कामिल (कला-गुरु) की विशेषताओं का विवेचन किया गया है। नवां बाब वृंद (वाद्य वृंद) (ऑर्केस्ट्रा) की समझ और एक साथ मिलकर वाद्य बजाने के लाभों के बारे में है। दसवें बाब में समकालीन गोइन्दों (कवि संगीतज्ञों) का परिचय दिया गया हैं।

'खातिमा' यानी समाप्ति के रूप में पुस्तक के अंत में तत्कालीन कश्मीरी संगीत के विषय में लेखक ने अपनी संक्षिप्त टिप्पणी दी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : शाहब सरमदी
सह-प्रकाशन: इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-110 007
1996, पृष्ठ : ixviii + 314, प्लेटें 4; मूल्य : 500 रुपए

कलासमालोचन ग्रंथमाला

17. राम लेजेण्ड एण्ड राम रिलीफ्स इन इंडोनेशिया

विलियम स्टटरहाइम द्वारा 1925 में लिखित *राम लेजेण्ड एण्ड राम रिलीफ्स* पुस्तक अपनी पुरातत्त्वीय सटीकता के कारण तथा एशियाई कला के अध्ययन के लिए भाषायी विश्लेषण के सिद्धान्तों को लागू करने की नई विधि का सूत्रपात करने के कारण भी एक उच्च कोटि की कृति मानी गई है। इसमें इंडोनेशिया के प्रम्बनन मंदिर का

विवेचन किया गया है।

लेखक : विलियम स्टटरहाइम
आमुख : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1989, पृष्ठ : xxx + 287 + 230 प्लेटें, मूल्य : 600 रुपए

18. द थाउजेंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर

कला मर्मज्ञों एवं इतिहासज्ञों ने अवलोकितेश्वर की संकल्पना की नानाविध व्याख्या की है। यद्यपि अवलोकितेश्वर का मूल संस्कृत पाठ लुप्त हो गया फिर भी इसकी संकल्पना तथा छवि तिब्बत, चीन तथा जापान तक पहुंच गई। पुस्तक का मूल पाठ लिखित तथा मौखिक अनेक रूपों में उपलब्ध है।

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
मूलपाठ : लोकेश चन्द्र
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1988, पृष्ठ : viii + 303, मूल्य : 500 रुपए

19. सलेक्टेड् लेटर्स आफ आनन्द के. कुमारस्वामी (अप्राप्य)

डा0 आनन्द के. कुमारस्वामी की ग्रंथमाला के संग्रह ग्रंथ लेखक के संशोधनों तथा परिवर्तनों के साथ, विषयानुसार सुव्यवस्थित रूप में प्रकाशित किए जायेंगे। इस ग्रंथमाला में उनके द्वारा, श्रीलंका, भारत, एशिया तथा यूरोप के शिल्प, कलाओं, खनिजों तथा भू-विज्ञान पर लिखी गई समग्र सामग्री सम्मिलित की गई है। सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनंद कुमारस्वामी इस ग्रंथमाला का पहला पुष्प है। इस खंड में सम्मिलित किए गए पत्र जो पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं, उनसे इस विलक्षण मनीषी के अनमनीय व्यक्तित्व का पता चलता है जो किसी प्रकार के सिद्धान्तों, विचारधाराओं अथवा राजनीतिक या दार्शनिक मतों या वादों में विश्वास नहीं करता था। एक भू-वैज्ञानिक के रूप में अपने प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त वैज्ञानिक सूक्ष्मता के साथ अपनी संवेदनशीलता का समन्वय करते हुए डॉ. आनन्द के0 कुमारस्वामी ने इतिहास, दर्शन, धर्म, कला एवं शिल्प की विभिन्न विधाओं का अवगाहन किया है।

सम्पादक : एलविन मूर जूनियर और राम पी0 कुमारस्वामी
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1988, पृष्ठ : xxxiii + 479, मूल्य : 250 रुपए

20. सलेक्टेड् लेटर्स आफ रोमांरोला (अप्राप्य)

ये पत्र रोमांरोला की गम्भीर कला मर्मज्ञता और अत्यन्त हृदयस्पर्शी अन्तर्वैयक्तिक संवेदनशीलता की सुकोमलता के द्योतक हैं। ये उनकी इस प्रतिबद्धता को प्रमाणित करते हैं कि समग्र विश्व आध्यात्मिक दृष्टि से एक है। मानवता–देश व काल की सीमाओं में नहीं बंधी है।

सम्पादक : फ्रांसिस डोर एवं मैरी लौरे प्रेवोस्ट
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1990, पृष्ठ : xvii + 139, मूल्य : 125 रुपए

21. वॉट इज़ सिविलाइजेशन (अप्राप्य)

इस खण्ड में प्रकाशित बीस निबंधों में ऐसे आधारभूत प्रश्न पूछे गए हैं जो कुमारस्वामी की अद्वितीय शैली में मर्मवेधी होने के साथ-साथ तीक्ष्ण भी हैं। प्रथम निबंध में "सभ्यता" शब्द के मूल, उसके अर्थ तथा संदर्भ की यूनानी तथा संस्कृत भाषाओं में गहराई तक खोज की गई है और एक साथ समग्र पाश्चात्य तथा प्राच्य सभ्यताओं का आद्योपांत विवेचन किया गया है

सम्पादक : आनंद के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : सैयद हुसैन नस्र
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1989 पृष्ठ : xi + 193, मूल्य : 250 रुपए

22. इस्लामिक आर्ट एण्ड स्पिरिच्युअलिटी

यह अंग्रेजी भाषा में ऐसी पहली पुस्तक है जिसमें इस्लामिक कला, जिसमें रूपंकर कलाएँ ही नहीं, साहित्य एवं संगीत भी शामिल हैं, के आध्यात्मिक महत्त्व का विवेचन किया गया है। इसमें इस्लाम की विभिन्न कलाओं के इतिहास का विवेचन

करने या उनका विवरण देने के बजाय, विद्वान् लेखक ने इन कलाओं के रूप, विषयवस्तु, प्रतीकात्मक भाषा, अर्थ तथा उनकी उपस्थिति का इस्लामिक उद्भावना के मूल स्रोतों के साथ संबंध जोड़ा है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड़, नई दिल्ली-110001
1990, पृष्ठ : x + 213, मूल्य : 300 रुपए

23. टाइम एण्ड ईटर्निटी

ऐस्कोना, स्विट्जरलैंड में 1947 में मुद्रित इसका प्रथम संस्करण कुमारस्वामी का अंतिम ग्रंथ था जो उनके जीवनकाल में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में वे यह प्रतिपादन करते हैं कि यद्यपि हम काल की सीमाओं में रहते हैं पर हमारी मुक्ति अनंतता में ही निहित है। सभी धर्म यह अंतर स्पष्ट करते हैं अर्थात् यह बताते हैं कि केवल शाश्वत् या चिरस्थायी क्या है और अनादि, अनन्त क्या है।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
सिलेक्ट बुक्स, 35/3 ब्रिगेड रोड क्रॉस, बंगलौर-560 001
1990, पृष्ठ : viii + 107, मूल्य : 110 रुपए

24. टाइम एण्ड ईटर्नल चेंज

मिथक और पुरातत्त्वीय खगोल विज्ञान के अध्येता तथा खगोल भौतिकी में पारंगत होने के नाते, जॉन मैक्किम मेलविले काल एवं परिवर्तन के संबंध में अनेक रूपकों के माध्यम से पाठक का मार्गदर्शन करते हुए बताते हैं कि काल के स्वरूप के विषय में प्राचीन ऋषियों को जो अन्तर्बोध हुए थे उनमें से कितनों को आधुनिक भौतिकी तथा खगोल विज्ञान ने अपनाया है।

लेखक : जॉन मैक्किम मेलविले
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा0 लि0,
एल0 10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1990, पृष्ठ : x + 112, मूल्य : 150 रुपए

25. प्रिंसिपल्स ऑफ कॉम्पोजिशन इन हिन्दू स्कल्पचर

इस पुस्तक में हिन्दू मूर्तिकला के अब तक अछूते रहे एक पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। इसमें पूर्व मध्यकालीन मूर्तिकला का विवेचन है और इस कला के ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और सौंदर्यशास्त्रीय पक्षों को न छूते हुए, इससे अनन्य रूप से संरचना के प्रश्न पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया है।

लेखक : एलिस बोनर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा0 लि0,
41, यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110 007
1990, पृष्ठ : xvii + 274 + चित्र, मूल्य : 450 रुपए

26. इन सर्च ऑफ ऐस्थेटिक्स ऑफ दि पपेट थिएटर

पुत्तलि रंगमंच के एक सर्वाधिक सृजनशील समकालीन कलामर्मज्ञ द्वारा रचित यह पुस्तक पुत्तलिकला जगत के सौंदर्य शास्त्र से संबंधित है। लेखक ने यह दर्शाया है कि पुत्तलिकला में *दिक्* और *काल* का विवेचन एक ही मंच पर कैसे किया जा सकता है जैसा कि ब्रह्मांड, आकाश और विभिन्न कालक्रमों का विवेचन किया जाता है।

लेखक : माइकेल मेश्के, मार्गरेटा सोरेनसन के सहयोग से
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स प्रा. लि.,
एल-10 ग्रीन पार्क एक्सटेशंन, नई दिल्ली-110 016
1992, पृष्ठ : 176, मूल्य : 300 रुपए

27. एलोरा : कॉनसेप्ट एण्ड स्टाइल

यह ग्रंथ एलोरा की विश्वविख्यात शैलकृत्त गुफाओं के समन्वयात्मक विवेचन का निश्चयात्मक प्रयास है। इसका उद्देश्य भारतीय कला के अध्ययन के लिए एक रीतिनीति निर्धारित करने और कला के सामान्य इतिहास के प्रति इसके महान् योगदान की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

लेखक : कारमेल बर्कसन
प्राक्कथन : मुल्कराज आनंद
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37 हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1992, पृष्ठ : 392 + 270 चित्र, मूल्य : 750 रुपए

28. अंडरस्टैंडिंग कुचिपुड़ी

इस शताब्दी में पुनरुज्जीवित की गई भारतीय नृत्य की विभिन्न शैलियों/विधाओं में से कुचिपुडी नृत्य शैली का इतिहास सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक दोनों स्तरों पर बहुत की रोचक है। इसके अतिरिक्त, इस शैली के विकास का इतिहास अभी बन रहा है और इसका समकालीन पुनरुत्थान एवं इसकी लोकप्रियता मंचीय कलाओं के गतिविज्ञान पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। कुचिपुड़ी का इतिहास न केवल मंदिर तथा प्रांगण के अन्योन्याश्रय संबंध को दर्शाता है अपितु नगरीय एवं ग्रामीण, नारी एवं पुरुष तथा तमिलनाडु एवं आन्ध्र प्रदेश के पारस्परिक संवाद को भी प्रकट करता है।

लेखक : गुरु सी.आर. आचार्य तथा मल्लिका साराभाई
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
दर्पण एकेडमी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स, अहमदाबाद,
1992, पृष्ठ : 212, मूल्य : 200 रुपए

29. ऐसेज इन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर

भारत में स्थापत्य कला के इतिहास के प्रति कुमारस्वामी का योगदान सीमित होते हुए भी गुरु-गंभीर था। विशेष रूप से आदि भारत के असाधारण काष्ठ स्थापत्य के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से उनके द्वारा किया गया ग्रंथो एवं स्थापत्य कृतियों का विश्लेषणात्मक विवेचन अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण था और एक ऐसा मूलाधार था जिसके ऊपर भारत की उत्कृष्ट स्थापत्य परम्परा के सभी परवर्ती इतिहासों का निर्माण किया गया है।

प्रधान सम्पादक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादक : मिकाइल डब्लू. माइस्तर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.,
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1992, पृष्ठ : xxxviii + 151, मूल्य : 400 रुपए

30. रिलीजन एण्ड दि एनवाइरनमेंटल क्राइसिस (एक प्रबन्ध ग्रंथ)

कुछ वर्ष पहले दिए गए एक स्मरणीय व्याख्यान में, सैयद हुसैन नस्र ने पर्यावरण के उस संकट के कारण का गंभीर विवेचन किया था जिसने आज विकसित तथा विकासशील दोनों वर्गों के विश्व को अपने चुंगल में फंसा लिया है।

लेखक : सैयद हुसैन नस्र
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1993, पृष्ठ : 32, मूल्य : निर्मूल्य

31. स्पिरिच्युअल अथॉरिटी एण्ड टेम्पोरल पावर इन दि इंडियन थ्योरी ऑफ गवर्नमेंट

कुमारस्वामी ने मूलपाठ्य स्रोतों के आधार पर भारतीय शासन सिद्धान्त की व्याख्या की है। समुदाय का कल्याण आज्ञापालन तथा निष्ठा की लम्बी शृंखला पर निर्भर करता है, जैसे प्रजा की राजा तथा पुरोहित, दोनों के प्रति भक्ति एवं निष्ठा, राजा की पुरोहित के प्रति निष्ठा और राजराजेश्वर के रूप में धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों के प्रति सभी की निष्ठा।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादकगण : केशवराम एन.अय्यंगर तथा राम.पी. कुमारस्वामी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.
लाइब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड नई दिल्ली-110 001
1993, पृष्ठ : x + 127, मूल्य : 200 रुपए.

32. यक्षज : एसेज इन दि वाटर कॉस्मालजी

कुमारस्वामी ने वैदिक, ब्राह्मण तथा उपनिषद् साहित्य के संदर्भ में यज्ञों की उत्पत्ति की जांच की और आर्येत्तर तथा आर्य-पूर्व संस्कृति के अधिक महत्त्वपूर्ण काल में यक्षों तथा यक्षिणियों की संकल्पना के विषय में स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने के लिए सामग्री एकत्र की। कलात्मक मूलभाव को स्पष्ट करते हुए, उन्होंने जलीय ब्रह्मांड विज्ञान के अनछुए क्षेत्रों का गहराई से अवगाहन किया।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी
सम्पादक : पॉल श्रोडर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए.,
लाईब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001
1993, पृष्ठ : xvii + 339, मूल्य : 500 रुपए.

33 हजारी प्रसाद द्विवेदी के पत्र

पुस्तक में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी को लिखे गए पत्रों का संग्रह है। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के गुरु, मार्गदर्शक तथा उससे भी अधिक उनके मित्र थे। आचार्य द्विवेदी अपने सुख-दुख की बात चतुर्वेदी जी से कहा करते थे। इस पृष्ठभूमि के साथ, ये पत्र द्विवेदी जी के व्यक्तिगत जीवन की कई घटनाओं का चित्रण करते हैं। और विभिन्न साहित्यिक समस्याओं के विषय में उनके विचारों से अवगत होने का अवसर देते हैं, जो संभवत: औपचारिक रचनाओं में नहीं मिल सकता।

ये पत्र ऐसे जीवंत प्रलेख हैं जो एक साहित्य पंडित तथा शोधकर्ता दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। ये पत्र आचार्य द्विवेदी के जीवन पर शोध कार्य करने के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

सम्पादक : मुकुन्द द्विवेदी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,
1-बी., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002
1994, पृष्ठ : 205, मूल्य : 125 रुपए

34. एक्सप्लोरिंग इंडियाज सैक्रिड आर्ट

यह खण्ड स्टेला क्रैमरिश की चुनी हुई रचनाओं का संग्रह है। स्टेला भारतीय कला तथा उनके धार्मिक संदर्भ की अग्रणी व्याख्याकार थी। यह ग्रंथ स्टेला के समग्र व्यक्तित्व व कृतित्व का ही नहीं, बल्कि उनके भावबोध तथा सूक्ष्मदृष्टि का रस लेने का एक साधन है।

इस खण्ड में संगृहीत शोधपत्र क्रैमरिश द्वारा लगभग पचास वर्षों में लिखे गए थे जो भारतीय कला के सांस्कृतिक तथा प्रतीकात्मक मूल्यों पर बल देते हैं। प्रथम भाग में कलाओं के सामाजिक तथा धार्मिक संदर्भों की चर्चा की गई है। उसके बाद के लेख मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला तथा चित्रकला के औपचारिक तथा तकनीकी पक्षों का उनके प्रतीकात्मक अर्थ के संदर्भ में विवेचन करते हैं। ग्रंथ 150 से भी अधिक चित्रों से सुसज्जित है जो स्टेला की रचनाओं को महत्त्वपूर्ण दृश्य आयाम प्रदान करते हैं। इसमें बारबरा स्टोलर मिलर द्वारा लिखा गया एक जीवनी लेख भी है।

लेखक : स्टेला क्रैमरिश
सम्पादक : बारबरा स्टोलर मिलर
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.,
41, यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, नई दिल्ली-110 007
1994, पृष्ठ : xii + 356, मूल्य : 600 रुपए

35. विद्यापति पदावली

मैथिली भाषा के अत्यन्त विख्यात कवि विद्यापति ठाकुर ने पदों की एक माला की रचना की, विषय था राधा एवं कृष्ण के नाम से परमात्मा तथा जीवात्मा की प्रणय लीला। उन्होंने ग्रामीण भारत की रोजमर्रा की साधारण गतिविधियों को आध्यात्मिक महत्त्व प्रदान किया। उनकी राधा एक गांव की गोरी है जो अपने परमप्रभु के प्यार की दीवानी है और उसी से प्रेमक्रीड़ाएँ करती है। इसी प्रकार कृष्ण भी कोई ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि परब्रह्मपरमात्मा के अवतार हैं। इस प्रकार एकात्मता तथा समग्रता के सिद्धान्त को बोधगम्य विधि से प्रतिपादित किया गया है।

कुमारस्वामी ने राधा कृष्ण की प्रेमलीलाओं को अत्यन्त साधारण रीति से व्यक्त करने वाले इन पदों के बहु-स्तरीय

प्रतीकवाद को अंग्रेजी भाषा में व्यक्त करने की आवश्यकता महसूस की और उसके फलस्वरूप इस पुस्तक का निर्माण हुआ।

अपने वर्तमान रूप में इस पुस्तक में पदावली का बंगला तथा देवनागरी लिपियों में मूलपाठ दिया गया है और साथ ही उनका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है।

लेखक : विद्यापति ठाकुर
अनुवादक : आनन्द के. कुमारस्वामी तथा अरुण सेन
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
क्लैरियन बुक्स, 18-19, जी.टी. रोड,
दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110 095
1994, पृष्ठ : 360, मूल्य : 550 रुपए

36. थर्टी सांग्स फ्रॉम पंजाब एण्ड कश्मीर

श्रीमती एलिस कुमारस्वामी ने लेखिका के रूप में भारतीय नाम रतन देवी का प्रयोग करते हुए, ये गीत रिकार्ड किए थे जो आनन्द कुमारस्वामी की प्रस्तावना तथा अनुवाद के साथ इस पुस्तक में छपे हैं। एलिस ने कपूरथला के उस्ताद अब्दुल रहीम से भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखा था, और आगे चलकर उन्होंने अपने सीखे हुए गीतों में से कुछ को संगीत तथा शब्दों में लिपिबद्ध किया। उनके द्वारा स्वरबद्ध किए गए तीस गीत ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, दादरा आदि शैलियों तथा राग-रागिनियों में रचे गए हैं।

प्रस्तुत खण्ड में उपर्युक्त संकलन को भाग-एक के रूप में शामिल किया गया है और भाग-दो में इन गीतों को सारिगम स्वरांकन के साथ देवनागरी लिपि में, हिन्दी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया गया है और साथ ही राग, ताल तथा मूलपाठ पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में टिप्पणियां दी गई हैं। कुशल संगीतज्ञा प्रो. प्रेमलता शर्मा ने बड़ी मेहनत करके भाग-दो का पाठ तैयार किया है।

सम्पादक : प्रेमलता शर्मा
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1994, पृष्ठ : xv + 177, मूल्य : 500 रुपए

37. इंडियन आर्ट एण्ड कॉनिसारशिप

यह प्रकाशन ऐसे 25 निबंधों का संग्रह है जो ब्रिटिश म्यूजियम के भारतीय कला विभाग के भूतपूर्व कीपर डूगलस बैरेट के भारतीय कला अध्ययन के प्रति योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा लिखे गए हैं। ये निबंध 5 भागों में विभाजित हैं : भाग 1 प्राचीन भारत, भाग 2 उत्तर भारतीय चित्रकला, भाग 3 दक्षिण भारतीय मूर्तिकला,

भाग 4 भारतीय चित्रकला, भाग 5 इस्लामिक कला। सभी निबंध चित्रों से सुसज्जित किए गए हैं, जिनमें से कुछ रंगीन चित्र भी हैं। इसमें भारतीय कला विषय पर डूगलस बैरेट के लेखों की संपूर्ण सूची भी शामिल की गई है।

योगदान करने वाले लेखक हैं : टी.के. विश्वास, विद्या देहजिया, साइमन डिग्बी, क्लौस फिशर, बैसिल ग्रे, जॉनी गाइ, जे.सी. हार्ले, हरबर्ट हर्टल, जॉन इर्विन, कार्ल खंडालावाला, जे.पी. लॉस्टी, टी.एस. मैक्सवेल, आर. नागस्वामी, प्रतापादित्य पाल, आर. पिंडर विल्सन, एच.के. स्वाली, रॉबर्ट स्केल्टन, एम. टैडी, एण्ड्रू टॉम्सफील्ड, एम.सी. वेल्स, जोअन्ना विलियम्स आदि।

सम्पादक : जॉन गाइ
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मेपिन पब्लिशिंग प्रा.लि., चिदम्बरम्, अहमदाबाद-380 013
1995 : 22 रंगीन तथा 211 श्वेतश्याम चित्रें के साथ;
पृष्ठ : 360, मूल्य : 1200 रुपए

38. इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर फॉर्म एण्ड ट्रांसफॉर्मेशन

भारतीय मन्दिरों के रूपों में परिवर्तन एक दोहरी प्रक्रिया के माध्यम से होता रहा है। समय और स्थान के माध्यम से होने वाले रूपांतरण की ये दो पद्धतियां एक दूसरी में बहुत कुछ प्रतिबिम्बित होती हैं। दोनों में ही आविर्भाव, विकास तथा विस्तार की प्रक्रियाएँ अंतर्निहित हैं, जिनमें एक साथ पृथक होने तथा एक होने अर्थात् एकत्व से बहुत्व और उसी में लय होने की क्रियाएं चलती रही हैं।

भारत में मंदिर निर्माण की सबसे समृद्ध परम्पराओं में से एक वह थी जो ईसा की 7वीं शताब्दी में अस्तित्व में आई थी और उस प्रदेश में केन्द्रित रही थी जो आजकल कर्नाटक राज्य कहलाता है। यह परम्परा 13वीं शताब्दी तक विद्यमान रही थी। यह द्रविड़ यानी दक्षिणी मंदिर स्थापत्य कला की दो मुख्य शाखाओं में से एक थी। इसी के अन्तर्गत विरूपाक्ष, पट्टडकल, कैलास, एलोरा और होयसलेश्वर, हलेबिड जैसे विख्यात मंदिरों का निर्माण हुआ था। इस विशाल अध्ययन ग्रंथ में इन प्रसिद्ध मंदिरों के साथ-साथ 250 से भी अधिक अन्य भवनों के स्थापत्य का विश्लेषण किया गया है और इसमें पहली बार द्रविड़ कर्नाटक परम्परा को एक सतत तथा सुसंबद्ध विकास के रूप में स्पष्ट किया गया है।

इस पुस्तक का इसमें अनेक विश्लेषणात्मक रेखाचित्रों के कारण विद्वत्समाज में स्वागत होगा क्योंकि इनसे यह पता चलता है कि इन विशाल एवं महत्त्वपूर्ण भवनों पर किस तरह दृष्टिपात किया जाए। वास्तव में इनसे इनका जटिल स्थापत्य बोधगम्य हो गया है। इससे यह स्पष्ट पता चलता है कि एक मंदिर की रूपात्मक संरचना अव्यक्त को किस प्रकार एक ठोस रूप में अभिव्यक्त करती है और शाश्वत तथा अनंत सत्ता का पहले बहुविध रूपों में अंतरण होता है और फिर वही नाना रूपात्मक वस्तुजगत उस असीम में विलीन हो जाता है, जिसमें से वह एक अलग सत्ता में आया था।

लेखक : ऐडम हार्डी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा

अभिनव पब्लिकेशंस, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली
1995, पृष्ठ : xix + 810, ग्रंथ सूची, सूचक, हाफ्टॉन चित्र
158 रेखाचित्र 217 नक्शे व 3 चार्ट, मूल्य : 2000 रुपए

39. डिक्शनरी ऑफ इंडो-पर्शियन लिटरेचर

इस साहित्य कोश में भारतीय उप-महाद्वीप के फारसी लेखकों का संक्षेप में परिचय दिया गया है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों पर उनका आधिपत्य था। यह तथ्य उनके द्वारा रचित ग्रंथों के विस्तार तथा विविधता से प्रमाणित होता है। उनकी कृतियां विविध प्रकार की हैं और विभिन्न विषयों से संबंध रखती हैं। जैसे सूफीवाद, कवियों तथा संतों की चुनी हुई रचनाओं के संग्रह, पैगम्बर की परम्पराओं के भाषांतरण और न्यायशास्त्र विषयक मूल सार-संग्रह, इतिहास, डायरियां, संस्मरण, विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, सरकारी विज्ञप्तियां आदि। भारतीय दर्शन और विज्ञान विषयक संस्कृत ग्रंथों के फ़ारसी अनुवादों ने भी इस भारतीय इस्लामिक/फ़ारसी साहित्य में एक नया आयाम जोड़ा। मानव जातीय दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न होते हुए भी इन लेखकों ने बुद्धिबल और जिज्ञासा के प्रयोग में उल्लेखनीय समानता प्रकट की है। अलबेरुनी से इकबाल तक की नौ शताब्दियों में साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाले उत्कृष्ट लेखकों की लम्बी परम्परा रही है, जिन्होंने फ़ारसी की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाए और अपनी सामूहिक प्रतिभा के द्वारा भारत के वैचारिक भंडार को समृद्ध किया। अनेक कारणों से गुणवत्ता बराबर बनी रही, जिनमें मुख्य थे शासक वर्ग का संरक्षण तथा खुले हाथ से आर्थिक सहायता, विद्वत्ता को मिलने वाला मान-सम्मान और उस अवधि में फारसी का दरबारी भाषा होना।

कोशकार : नबी हादी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई -37 हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1995, पृष्ठ : xiv + 757, मूल्य : 750 रुपए

40. दि टेम्पल ऑफ मुक्तेश्वर ऐट चौडदानपुर

कर्नाटक का उत्तरी भाग भारत के उन समृद्ध क्षेत्रों में से एक है जहां कला की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्मारक बहुतायत से पाये जाते हैं। यहां ईसा की 10वीं, 11वीं, 12वीं तथा 13वीं शताब्दियों में अनेक राजवंशों अर्थात् कल्याण के चालुक्य, कालचूरी तथा सेउण वंश का शासन रहा है। यह काल सांस्कृतिक सुरुचि एवं उत्कर्ष का काल था। इसी अवधि में कालामुख-लाकुल शैव आन्दोलनों का अधिकतम विस्तार हुआ और वीरशैव मत को चरमोत्कर्ष मिला। चौडदानपुर (धारवाड जिला) में मुक्तेश्वर का मंदिर उस समय की उत्कृष्ट शैली तथा उच्च संस्कृति का सुन्दर नमूना है। वहां बड़े-बड़े सात शिला पट्टों पर मध्ययुगीन साहित्यिक कन्नड भाषा में सुन्दरता से उत्कीर्ण किए गए सात लम्बे शिलालेख है जिनसे इस मंदिर के इतिहास का पता चलता है। इनसे स्थानीय शासकों-गुट्टल नरेशों के विषय में बहुत-कुछ जानकारी मिलती है, जो स्वयं को गुप्त वंशीय बतलाते थे। इसके अलावा, मंदिर परिसर में निर्मित कुछ भवनों, देवताओं को भेंट किए गए दान तथा कुछ प्रमुख धर्मगुरुओं/महात्माओं के बारे में भी इन शिलालेखों से बड़ी रोचक जानकारी मिलती है। इसमें एक लाकुलशैव संत मुक्तजीयार और एक वीरशैव संत शिवदेव के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है। ये संत

19 अगस्त, 1225 ई. को इस स्थान पर आए थे और फिर उन्होंने यहीं पर त्याग-तपस्या तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष का लम्बा जीवन बिताया। घोर शैवमत के युग की यह धरोहर स्थापत्य तथा मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना है। यह एक ही प्रस्तर खंड से निर्मित मंदिर है। इस निर्माण शैली को जक्कणाचारी शैली या कभी-कभी कल्याण-चालुक्य शैली भी कहते हैं। इसे कल्याण-चालुक्य शैली के नाम से अभिहित करना इसलिए भी उपयुक्त नहीं है क्योंकि इसी शैली के और बहुत से मंदिर कालचूरी या सेउण वंशों के संरक्षण में भी बने हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक परिचय, सम्पूर्ण पाठ, अनुवाद तथा शिलालेखों का अर्थ, विशद सर्वेक्षण के साथ एक स्थापत्य कलात्मक विवरण तथा एक प्रतिमा-वैज्ञानिक विश्लेषण भी दिया गया है।

लेखक : वसुन्धरा फिलियोजा
स्थापत्य : पिएर सिलवैन फिलियोजा
प्राक्कथन : मुनीश चन्द्र जोशी
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
1995, पृष्ठ : xv + 212,
परिशिष्ट, ग्रंथसूची, हाफ्टॉन चित्र 12,
रंगीन चित्र 16, चार्ट 5, मूल्य : 700 रुपए

41. दि ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ नेचर इन आर्ट

यह प्रकाशन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत ए.के. कुमारस्वामी के संग्रह ग्रंथों की पुस्तकमाला का नौवां पुष्प है। डॉ. कपिला वात्स्यायन द्वारा सम्पादित यह संस्करण स्वयं लेखक के प्रमाणिक संशोधनों पर आधारित है।

इस खंड में, कुमारस्वामी ने मध्ययुगीन यूरोप तथा एशिया की कला, विशेषत: भारत की कला के पीछे जो सिद्धान्त है उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है। कुमारस्वामी इसमें भारतीय सिद्धान्त के साथ-साथ चीनी सिद्धान्त को भी प्रस्तुत करते हैं। उनके मतानुसार पहला सिद्धान्त यह है कि कला का अस्तित्व स्वयं अपने लिए नहीं है, यह किसी धार्मिक स्थिति अथवा अनुभूति के माध्यम के रूप में व्यक्त होती है। इस प्रसंग में मध्ययुगीन यूरोप की कला से जो तुलना की गई है वह बहुत ही ज्ञानवर्द्धक है। वे आगे यह दर्शाते हैं कि ये दोनों पुनर्जागरणोत्तर कला से बिल्कुल भिन्न है।

कुमारस्वामी ने प्रथम अध्याय में एशिया में प्रचलित कला के सिद्धान्त का विवेचन किया है। उनका कहना है कि भारतीय कलाकार प्रकृति के व्यामोह में नहीं भटका, अपितु उसने सदा विषय का सच्चा स्वरूप अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। दूसरे अध्याय में कुमारस्वामी ने 14वीं शताब्दी के जर्मन रहस्यवादी माइस्तर ऐकहार्ट द्वारा प्रस्तुत मानदंडों के आधार पर मध्यकालीन यूरोप के सौंदर्यशास्त्र की जांच की है। परवर्ती अध्यायों में, भारतीय मूल ग्रंथों के माध्यम से भारतीय कला-दृष्टि का विवेचन किया गया है। साथ ही प्रतिमा वैज्ञानिक अनुदेशों के लिए एक मध्ययुगीन हिन्दू विश्वकोश का विश्लेषण किया गया है जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ आदर्श निरूपण के भारतीय सिद्धान्त, चित्रकला के स्वरूप तथा

परिप्रेक्ष्य के उपयोग पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है और अन्ततः, भारत में प्रतिमाओं के उद्भव तथा उपयोग के विषय में अंतिम अध्याय में चर्चा की गई है।

यह पुस्तक कला का इतिहास जानने के इच्छुक पाठकों के लिए ही नहीं अपितु कलाकारों के लिए भी उपयोगी है।

प्राक्कथन, प्रस्तावना, सम्पादन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
तथा स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1995, पृष्ठ : xxv + 189, मूल्य : 350 रुपए

42. एसेज इन आर्किटेक्चरल थ्योरी

यह ग्रन्थ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित की जाने वाली ए.के. कुमारस्वामी की ग्रंथमाला का 10 वां पुष्प है। कुमारस्वामी की स्थापत्य संबंधी ग्रंथमाला का प्रथम खंड था : आनन्द के. कुमारस्वामी-एसेज इन अर्ली इंडियन आर्किटेक्चर (1992), जो उपलब्ध प्रतिमाओं तथा मूलपाठों के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जिसका विषय है पारिभाषिक शब्दावली, आयोजन, आकृति विज्ञान, तथा नागरिक बोलचाल की भाषा का वाक्य-विन्यास और प्राचीन भारत में पवित्र वास्तुशिल्प।

"आनन्द के. कुमारस्वामी : एसेज इन आर्किटेक्चरल थ्योरी'' नामक इस द्वितीय खंड में क्रमिक रूप से कुमार स्वामी के उन निबंधों को संकलित किया गया है जो स्थापत्य के भाष्य विज्ञान अर्थात् उसके विधि (कैसे) पक्ष की अपेक्षा "कारण'' (क्यों) पक्ष पर कुमारस्वामी के तेजी से विकासशील चिन्तन के सर्वोत्तम द्योतक हैं।

लेखक : आनन्द के. कुमारस्वामी ;
सम्पादक : मिकाइल डब्लू माइस्तर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाई.एम.सी.ए., लाइब्रेरी बिल्डिंग,
जयसिंह रोड, नई दिल्ली-110 001.
1995, पृष्ठ : xxv + 189, मूल्य : 350 रुपए

43. स्तूप एण्ड इट्स टेक्नोलॉजी : ए टिबेटो-बुद्धिस्ट पर्स्पेक्टिव

विश्व के समस्त धार्मिक स्मारकों में, स्तूप का ऐतिहासिक विकास सर्वाधिक लम्बे समय तक अबाध गति से हुआ है। भारत से बाहर विश्व के सभी देशों में जहां-जहां भी बौद्ध धर्म फला-फूला, स्तूप तथा तत्संबंधी स्थापत्य का पर्याप्त विकास हुआ, हालांकि उसका मूल प्रतिरूप भारतीय ही रहा। समय के साथ-साथ, भारत में तथा अन्य एशियाई बौद्ध देशों में भी स्तूप के संरचनात्मक स्वरूप में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए।

प्रस्तुत अध्ययन में यह दर्शाया गया है कि तिब्बत किस प्रकार बौद्ध संस्कृति तथा साहित्य का खजाना बना। साथ ही,

इसमें स्तूप स्थापत्य विषयक महत्त्वपूर्ण पुस्तकों पर भी प्रकाश डाला गया है। स्तूप के निर्माण से संबंधित विभिन्न कर्मकाण्डीय क्रियाकर्मों का विवरण दिया गया है और साथ ही तिब्बती-बौद्ध स्तूपों के आठ मूलभूत प्रकारों तथा उनके मुख्य संरचनात्मक संघटकों का वर्णन भी किया गया है। ऊपरी सिन्धु घाटी के लेह क्षेत्र में मिले स्तूपों का सर्वेक्षण भी प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के परिशिष्ट में चार महत्त्वपूर्ण तिब्बती मूलपाठों का अंग्रेजी में लिप्यन्तरण तथा अनुवाद दिया गया है जिससे पुस्तक का महत्त्व और भी बढ़ गया है।

लेखक : पेमा दोरजी;
प्राक्कथन : एम. सी. जोशी
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लि.
41 यू.ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर दिल्ली-110 007
1996; पृष्ठ : xxxiv + 189; मूल्य : 450 रुपए.

44. एस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन आर्ट एण्ड साइन्स

यह खंड उन बारह शोधपत्रों का संग्रह है जो शांति निकेतन में आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए आमंत्रित किए गये थे। ये शोधपत्र नोबेल पुरस्कार विजेता एस. चन्द्रशेखर की बीजभूत कृति "ट्रूथ एण्ड ब्यूटी : ऐस्थेटिक्स एण्ड मोटिवेशन्स इन साइन्स" पर आधारित थे। इन शोधपत्रों के लेखक कलाओं, ललित कलाओं तथा विज्ञान विषयों कें मर्मज्ञ थे, जिन्होंने अपनी विशेषज्ञता के अलग-अलग विषयों में सर्जनात्मकता, सौन्दर्य और सत्य के विषय में अपने शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। आशा है, इस प्रकाशन से कला तथा विज्ञान के क्षेत्र में व्यवसाय करने वाले व्यक्ति परस्पर संवाद के लिए प्रेरित होंगे।

सम्पादक : किरण सी. गुप्ता;
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज इंटरनेशनल प्रा.लि. पब्लिशर्स;
4835è24, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110 002;
1996; पृष्ठ : xiii - 183; मूल्य : 350 रुपए.

45. गिफ्ट्स ऑफ अर्थ : टेराकोटास एण्ड क्ले स्कल्पचर्स ऑफ इंडिया

भारत में कार्यरत कुम्हारों की संख्या साढ़े तीन लाख से भी अधिक है, इतनी विश्व के और किसी देश में नहीं है। हर समुदाय, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, आमतौर पर अपना एक कुम्हार अवश्य रखता है, और नगरों तथा शहरों की तो बात ही क्या, जहां कुम्हारों की आबादी काफी ज्यादा है। चूंकि ये शिल्पी तरह-तरह की उप-संस्कृतियों, परम्पराओं तथा पर्यावरणों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, इसलिए उनके बर्तन तथा अन्य उत्पाद भी आमतौर पर कई तरह के होते हैं। वे हर किस्म के घरेलू इस्तेमाल के लिए बर्तन बनाते हैं–मिट्टी के साधारण दीपक, हांडी-कूंडे से

लेकर आठ फुट ऊंचे अनाज के कोठे तक। वे धार्मिक उत्सवों, पर्वों में काम आने वाली प्रतिमाएं बनाते हैं। इनमें से कुछ मूर्तियां तो छोटे-छोटे खिलौने मात्र होती हैं पर कुछ शानदार हाथी-घोड़ों की मूर्तियां होती हैं जिनकी ऊंचाई 18 फुट से भी अधिक होती है–इतनी बड़ी मिट्टी की प्रतिमायें मानवता के इतिहास में शायद ही कभी बनाई गई हैं।

लेखक : स्टीफेन पी. हुयलर;
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन,
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मेपिन पब्लिशिंग प्रा.लि., चिदम्बरम;
1996; पृष्ठ : 232; मूल्य : 2,250 रुपए.

46. कॉन्सेप्ट्स ऑफ टाइम : ऐन्श्येण्ट एण्ड मॉर्डन

यह खण्ड उन चुने हुए 54 शोधपत्रों का संकलन है, जो नवम्बर 1990 में नई दिल्ली में हुई संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए थे। प्रत्येक शोधपत्र में उस सर्वव्यापी काल-तत्व का सूक्ष्मता से विवेचन किया गया है, जिसके चिन्तन में मानव अपने आस्तित्व बोध के आदिकाल से ही ध्यानमग्न रहा है। इन शोधपत्रों को आठ भागों में विभाजित किया गया है : (1) काल : संकल्पनांए; (2) काल : दार्शनिक प्रवचन; (3) काल : भू-वैज्ञानिक तथा जीव-वैज्ञानिक; (4) काल : सामाजिक तथा सांस्कृतिक; (5) काल : चेतना; और (6) काल : ज्ञानातीतत्व तथा सर्वव्यापित्व।

प्रस्तावना : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिकेशन प्रा.लि.,
एल. 10 ग्रीनपार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-10016
1996. पृष्ठ : xxxviii + 502, मूल्य : 1250 रुपए.

47. आर्ट एक्सपीरिएन्स

इस ग्रंथ मे भारतीय सौंदर्य शास्त्र के विभिन्न पक्षों पर 15 निबंधों का समावेश है। परम्परागत दृष्टिकोण से विचारित आधारभूत संकल्पनाओं का सूक्ष्मवेधी विश्लेषण करने के पश्चात् प्रो. हिरियन्ना ने उनकी सारगर्भित व्याख्या की है। उन्होने सांख्य दृष्टिकोण से रस सिद्धान्त का विशद विवेचन किया है। रस ध्वनि तथा संस्कृत काव्यशास्त्र विषयक उनके लेख और प्राक्कथन भी समानरूप से प्रबोधक हैं। प्रत्येक निबंध में भारतीय सौंदर्यशास्त्र अथवा काव्यशास्त्र के किसी एक पक्ष पर प्रकाश डाला गया है।

लेखक : एम. हीरयन्ना
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मनोहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
2/6, अंसारी रोड़, दरिया गंज, नई दिल्ली-110 016
1996; (नया संस्करण) पृष्ठ : xiii + 113; मूल्य : 250 रुपए

48. सिलेक्टेड एसेज ऑफ जी. शंकर पिल्लै

इस पुस्तक में समाविष्ट लेख केरल के कर्मकाण्डीय अथवा लोक रंगमंच के प्रति भाव-प्रबलता से ओतप्रोत हैं। शंकर पिल्लै की दृष्टि तथा लेखनी के माध्यम से माता के रूप में धरती और धरती के रूप में माता की छवि प्रस्तुत की गई है। समकालीन साहित्य तथा रंगमंच विषयक लेख भी समान रूप से सशक्त हैं। लेखक ने भारत में रंगमंच के स्वरूप का, उसके राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम, विशेषतः यूरोपीय आन्दोलनों की पृष्ठभूमि में सूक्ष्म विश्लेषण किया है।

प्रो. जी. शंकर पिल्लै केरल संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष; जॉन मथाई केन्द्र स्थित कालिकट विश्वविद्यालय के नाट्य विद्यालय के संस्थापक; और अनेक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों के विजेता थे।

सम्पादक : एन. राधाकृष्णन
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज. इंटरनेशनल (प्रा. लि.) पब्लिशर्स
4835/24, अंसारी रोड़, दरिया गंज, नई दिल्ली-110 002
1997; पृष्ठ : viii + 176; मूल्य : 250 रुपए

49. यक्षगान

डॉ. के. एस करान्त आज यक्षगान विषय के सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ हैं और उसके सभी पक्षों अर्थात् नृत्य, संगीत और साहित्य पर सन् 1930 से कार्यरत हैं। उन्होने इस कला विद्या के गहन तथा सुव्यवस्थित अध्ययन का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होने यक्षगान के प्रत्येक पाण्डुलिपि का निरीक्षण तथा अध्ययन करने के लिए कर्नाटक के दूरदराज गांवों की यात्रा में कई दशक बिता दिए हैं - उन्हें प्राप्त प्राचीनतम पाण्डुलिपि सन् 1651 ईस्वी की है। अपनी प्रखर विवेक शक्ति तथा सौंदर्यानुभूति की सहायता से उन्होने यक्षगान प्रस्तुत करने की बदलती हुई प्रवृत्तियों का पता लगाया है। उन्होने सैंकड़ों यक्षगान कलाकारो से यह जानने के लिए सम्पर्क किया है कि पहले जमाने में यक्षगान के प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन की कौन सी परिपाटियां प्रचलित थी जो आज लुप्त हो गईं हैं और उन्हे पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। उन्होने अपने शोधकार्य के निष्कर्षों को दो प्रामाणिक पुस्तकों- कन्नड़ भाषा में "यक्षगान बयलता" (1958) और कन्नड़ तथा अंग्रेजी में "यक्षगान (1975)"में प्रस्तुत किया है। यक्षगान का यह खण्ड उनकी पुरानी पुस्तक का संशोधित संस्करण है, जिसमें अतिरिक्त सामग्री तथा चित्र दिए गए हैं।

आशा है इस पुस्तक से हमारे देश के एक अत्यन्त आकर्षक एवं गतिशील कला-रूप पर दृष्टिपात करने और मर्मज्ञ मस्तिष्क की विचक्षणता की झलक लेने में बहुमूल्य सहायता मिलेगी।

सम्पादक : के. शिवराम कारन्त
प्राक्कथन : एच. वाई. शारदा प्रसाद
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स .
ई.-37, हौजखास, नई दिल्ली-110 016
चित्र : 3; रेखाचित्र: 16; 1997; पृष्ठ : 236, मूल्य : 450 रुपए

विश्वकोश

50. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर साउथ इंडिया, अपर द्राविडदेश, लेटर फेज खण्ड-1, भाग-3

भारतीय मंदिर स्थापत्य कला के संपूर्ण परिदृश्य से संबंधित ग्रंथमाला के पहले दो पुष्पों की तरह इस तीसरे भाग में ऊपरी द्राविडदेश में स्थित मध्ययुगीन मंदिरों तथा तत्संबंधी भवनों का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। इनमें उल्लेखनीय हैं : कर्नाटक में, कल्याण के चालुक्यों, द्वारसमुद्र, के होयसलो और कदम्ब, रट्ट, गुट्ट, सेऊण, शान्तर आदि राजवंशों के राज्यक्षेत्रों में स्थित मंदिर और आंन्ध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में, वारंगल के काकतीयों, वेमुलवाड के चालुक्यों, तेलुगु चोड, रेड्डी तथा मल्य वंशों के राज्य और अन्ततः तुलुनाडु के आलुप राजाओं के अधीनस्थ क्षेत्र में स्थित मंदिर। प्रदेशों तथा राजवंशों के अनुसार व्यवस्थित अध्यायों में, जहां स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध हुआ है, क्षेत्रीय वास्तु शैलियों के उद्भव तथा स्थानीय चलन के स्वरूप पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है और इस तथ्य को प्रचुर मात्रा में, संस्थान के संग्रहालयों से प्राप्त चित्रों तथा रेखाचित्रों की सहायता से पूर्ववत् स्पष्ट किया गया है।

वाराणसी स्थित भारतीय अध्ययन के अमेरिकी संस्थान के कला तथा पुरातत्व केन्द्र द्वारा तैयार किए गए इस खंड में प्रमुख रूप से केन्द्र के निदेशक(अनुसंधान)/एम. ए. ढाकी का योगदान उल्लेखनीय रहा है। इसके अलावा एक अध्याय (दिवं) एच. सरकार लिखित भी है।

सम्पादक : एम. ए. ढाकी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : अमेरिकन इन्स्टिट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज
तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र नई दिल्ली-110001
218 अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
वितरक : मैसर्स मनोहर पब्लिकेशनस एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स
1996, पृष्ठ : xxix +598 (पाठ) तथा
प्लेटें, : 1167, मूल्य : 4000 रुपए (2-खण्ड)

कलादर्शन

51. कॉन्सेप्ट्स एण्ड रेस्पान्सिज

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के लिए अंतर्राष्ट्रीय वास्तुशिल्पीय डिजाइन प्रतियोगिता अद्वितीय स्थापत्य दायित्व अर्थात् एक विशाल सांस्कृतिक संकुल जो नई दिल्ली में 10 हेक्टेयर क्षेत्र में बनाया जाएगा, इसका डिजाइन तैयार करने के आह्वान के उत्तर में देश-विदेश से प्राप्त हुए अनेक प्रारूपों एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रारूप प्रतियोगिता में 37 देशों से 194 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। इस पुस्तक में कोई 50 प्रस्तावों

को चुनकर प्रस्तुत किया गया है, जिनमें पुरस्कार जीतने वाली वे पांच प्रविष्टियां भी हैं जो विख्यात वास्तुविद् अच्युत पी. कर्नावंदे द्वारा प्रस्तुत की गई थीं। यह पुस्तक सभी तरह के छात्रों एवं वास्तुविदों के लिए उपयोगी सूचना का बहुमूल्य स्रोत है।

प्रस्तावना : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
मैपिन पब्लिकेशन प्रा.लि., चिदम्बरम्,
अहमदाबाद-380 013
1992, पृष्ठ : 184, मूल्य : 1200 रुपए

छायाकंन माध्यम ग्रंथमाला

52. राबारी : ए पेस्टॉरल कॉम्युनिटी ऑफ कच्छ

फ्लावोनी की यह कृति *राबारी-ए-पेस्टॉरल कॉम्युनिटी ऑफ कच्छ* मानव जाति वर्णन की सामग्री के अनावश्यक बोझ से दबी है। यह जनसामान्य में प्रचलित परम्पराओं के विषय में, जिन्हें, हम इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भाषा में 'लोक परम्परा' कहते हैं, एक बहुमूल्य परिचायक पुस्तक का काम देती है। एक चित्रात्मक पुस्तक के रूप में यह एक उच्चकोटि की कला-कृति है और एक वर्णनात्मक सामग्री के रूप में जीवन शैली की एक अभिनव अभिव्यक्ति है जिसमें लेखक ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि के बल पर विषय की पूरी जानकारी दी है। इसे पढने में आनंद आता है।

मूल पाठ एवं छायाचित्र: फ्रांसिस्को डि ओराजी फ्लावोनी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
ब्रजवासी प्रिंटर्स प्रा. लि., ई-46/11,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज II, नई दिल्ली-110 020
1990, पृष्ठ : 31 + 100 प्लेटें + ग्रंथ सूची, मूल्य : 575 रुपए

आकाश/अंतरिक्ष एवं काल की अवधारणा

53. कॉन्सेप्ट्स ऑफ स्पेस : ऐन्श्येण्ट एण्ड मॉडर्न

इस ग्रंथ में अन्तर्विषयक अध्ययन के क्षेत्र में नई जानकारियां दी गई हैं जिससे यह उन लोगों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गया है जो चिन्तनमनन का आंतरिक जीवन और गतिशीलता तथा सक्रियता का बाह्य जीवन जीते हैं। इस द्विविध जीवन का अन्योन्य संबंध और सम्पूर्णता का मूल विषय ही इस खंड में सम्मिलित किए गए बहु-विषयोन्मुख निबंधों की मूलभूत एकता का आधार है।

सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशन्स, ई-37, हौजखास, नई दिल्ली
1991, पृष्ठ : xxiv + 665 प्लेटें, मूल्य : 1200 रुपए

शैलकला ग्रंथमाला

54. रॉक आर्ट इन दि ओल्ड वर्ल्ड

इस पुस्तक में कुछ ऐसे चुने हुए शोधपत्र प्रकाशित किए गए हैं जो 1988 में डारविन (आस्ट्रेलिया) में आयोजित विश्व-शैलकला महासम्मेलन (कांग्रेस) में प्रस्तुत किए गए थे। पहली बार, अफ्रीका, एशिया तथा यूरोप के महाद्वीपों के इतने व्यापक भौगोलिक क्षेत्रों की शैलकला का एक ही पुस्तक में विवेचन करने का सफल प्रयास किया गया है। इस प्रकाशन में समाहित शोधपत्र इस बात के विश्वसनीय प्रमाण हैं कि शैलकला का अध्ययन केवल पुरातत्व की दृष्टि से ही नहीं अपितु मानव जाति, विज्ञान तथा जीवन शैली अध्ययन के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इसका व्यापक परिदृश्य यह दर्शाता है कि वैसे तो शैलकला अनुसंधान का भी एक इतिहास है पर एक नई ज्ञान विद्या के रूप में यह विकास की विभिन्न सरणियों की खोज में संलग्न है। बहुत से शोधपत्रों से भारत में व्यापक शोध कार्यों का पता चलता है।

यह अद्वितीय खंड इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शैलकला अध्ययन संबंधी शृंखला की पहली कड़ी है। यह मानव इतिहास तथा कला में रुचि रखने वाले छात्रों तथा विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के लिए भी उपयोगी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : माइकेल लौरब्लांशे
वितरक : यू.बी.एस. पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स, लि., नई दिल्ली
1992; पृष्ठ : xxxii + 540; मूल्य : 750 रुपए, 50 डालर (विदेश में)

55. डीअर इन रॉक आर्ट ऑफ इंडिया एण्ड यूरोप

इस पुस्तक में भारत तथा यूरोप की शैलकला में मृग के स्थान का उल्लेख करते हुए आगे चलकर ऐतिहासिक काल में उसके चित्रण से अवगत कराया गया है।

पुस्तक के भारत संबंधी भाग में अनेक स्थलों से प्राप्त बहुमूल्य साक्ष्य को भी प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य के जीवन में तथा उन्मुक्त प्रकृति में मृग के गंभीर एवं संवेदनशील पक्ष का जो मार्मिक चित्रण भारतीय साहित्य परम्परा में उपलब्ध है उसकी एक झलक दिखाई गई है। यूरोप संबंधी भाग में मृग के विषय में गढ़ी गई जन्तु कथाओं, मिथकों तथा दन्तकथाओं के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि यूरोप के किन-किन भागों में मृगों की कौन-कौन सी प्रजातियां पाई जाती हैं।

सम्पादकगण : गियाकामो कैमुरी, ऐंजलो फोसाती तथा यशोधर मठपाल
(गैब्रियला गट्टी तथा गियानेट्टा मुसितेली के योगदान के साथ)
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
वितरक : स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि.,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1993, पृष्ठ : xvi + 170, प्लेटें, मूल्य : 450 रुपए

56. रॉक आर्ट इन कुमाऊं हिमालय

यह इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा अपने 'आदि दृश्य' कार्यक्रम के अन्तर्गत शैल कला विषय पर प्रकाशित तीसरी पुस्तक है।

यह पुस्तक कुमाऊं हिमालय में, जो अपेक्षाकृत एक अज्ञात क्षेत्र है, पूर्व-ऐतिहासिक शैल कला के विभिन्न पक्षों को उजागर करती है। इस कृति में अब तक अज्ञात रहे विभिन्न शैल कला तथा शैल शरण स्थलों का विवरण देने का प्रयास किया गया है। इस खंड में शामिल की गई सामग्रियां अति विशिष्ट तथा निश्चित रूप से नई हैं। इस क्षेत्र में देखे गए शैल चित्र मनुष्य तथा प्रकृति के पारस्परिक सामान्य संबंधों का एकपक्षीय निरूपण प्रस्तुत करते हैं। कुमाऊं अंचल में मिलने वाली सर्वाधिक रोचक चित्रकारियां विभिन्न प्रकार के नृत्य दृश्य प्रस्तुत करती हैं, उनके बाद ढोल पीटने वालों, शिकारियों तथा अन्य दृश्यों के चित्रों की बारी आती है।

इस पुस्तक में लेखक अपनी सरल भाषा में विषय वस्तु का विवेचन करते हुए क्षेत्र की शैल कला को सुरक्षित रखने की तकनीक, शैली तथा वर्तमान स्थिति का विवरण देता है और साथ ही पूर्व-ऐतिहासिक काल के कलाकार की कलात्मक गुणवत्ता तथा प्रेरणा स्रोत के बारे में बताता है। इस खंड में विषय को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणस्वरूप दिए गए चित्र जलरंगों से बने हैं जो लेखक ने वहां क्षेत्र में ही बनाए थे। ये चित्र काफी रोचक हैं और मध्य हिमालय अंचल की शैल कला के बारे में सही प्रभाव छोड़ते हैं।

इन चित्रकारियों के अतिरिक्त, कुमाऊं क्षेत्र में पाई गई नक्काशी तथा शैल कृतियां रूप तथा विषय वस्तु की दृष्टि से बहुत ही निराली हैं और पड़ोसी हिमाचल प्रदेश के पडोसी क्षेत्र तथा ऊपरी हिमालय अंचल में लद्दाख क्षेत्र में प्राप्त कृतियों से सर्वथा भिन्न हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : यशोधर मठपाल
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
आर्यन बुक इंटरनेशनल,
पंजीकृत कार्यालय : 4378/4-बी पूजा अपार्टमेंट्स,
4, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
1995; पृष्ठ : xxiv + 137, मूल्य : 700 रुपए

कला एवं सौन्दर्यशास्त्र ग्रंथमाला

57. आर्ट एज डायलॉग

यह पुस्तक सौन्दर्यानुभूति की संकल्पना को समझने के लिए एक पूर्णत: नई विधि पर ध्यान केन्द्रित करती है। इसके विषय क्षेत्र में मनुष्य तथा कला के पारस्परिक संबंधों की पूर्व-भाषाई, अवस्थाओं पर प्रकाश डाला गया है।

लेखक : गौतम विश्वास
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-52,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : + 155 मूल्य : 200 रुपए

58. इंटरकल्चरल डायलॉग एण्ड दि ह्यूमन इमेज

इस पुस्तक में प्रो0 मौरिस फ्रीडमैन के भाषणों, चर्चाओं तथा विचार-विनिमयों का संग्रह है जो कई स्तरों पर हुए उन अन्तर-सांस्कृतिक संवादों के दौरान प्रस्तुत किए गए थे जो मानव कल्पना की परिधि में आते हैं। यह सब इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में, दार्शनिक मानव विज्ञान, कला-दर्शन, सामाजिक विज्ञान दर्शन, धर्म दर्शन और नैतिक दर्शन आदि विषयों पर चल रहे कार्य की सम्पूर्ण दृष्टि से मेल खाता है।

लेखक : मौरिस फ्रीडमैन
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच.-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : 299, मूल्य : 600 रुपए

प्रकृति

59. प्रकृति : दि इंटिग्रल विजन

इस पुस्तक में एक के बाद एक हुई परस्पर संबद्ध उन पांच संगोष्ठियों की शृंखला के निष्कर्षों पर प्रकाश डाला गया है, जिनसे अन्तर-सांस्कृतिक तथा बहु-विषयक समझबूझ को प्रोत्साहन मिला था। यह पांच खंडों का सैट अपनी किस्म का पहला ग्रंथ है जिसमें महाभूतों (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि) की इस संकल्पना पर विचार किया गया है कि वे सभ्यता तथा संस्कृति के विकास के लिए उत्तरदायी हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xviii + 190, मूल्य : 600 रुपए

60. प्राइमल एलिमेंट्स : दि ऑरल ट्रडिशन

प्रथम खंड उन सामंजस्यपूर्ण समुदायों के उच्चारण के संबंध में है जिनका तत्वों/महाभूतों के साथ अबाध गति से सतत संवाद चलता रहता है। प्रकृति समुदायों के लिए बुद्धि विदग्धता का विषय नहीं है, अपितु यह यहां और इसी समय के जीवन का प्रश्न है, जो उनके आद्य मिथकों और कर्मकाण्डों में प्रकट होता है। इनके द्वारा प्रकृति की उपासना की जाती है ताकि मनुष्य विश्व के अभिन्न अंग के रूप में रह सके।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सम्पत नारायण
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xiv + 153, मूल्य : 600 रुपए

61. वैदिक, बुद्धिस्त एण्ड जैन ट्रडिशन्स

दूसरे खंड में वैदिक कर्मकांड, उपनिषदिक दर्शन, ज्योतिष शास्त्र और बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म में महाभूतों की संकल्पना के अभूतपूर्व विवेचन पर विचार किया गया है। इसमें भारत की भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के बीच दृष्टिकोणों की अनेक समानताओं तथा भिन्नताओं को भी उजागर किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xviii + 190, मूल्य : 600 रुपए

62. दि आगमिक ट्रडिशन एण्ड दि आर्ट्स

इस तीसरे खंड में सुव्यवस्थित रूप से यह बताया गया है कि भारतीय कलाओं तथा उनकी आगमिक पृष्ठभूमि में महाभूतों की अभिव्यक्ति किस प्रकार हुई है। यहां संरचनात्मक कलाओं को वास्तुविद्, मूर्तिकार, चित्रकार, संगीतज्ञ तथा नर्तक की अलग-अलग अनुकूल स्थिति से, उनके आद्य स्तर पर समझने का फिर से प्रयास किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बेट्टिना बॉमर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015

1995, पृष्ठ : xiv + 193, मूल्य : 600 रुपए

63. दि नेचर ऑफ मैटर

चौथे खंड में मात्रा सिद्धान्त और प्रारंभिक कणों, सजीव पदार्थ का विकास, पदार्थ का स्वरूप तथा कार्य, वैज्ञानिक दर्शन तथा बौद्ध चिन्तन, पदार्थ के विषय में सांख्य सिद्धान्त, प्राचीन तथा मध्ययुगीन जीवविज्ञान, रहस्यवाद तथा आधुनिक विज्ञान, परम्परागत ब्रह्मांड विज्ञान, पदार्थ तथा औषधि, पदार्थ तथा चेतनता आदि पर महत्त्वपूर्ण चर्चा की गई है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : जयंत वी. नारलीकर
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज एच-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110 015
1995, पृष्ठ : xiv + 228, मूल्य : 600 रुपए

64. मैन इन नेचर

पांचवें तथा अंतिम खंड में कुछ विशेष समाजों के मिथक तथा ब्रह्मांड विज्ञान और वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, मानव विज्ञानियों, पारिस्थिति-विज्ञानियों तथा कलाकारों के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की संस्कृति पर विचार किया गया है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एच-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xii + 270, मूल्य : 600 रूपए

जीवन शैली अध्ययन ग्रंथमाला

65. कॉम्प्यूटराइजिंग कल्चर्स

यह पुस्तक एक यूनेस्को-कार्यशाला के कार्य-विवरण का भाग है, जो नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परिसर में आयोजित की गई थी, और उसका विषय था, "संकर सांस्कृतिक जीवन-शैली अध्ययन, बहु-माध्यमिक कम्प्यूटकरणीय प्रलेखन के साथ"। इस पुस्तक में संग्रहीत निबंध सांस्कृतिक डेटा के प्रलेखन तथा कम्प्यूटरीकरण से संबंधित सैद्धान्तिक तथा तकनीकी समस्याओं का विवेचन करते हैं।

इस शानदार पुस्तक के प्रतिभाशाली लेखकों ने ऐसी नई संकल्पनाओं तथा उपयुक्त तकनीकों का पहली बार उपयोग

करने का प्रयास किया है जो संस्कृतियों के बहु-आयामी संरूपण को समझने में सहायक होती हैं। स्वदेशी श्रेणियों पर बल देते हुए और अनेक दृष्टि बिन्दुओं को अपनाते हुए, चिन्तनात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट किया गया है।

मनुष्य द्वारा कम्प्यूटर के इस्तेमाल के दौरान जो भी सैद्धांतिक तथा विध्यात्मक समस्याओं का अनुभव किया जाता है, उनका, अनेक लेखकों ने बड़ी कुशलता के साथ निरूपण किया है। ऐसा करते हुए लेखकों ने भारत, पाकिस्तान, थाईलैंड, इंडोनेशिया तथा जापान विषयक सांस्कृतिक डेटा के विषय में व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। कम्प्यूटर वैज्ञानिकों तथा तकनीकी विशेषज्ञों ने ऐसे आकर्षक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जिनसे बहु-माध्यमिक कम्प्यूटरणीय प्रलेखन कार्य के सम्पन्न करने में हार्डवेयर/ सॉफ्टवेयर की उपादेयता स्पष्ट प्रमाणित होती है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज इंटरनेशनल (प्रा. लि.) प्रकाशक,
4835/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002,
1995 : पृष्ठ : xx + 242; मूल्य : 300 रूपये

66. क्रॉस कल्चरल लाइफस्टाइल स्टडीज

यह पुस्तक इसी विषय पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित यूनेस्को कार्यशाला के कार्यवृत्त का एक भाग है। इसमें संगृहीत निबंध संकर-सांस्कृतिक जीवनशैली के अध्ययन के लिए एक अनुकरणीय आदर्श संकलन प्रस्तुत करते हैं।

इस पुस्तक के लेखकों का मुख्य प्रयास जीवनशैली अध्ययन की एक ऐसी समग्र रीति-नीति विकसित करना है, जिसका मुख्य उद्देश्य मानव सभ्यताओं में परस्पर-सक्रिय घटकों का पता करना हो। पुस्तक में वस्तुस्थिति अध्ययन के माध्यम से, आर्थिक व्यवसाय, स्वास्थ्य, तीर्थयात्रा, संगीत, धार्मिक प्रतिमाएँ तथा कर्मकाण्ड जैसे पक्षों को उजागर किया गया है जिनसे परम्परागत संस्कृतियों के संरूप और रचनात्मक जीवन के अध्ययन का शुभारंभ किया जा सकता है।

यह पुस्तक जीवनशैली अध्ययन का एक नया मार्ग प्रशस्त करती है। इसमें प्रस्तुत की गई सामग्री मानव-वैज्ञानिकों, लोक साहित्य के अध्येताओं, मानवजाति-पुरातत्वज्ञों तथा कला-इतिहासकारों के लिए बहुत रुचिकर एवं उपयोगी है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
न्यू एज इंटरनेशनल (प्रा. लि.), नई दिल्ली
1995, पृष्ठ : xii + 76, मूल्य : 150 रूपए

67. इन्टरफेस ऑफ कल्चरल आइडेंटिटी एण्ड डिवलपमेण्ट

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने समग्र सांस्कृतिक भिन्नताओं और परिभाषाओं के संदर्भ में विकास संबंधी विचारणीय विषयों पर एक बहु-विषयक/शास्त्रीय संवाद का शुभारंभ किया है, जिसे वह अपनी नई ग्रंथ-माला : "संस्कृति तथा विकास" में समग्ररूप से समाविष्ट करने का विचार रखता है।

इस विषय को दृष्टिगत रखते हुए, इस ग्रंथमाला के प्रथम पुष्प में उन 23 शोधपत्रों का संकलन है जो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में 19 से 23 अप्रैल, 1993 तक हुई यूनेस्को-प्रायोजित विशेष बैठक में प्रस्तुत किए गए थे। सांस्कृतिक पहचान तथा विकास के प्रश्न पर मानव-केन्द्रित तथा ब्रह्माण्ड केन्द्रित मार्गों/दृष्टिकोणों के बीच विद्यमान मूलभूत अंतरों को उजागार करते हुए लेखक यह बताते हैं कि संस्कृति तथा विकास के घटक क्या हैं। अपने आप में नहीं, अपितु संस्कृति तथा जीवन शैली, संस्कृति तथा भाषा/परिस्थिति वैज्ञानिक पहचान की अंगभूत समग्रधारणा के रूप में; और किस प्रकार विकास के कुछ व्यवहार्य वैकल्पिक उदाहरणों को प्राचीन रहस्यात्मक/आध्यात्मिक सूक्ष्मदृष्टि तथा आधुनिक विज्ञान के मेल से विकसित किया जा सकाता है।

आस्ट्रेलिया, बंगलादेश, भारत, इंडोनेशिया, ईरान, मंगोलिया, नेपाल, श्रीलंका, थाइलैंड तथा तुर्की के कुशल मानव-वैज्ञानिकों, समाजवैज्ञानिकों, वैज्ञानिकों तथा अन्य विषय-विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत किए गए इन शोधपत्रों में केवल सांस्कृतिक पहचान और विकास के विभिन्न सैद्धान्तिक प्रश्नों पर ही विचार नहीं किया गया है अपितु भिन्न-भिन्न क्षेत्रगत परिस्थितियों में वस्तुस्थिति अध्ययन भी प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
डी. के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ-12,
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1995, पृष्ठ : xii + 290, मूल्य : 600 रूपए

68. दि रिच्युअल आर्ट ऑफ तेय्यम एण्ड भूताराधना

इस पुस्तक में भूताराधना तथा तेय्यम की कर्मकाण्डीय कला का विवरण दिया गया है, जैसी कि वह केरल तथा कर्नाटक के कुछ आदिम जातीय समुदायों में देखने को मिलती है। तेय्यम तथा भूत परम्पराओं की शोध संबंधी संभावनाओं को देखते हुए, इस पुस्तक में प्रामाणिक सामग्री संग्रहीत करने तथा उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

इस पुस्तक में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि जन-जीवन में किस प्रकार अतीन्द्रिय एवं दुर्बोध घटनाएं घटित होती हैं और फिर वे लोक परम्परा में किस प्रकार प्रतिबिम्बित होती हैं। तेय्यम भूत-प्रेतात्माओं से क्षतिपूर्ति प्राप्त करने के लिए अभिनीत किया जाता है। लेखक ने इस कर्मकाण्ड की विभिन्न क्रियाओं का विवरण देने का प्रयास किया है। प्रस्तुतिकर्ता इन क्रियाओं में इतना मग्न हो जाता है कि वह अपने अस्तित्व को भूलकर, मानसिक रूप से प्रकृति की

अदृश्य शक्तियों के संसार में पहुंच जाता है और देवी-देवताओं का अभिनय करते हुए अपने अलौकिक हाव-भाव द्वारा तथाकथित दैवी शक्ति का प्रदर्शन करता है। इस पुस्तक में तेय्यम की कर्मकाण्डीय कला से जुड़े हुए अन्य अनेक कलारूपों का भी विवेचन किया गया है, जैसे, कर्मकाण्डीय चित्रकारियों की कला, शीर्ष-परिधान बनाने से संबंधित शिल्प एवं पद्धतियां, मंचनीय कलाएं आदि।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : सीता के. नाम्बियार
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
तथा नवरंग बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स,
आर.बी.-7 इंद्रपुरी, नई दिल्ली-110002
1996; पृष्ठ : xvi + 159;

69. इण्टीग्रेशन ऑफ एण्डोजीनस कल्चरल डाइमेंशन इन्टू डिवलपमेण्ट

संस्कृति तथा विकास ग्रंथमाला का यह दूसरा खंड विषयगत चर्चा को "सांस्कृतिक पहचान" के जटिल प्रश्नों से आगे बढ़ाकर उन विश्वव्यापी मानवीय समस्याओं तक ले जाता है, जो विकास की योजनाओं के निर्माताओं द्वारा अन्तर्जात संस्कृतियों की उपेक्षा के कारण उत्पन्न होती हैं। इस खण्ड में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में 19 से 23 अप्रैल, 1995 तक हुई यूनेस्को-प्रायोजित कार्यशाला में प्रस्तुत 17 शोधपत्रों को संकलित किया गया है।

इन शोधपत्रों के प्रणेता चीन, भारत, इंडोनेशिया, जापान दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, थाईलैंड तथा वियतनाम के विख्यात विद्वान् योजनाकार तथा तृणमूल स्तरीय सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : बैद्यनाथ सरस्वती
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
तथा डी.के. प्रिनटवर्ल्ड (प्रा. लि.), श्रीकुंज, एफ. 52
बालि नगर, नई दिल्ली-110015
1997; पृष्ठ : xvii + 251; मूल्य 560 रूपए

क्षेत्र सम्पदा ग्रंथमाला

70. तंजावूर बृहदीश्वर-एन आर्किटेक्चरल स्टडी

चोल स्मारकों, विशेषत: तंजावुर स्थित बृहदीश्वर मंदिर तथा गंगैकोंडा चोलपुरम मंदिर ने पुरातत्त्वविदों, पुरालेख शास्त्रियों, साहित्यिक समालोचकों, संगीतज्ञों, नर्तकों, शिल्प विशेषज्ञों, समाज वैज्ञानिकों तथा मानव वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी और आकर्षित किया है।

बृहदीश्वर मंदिर के स्थापत्य पर प्रकाशित यह ग्रंथ एक परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित किए जाने वाले तकनीकी प्रबन्धों

की शृंखला का पहला खंड है। यह वस्तुत: समीचीन ही है कि स्मारक की स्थापत्य योजना (नक्शा) का विवेचन मंदिर की भीतरी तथा बाहरी दीवारों पर उत्कीर्ण प्रतिमाओं तथा लेखों, गर्भगृह में उपलब्ध भित्ति चित्रों, ऊपरी मंजिलों, के 'कारणों', शिलालेखों और अन्य सभी विषयों से संबंधित अध्ययनों से पहले किया जाना चाहिए। एक मानक कूट (कोड) तैयार कर लिया गया है, जिसका परवर्ती सभी अध्ययनों में पालन किया जाएगा। यह एक ऐसा स्मारक है जो इस क्षेत्र को केन्द्रीयता प्रदान करता है और अन्य पक्षों पर आगे अध्ययन के लिए आधारभूत ढांचे का काम करता है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : पिएर पिशर्ड
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
आर्यन बुक इंटरनेशनल, 4378/4-बी. पूजा अपार्टमेंट्स,
4, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
1995; आकृतियां 32,-प्लेटें 45,-छायाचित्र 167-पृष्ठ : 244;मूल्य : 1000-रूपए

71. गोविन्ददेव–ए डायलॉग इन स्टोन

यह खंड पहली बार गोविन्ददेव के डिजाइन तथा प्रतिमा विज्ञान के विस्तृत अध्ययन को, छायाचित्रों तथा आलेखों, से पूर्णत: सुसज्जित रूप में प्रस्तुत करता है। अन्य अध्यायों में इसके निर्माण तथा औरंगजेब के शासन में इसे अपवित्र किए जाने के इतिहास पर चर्चा की गई है। साथ ही यह भी बताया गया है कि जब श्री गोविन्द देव की प्रतिमा को जयपुर में उसके वर्तमान देवालय तक लाया गया तो उस यात्रा के मार्ग में कहां-कहां मंदिर बनाए गए। अभिलेखागार से प्राप्त पाण्डुलिपियों के प्रलेखों से मंदिर के पुजारियों की वंशपरम्परा का पता चलता है और पाण्डुलिपिक स्रोतों से मंदिर की कर्मकाण्डीय गतिविधियों का विवरण प्राप्त होता है। लेखकगण भारत, अमरीका तथा यूरोप के जाने-माने विद्वान् हैं।

सम्पादक : मार्गरेट एच. केस
प्रस्तावना : कपिला वात्स्यायन
प्रकाशक : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वितरणकर्ता : आर्यन बुक्स इंटरनेशन, 4378/4 बी, पूजा अपार्टमेंट्स,
4, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
1996; पृष्ठ : xxi + 305, चित्र 267, मूल्य : 2000 रुपए

72. ईवनिंग ब्लॉसम्स : टेम्पल ट्रडिशन ऑफ सांझी इन वृंदावन

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में 'सांझी' ने मंदिर कला का रूप ले लिया था। प्रारंभ में कुमारी कन्याओं द्वारा घर की दीवारों पर गोबर पुती पृष्ठभूमि पर बनाई जाने वाली सांझी आगे चलकर पुजारियों द्वारा मंदिर के भीतर वेदी के ऊपर बनाई जाने लगी। इस प्रकार की सांझी, जो संभवत: धूलिचित्र बनाने की प्राचीन कला से निकली थी, प्रारंभ में प्राकृतिक पदार्थों यानी कुमकुम, गुलाल आदि से तूलिका की सहायता से बनाई जाती थी; पर अब इसमें रंगीन पाउडरों का इस्तेमाल होने लगा है। जंगली फूलों का स्थान अब बेलों ने ले लिया है। जिनसे "हौदा" यानी डिजाइन का मध्य भाग बनता है।

प्रधान सम्पादक : कपिला वात्स्यायन
सम्पादक : असिमकृष्ण दास
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र,
तथा स्टर्लिंग पब्लिशर्स, प्रा. लि.,
एल-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110 016
1996; पृष्ठ 113, प्लेटें : 58, मूल्य : 750 रुपए

73. म्यूराल्स फॉर गॉडेसेज एण्ड गॉड्स

यह पुस्तक भारत की कर्मकाण्डीय चित्रकला का एक भव्य प्रलेख है, जो उड़ीसा के "ओसाकोठी" (ओसा-तपस्या, कोठी-पवित्र स्थल) भित्तिचित्रों के सुव्यवथित अध्ययन पर आधारित है। इसमें दुर्लभ, समृद्ध एवं अर्थपूर्ण कर्मकाण्डीय भित्तिचित्रकला का विवेचन किया गया है, जो अब बड़ी तेजी से लुप्त होती जा रही है। मिर्जापुर, सिंहपुरी, भीमबेटका, झीरी तथा भारत के अन्य स्थानों में पाए जाने वाले प्रागैतिहासिक काल के शैलगुफा चित्र इस कला की प्राचीनता के द्योतक हैं। इन भित्तिचित्रों और आजकल गुजरात में राठवा उत्सव पर बनाए जाने वाले भित्तिचित्रों में बहुत समानता है। इन दोनो मामलों में दृश्य छवि में रूपान्तरण तथा पुनरूज्जीव दृष्टिगोचर होता है।

लेखक : एबरहर्ड फिशर तथा दीनानाथ पाथी
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली तथा म्यूजियम रीटबर्ग ज्यूरिच,
वितरक : आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, 4370/4. बी
पूजा अपाटमेंट्स, 4 अंसारी रोड़, दरिया गंज, नई दिल्ली - 110002
1996; पृष्ठ : 24; प्लेटें : 298 मूल्य : 2,250 रुपए

74. बेंगाली पैट्रियोटिक सांग्स एण्ड ब्रहम समाज

इस पुस्तक में कु. श्रीलेखा बसु द्वारा संगृहीत बंगाल के देशभक्ति पूर्ण गीत संकलित हैं। उन्होंने अनेक ब्रह्मसमाज मंदिरों में अछूते पड़े पुराने अभिलेखों की छानबीन करके इन गीतों को खोज निकाला है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में इनका एक आडियो रेकार्ड भी उपलब्ध है।

प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
भूमिका : श्रीलेखा बसु
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
स्टर्लिंग पब्लिशर्स (प्रा. लि.)
एल. 10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110016
1996, पृष्ठ : vii + 90, मूल्य : 250 रुपए

75. टीक एण्ड ऐरेकानट : कॉलोनियल स्टेट, फोरेस्ट एण्ड पीपल इन दि वेस्टर्न घाट्स (साउथ इंडिया) 1800-1947

उपनिवेशवादी शक्तियों द्वारा गर्म प्रदेशों में पाए जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के विनाशकारी स्वरूप के बारे में हाल ही में बहुत कुछ कहा जा चुका है। इस पुस्तक में पश्चिमी घाट, कर्नाटक के सबसे अधिक जंगलों से ढके एक जिले उत्तर कन्नड़ के विषय में एक अनोखा अध्ययन विस्तार से प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह पता चला है कि आर्थिक लाभ और संरक्षण अभियान दोनों ही इस क्षेत्र से संबंधित ब्रिटिश वन नीति के मुख्य बिन्दु थे। इस अध्ययन में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि उपनिवेशवादी हस्तक्षेप का एक सबसे विनाशकारी परिणाम यह था कि इससे सामाजिक संगठन छिन्न-भिन्न हो गया, जो मूलत: पर्यावरण के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था। इन सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को समझने में, अतिसंवेदनशील पर्यावरण के संरक्षण के साथ-साथ स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रयासों की चुनौती का शायद कोई हल निकल सके।

लेखक : मारलीन बूची
प्राक्कथन : जैक्वस पोंचेपादास, कपिला वात्स्यायन
तथा एस. परमेश्वरप्पा
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
इंस्टिट्यूट फ्रेंकॉइज डी., पांडिचेरी,
1996, पृष्ठ : 225, मूल्य : 300 रुपए

क्षेत्र अध्ययन ग्रंथमाला

76. दुनहुआंग आर्ट - थ्रू दि आइज ऑफ दुआन वेनजी

दुनहुआंग को यद्यपि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत लोग जानते हैं पर वहां जाने वाले बहुत कम हैं। दुनहुआंग स्थित मगाओ मठ 492 गुफाओं का समूह है, जिनमे 45,000 वर्गमीटर के क्षेत्र में भित्तिचित्र बने हुए हैं और 2,415 गचकारी की मूर्तियां

हैं। यह समस्त विश्व की एक बहुमूल्य विरासत है। इसका इतिहास तथा कला की दृष्टि से अत्यन्त महत्व है। चौथी से चौदहवीं शताब्दी तक लगातार इन गुफाओं के निर्माण, नवीकरण तथा रखरखाव का काम बड़ी लगन के साथ चलता रहा था। यह चीन में संस्कृति तथा कला का स्वर्णयुग था और दुनहुआंग कला भी इससे वंचित नही रही।

इस खंड में हमने दुनहुआंग अकादमी के निदेशक प्रो. दुआन वेनजी की कुछ चुनी हुई रचनाओं का अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया है। प्रो. वेनजी ने अपनी रचनाओं में मगाओ गुफाओं के भीतर उपलब्ध चित्रों तथा मूर्तियों का कालक्रमिक अध्ययन प्रस्तुत किया है जो उनके मार्गदर्शन में दुनहुआंग अकादमी में दशकों तक चले शोधकार्य का परिणाम है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र कला के सभी आयामों के अन्वेषण के प्रति वचनबद्ध है। वह डेढ़ सहस्राब्दि पुरानी इस अनुपम कला दीर्घा के विषय में अंग्रेजी भाषी देशों के कला इतिहासकारों तथा कला प्रेमियों के सम्मुख प्रत्यक्ष जानकारी प्रस्तुत करते हुए गौरवान्वित महसूस करता है।

सम्पादन एवं प्रस्तावना : तानचुंग
प्राक्कथन : कपिला वात्स्यायन
सह-प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा
अभिनव पब्लिकेशंस, ई.-37, हौजखास, नई दिल्ली-110016
1994, पृष्ठ : 456, प्लेटें : 64 मूल्य : 1500 रुपए

स्मारक व्याख्यान ग्रंथमाला

77. निर्मल कुमार बोस मेमोरियल लेक्चर, 1993, खण्ड- ।

व्याख्यान माला के प्रथम खण्ड में प्रो. सिन्हा द्वारा "द हेरीटेज ऑफ निर्मल कुमार बोस" तथा "इंडियन सिविलिजेशन : स्ट्क्चर एण्ड चेंज" की वार्ताए सम्मिलित हैं। पहले व्याख्यान में प्रो. सिन्हा ने डॉ. बोस के भारतीय सभ्यता के सम्बन्ध में दृष्टिकोण चर्चा की तथा दूसरे में प्रो. सिन्हा ने भारतीय सभ्यता के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये।

वक्ता : सुरजित चन्द्र सिन्हा
प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ, नई दिल्ली
1977, पृष्ठ : 26, मूल्य : 35 रुपए

78. निर्मल कुमार बोस मेमोरियल लेक्चर, 1993; खण्ड-2

व्याख्यान माला के दूसरे खण्ड में डा. बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य ने ''गांधीज इम्पैक्ट ऑन बोसेज स्कालरशिप'' तथा रवीन्द्रनाथ एण्ड गांधी : रिस्पॉन्स टू इण्डियन रिएलिटी'' शीर्षक से दो भाषण दिये। इसमें से पहले में उन्होंने डॉ. बोस की गांधी जी के विचारों के प्रति निष्ठा का उल्लेख किया, तथा दूसरे में गाँधी जी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के दार्शनिक विचारों का विश्लेषण किया।

वक्ता : वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
प्रकाशन : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, जनपथ, नई दिल्ली
1997, पृष्ठ : 54, मूल्य : 50 रुपए

79. रिर्पोट ऑन दि कल्चरल डाइमेंशन ऑफ एजूकेशन

1. स्वराज इन एजूकेशन, पृष्ठ : 68
2. रूरल कॉण्टेक्स्ट ऑफ प्राइमरी एजूकेशन, पृष्ठ : 27
3. गांधियन एक्सपेरिमेंट इन प्राइमरी एजूकेशन, पृष्ठ : 27

सम्पादक : बी. एन. सरस्वती
सह-प्रकाशन : यूनेस्को तथा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
1996, पृष्ठ : 54, मूल्य : 50 रुपए

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सचित्र पोस्ट कार्डों की सूची

1. इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट (अप्राप्य)
2. हिमालय पर्वतमालाओं की दृश्यावली, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट (अप्राप्य)
3. भीमबेटका के शैल चित्र, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
4. ब्रूनर की चित्रकारियां, 1988, मूल्य : 10 रुपए प्रति सैट
5. दि इंडियन पिजन्स एण्ड डव्ज, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
6. दि बर्ड्स ऑफ पैराडाइज, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
7. दि कैलिको पेंटिंग एण्ड प्रिंटिंग, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
8. भारत में प्राचीन स्थापत्य कला, 1990, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
9. दि आर्ट ऑफ दुनहुआंग ग्रोटोज, 1992, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
10. राजा लाला दीनदयाल के छायाचित्र, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
11. भीमबेटका की शैल-कला, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट
12. चीन के मार्ग से भारत की सुरम्य यात्रा, 1993, मूल्य : 25 रुपए प्रति सैट

कैटलॉग

1. खम् : स्पेस एंड दि एक्ट ऑफ स्पेस, 1986
2. काल : ए मल्टीमीडिया प्रेजेंटेशन ऑन टाइम, 1990-91
3. मोगाओ ग्रोट्टोज दुनहुआंग : बुद्धिस्त केव पेटिंग्स फ्रॉम चाइना, 1991 (अप्राप्य)
4. प्रकृति : मैन इन हारमनी विद एलीमेंट्स, 1993 (अप्राप्य)

विंहगम **इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का समाचार पत्रक**

खण्ड-1	अंक-1 सितम्बर-नवम्बर, 1993
खण्ड-1	अंक-2 जनवरी-मार्च, 1994
खण्ड-2	अंक-1 अप्रैल-जून, 1994
खण्ड-2	अंक-2 जुलाई-सितम्बर, 1994
खण्ड-2	अंक-3 अक्तूबर-दिसम्बर, 1994
खण्ड-2	अंक-4 जनवरी-मार्च, 1995
खण्ड-3	अंक-1 अप्रैल-जून, 1995
खण्ड-3	अंक-2 जुलाई-सितम्बर, 1995